श्री पञ्चस्तवी

तथा

दुर्गासप्तशती का चौथा अध्याय

(श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में
अर्थ सहित)

स्वत्व :—
जिया लाल सराफ
नया कश्मीर होटल, लाल चोक,
श्रीनगर, कश्मीर।

मिलने का पता :—

भवानी आश्रम
पुखरीबल (हारी पर्वत)
श्रीनगर, कश्मीर।

ملنے کا پتہ :-

بھوانی آشرم
پکھری بل (ہاری پربت)
سرینگر کشمیر

(شالیمار آرٹ پریس سری نگر)

ॐ

शक्ति रहस्य

संसार में किसी भी कार्य में हाथ डालने से पहले शक्ति की आवश्यकता है। जब तक 'शक्ति' जो जीव के अन्दर मौजूद है। उस शक्ति को काम में न लावे। किसी काम में सफलता न होती है और न होगी।

जीव को अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। सब पदार्थों में अपनी अपनी शक्ती अपने अन्दर है जीव में शक्ती का भण्डार है। जिसतरह लकडी के अन्दर आग छुपी हुई है और लकडी को मालूम नहीं कि मुझ में आग की शक्ती अन्दर है। जब इसकी शक्ती 'आग' प्रकट होकर बाहर आती है तो पदार्थों को भस्म कर देती है तो लकडी अपने असली 'आग' के स्वरूप को प्रकट करती है। इसी तरह जीव के अन्दर शक्ती का भण्डार है और वह शक्ती जीव के अन्दर है। उस को मालूम नहीं कि मैं क्या हूँ। उस शक्ती से

जैसा चाहें अपनी अवस्था को बना सकते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि, मुन्नी महात्माओं में शक्तियां और सिद्धियां थीं। वह शक्तियां हम में भी हैं। (पुरषार्थ) पुरुषार्थ करने की ज़रूरत है। पुरुषार्थ का मतलब है, (पुरुष-ऽर्थ) पुरुष का धन। जब जीव पुरुषार्थ करें, और दृढ़ रहें तो उस महाशक्ति को उजागर कर सकता है। वह महाशक्ती जो जीव के अन्दर है। उसको परा शक्ति, ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति, चित्त शक्ति वगैरा २ कहा गया है। इस महान शक्ति को जगदम्बा (जगत् माता), जगत जननी इत्यादि नामों से कहा गया है। और इन्हीं नामों से शक्ति का पूजन अर्चन किया जाता है। सारा जगत शक्ती से ही बना है और बनाया जाता है। तमाम आविष्कार जो जगत में हुए हैं और नए नए आविष्कार होते हैं। शक्ति ही उनका मूल कारण है। शक्ती के सिवा कुछ नहीं बन सकता।

भवानी सहस्रनाम में पहले शंकर और नन्दीगण का समवाद लिखा है। नन्दीगण

शंकर से पूछता है। महाराज मुझे प्रश्न है। कृपा करके मुझे प्रश्न का उत्तर दीजिए।

आप जगत के स्वामी होकर आप आंखें बन्द करके सदा किस का स्मरण करते हैं और किस के ध्यान में सदा रहते हैं। क्या आप से बढ़कर कोई और ऊपर भी है। जिसका आप ध्यान करते हैं। तो शंकर उत्तर देता है। हे नन्दीगण सुनो! यह रहस्य है। तीन गुण वाली श्री शक्ती नाम की शक्ती मेरे अन्दर है उसी के बल से मैं इस संसार को पैदा करता हूँ पालता हूँ और उसी में लीन होता हूँ। उसी के बल से मैं जगत, पहाड नदियां समुन्द्र जो भी संसार में देखते हो बनाता हूं। यह सब जगत उसी शक्ती का विकास है। उसी शक्ति का ध्यान करने से अर्जन करने से सब सिद्धियां प्राप्त होती हैं इसी लिए इसी का सदा स्मरण करता हूँ। हर एक मनुष्य में यह देवी रूप शक्ती छुपी है और इस को ज्ञात करने की आवश्यकता है।

आपको मालूम होगा कि हम जब बच्चे थे तो हमारी माता बचपन में हमको इसी शक्ती माता के स्वरूप का बीज डालती थी और कश्मीरी भाषा में हमको बार बार कहती रहती :— (कश्मीरी में)—— "ज़ेन मांज ज़ूनुय, अग्नल अग्नन क्यथ तय ज़ीव, यिम कस गनेयि, राय यस गनेयि, रांय क्या छुतुय खसवुन गुर वसवुन्य नाव, तेश्य क्यथ वंदुस वं तुन कुनुय, तति बुकुम कोंटुय मोंटुय सास्नि हना, हमि छुलनम क्यव टूर, सुय लोंदुस जज़ीरे, जजीर लंजिम नच़ने, काव लंगि बुद्धिने, गोन्ठ लंजिम असने, सुकुस स्योः बोलु तारकुय"——अर्थात माता 'ज़ून' प्रकाश जीतना है। प्रकाश क्या है? अंग अंग में अर्थात हर एक चीज में चित्त और जीव जानना है। वह किसको प्राप्त हो। जिसको राय अर्थात ख्याल की दृढ़ता ने क्या दिया, चढ़ने के लिए घोड़ा और उतरने के लिए किश्ती अर्थात (प्राणायाम)। उसी किश्

से उत्तर गई। "तुम" यानी नाभि (नाभिस्थान) के तरफ वहां मैं ने देखा, छोटी मोटी कुण्डलिनी, उसी ने मुझे "ही" बरदान में दिया, वह मैं ने अन्दर डाला और मुझको सारा जगत अपना ही स्वरूप दिखाई दिया। लोगों ने हंसा, यह कौन मेरा, जो मेरे कुल का तारक होगा माता अपने पुत्र को बचपन से ही उसको यह ख्याल रूपी बीज डाल देती थी। कि हे पुत्र तुम्हारा कर्तव्य है। अपने कुल का तारक बनना, यह उपदेश माता सब से पहले अपने बच्चे को देती थी। ताकि यह बच्चा बड़ा होकर अपने कुल का तारक बनेगा। पञ्चस्तवी के पहले स्तव में दो श्लोकों में इसी का निर्णय किया गया है।

यहां कश्मीर में शक्ति उपासना ही प्रचलित थी जिस समय श्री शंकराचार्य महाराज बुद्धमत को खण्डन करते कश्मीर पहुंचे- तो उस वक्त यहां श्री अभिनवगुप्त जी शक्तिमत के आचार्य थे। तब श्री शंकरा-

चार्य जी उनके पास शास्त्रार्थ करने आये। श्री शंकराचार्य जी शिव के उपासक थे। शक्ती को नहीं मानते थे। श्री अभिनवगुप्त जी ने उन को कहा। यह जगत शक्ती का विकास है। सब में शक्ती है। उस शक्ती का विकास ही यह सारा संसार है। पञ्चस्तवी के पहले स्तव के पहले तीन (३) श्लोकों में श्री कुण्डलिनी शक्ती का वर्णन किया गया है। साड़े तीन बार लिपटी हुई वह छोटी मोटी कुण्डलिनी जिसको जाग्रत हो। तो वह जन्म मरण से छूटता है। उसको दूसरा जन्म प्राप्त नहीं हो सकता। वह मुक्त हो जाता है।

श्लोक :- संसार कुहरादऽस्मात् निर्गन्तव्यं स्वयं बलात्।
पौरुषं यतनमाश्रित्य हरिणो वारि मञ्जरात्॥

अर्थ :— यथि संसार कि ज़िस मंज़ु द्वोर,
पनुने बलु किन्य छि नीरिथ छ्यकान।
पुरुषार्थं पनुनि यत्न, सूत्य,
यिथु पांछ्य सुइ पंजरु मंज़ कुड नेरान॥

श्लोक :- सारेण पुरुषार्थेन स्वेनैव गरुडध्वज,
कश्चित इव पुमानेव पुरुषोतमतां गता॥

अर्थ:- पनुने पुरुषार्थु कि ज़ोरु किन्य,
ज़ीव ति छुय पानु नारायण बनान।
पुरुषण मंज़ आसान खाल काह पुरुष,
युस पुरुषोत्तम बानस छ्यन छु वातान॥

अपनी शक्ति के बगैर उपासक को परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।

श्लोक :-

आपद्वनमऽननतोहा, परिपल्लविता कृति।
पुरुषार्थ क्रकच च्छिन्नं, नैव भूयः परोहिति॥

अर्थ:- आपदारूपी युस अन्तु रोस जंगल,
फलमति शकलि युस बोज़नु यिवान।
पुरुषार्थ कि लेंत्रि सुत्य च़ट्य च़ट्य,
यि आपदा जंगलु पतु छुनु खसान॥

"अयमात्मा शक्तिहीने लभ्यः"

अर्थ:- शक्तिहीन को परमात्मा प्राप्त नहीं होता और जन्म मरन से छूट नहीं सकता।

इसलिए शक्ति की उपासना करनी चाहिए। चित शक्ति पूर्ण प्रेम स्वरूप है और सर्व व्यापक है। चित शक्ती के प्रसन्नता के लिए ख्वाहिश, लोभ, क्रोध और अहंकार रूपी मस्त को नम्री रूपी तलवार से काटकर शक्ती माता के चर्ण कमलों पर अर्पण करें। तमाम प्राणियों से प्रेम उत्पन्न करें। अपने स्वरूप को औरों में देखें और तमाम प्राणियों के स्वरूप को अपने में देखें। भेद भाव का हमेशा के लिए छोड़ दें। अपने जैसा औरों को आत्मवत समझें

बालक, यौवन, वृद्ध स्त्री, राजा, साधु, पापी, मूर्ख, विद्वान वगैरह सब के ऊपर प्रेम पूर्वक एक नज़र से देखें। शुद्ध विचार को ही निरंतर अन्तःकर्ण में उदय होने दें, अशुद्ध विचार को पास मत आने दें। शुद्ध विचार और शुद्ध-आचरण का पालन करने से शक्ति माता प्रसन्न होती है। शक्ति माता को ही प्रसन्न करना है। इसलिए शक्ति माता का ध्यान करें। उपासना करें। शक्ति ही जीवन है

शक्ति ही सत्य है। शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही सब कुछ है। शक्ति ही की सर्वत्र आवश्यकता है। शक्तिशाली बनें, बलवान बनें, वीर बनें, निर्भय बनें और स्वतन्त्र बनें।

इस मांस और रक्त रूपी जिस्म में जिसको शरीर कहते हैं। आप के लिए एक रथ है। जिस पर चढ़कर आप कहीं भी पहुंच सकते हो। इस शरीर रूपी रथ को काम में लावें। इस शरीर रूपी रथ के ज़रिये वैकुण्ठ पहुंच सकते हो। कायरता छोड़ कर सजीव बनें। आपके अन्दर शक्ति का भण्डार है; आपके जीवन का उद्देश्य, विशेष जीवन को प्राप्त करने का है।

जियालाल सराफ

(समाप्तम्)

प्रार्थना

मांज मबान्य छुम में बेड चोन्यआश
में ति बोज़तम चु ज़ारी।
हुस पथर प्योमुत तुलुम थोद,
कासतम में लाचारी।
पाद्य सेवन करहावोन्य बे चोन,
लगय पादन चे पारी।
ध्यान दार चोन हृदयस मंज़ ज़न,
बिहिथ चु तिलकदारी।
वोन्य बे ग्यव चोन्य गोण तु लक्षण,
कांशिरिस मंज़ सारी।
पादुनुय चान्यन बे लागय,
लोलु पोश ज़ोर्य ज़ारी।
चानि दर्शनु बापथ में गोम,
वेच़काल प्रार्य प्रारी।
हावतम मोख कासतम में ज़न्मु,
ज़न्मन हुंज़ खारी।
कोर में पन्चस्तवी तरजमु,
कांशिरिस मंज़ ज़ारी।

युथ ओपकार बाति बंखत्यन,
मैत्ति बनि चान्य यारी ॥

پرارتھنا

ماج بوانی چھم سئے بڈاش مئے تہ لوزتھ ژہ زاری
چھس پتھر پئیہ مت تلم تتھو کاستم مئے لاچاری
پادِ سیون کرہا وونی بہ چون لگے پادن ژلے پاری
دیان وادہ چون ہردیس منز زن بہتہ ژہ تلک واری
وونی بہ گیو چانی گون تہ لکھن کاشرس منز ساری
پادنے چانن بہ لاگے لولہ پوش ژار ژہ زاری

چانہ درشنہ باپتھ مئے گوم ییژ کال ژراری ژراری
ہاؤ تم موکھ کاستم مئے زنمہ زنمن ہنز خاری
کوژ مئے پنجتوی ترجمہ کاشرس منز جاری
ییتہ وؤپکار واتہ بھکتن مئے تہ
بنہ چانی یکاری

o

ॐ

ध्यान

सृष्टौसमस्थापनायतुऽपहरण विधौ
मोहणेनौग्रहीपि,

सर्वेषामऽर्गतानाम् निज मोहमवशाद्
ऽक्रमेनैवयालम।

नित्यं क्रीडा प्रसक्ता रचयति सकलं
स्वांतम शक्त्या प्रपंचम ।

सा नः स्नानाय सुयादऽभिमत फलं,
भद्रकाली च काली ॥

یُس پننہ مہاکنی کران سرشٹی تھتی سنہار
یُس دوان موہ تمہ تشں پُرت گران
کرہ روستہ سارنے ببندن یُس
مُشراونس پنُن ساہر تھوان
سوے بدرکالی گڑھیان سورُویہ سوّمن
ژھینن اسہ گاٹہ ژیتہ ہل آسن تن اسہ دیان

युस पनानि महिमा किन्य करान
सृष्टी थैती संहार;
युस दिवान मोह तमु निश पोत कडान,

क्रमु रौस्तुय सारिनुय वैदिशन योस्,
सुचरावनस प्यठ द्वय सामर्थ्यवान।
सोय मङ्गलोली कल्याणु स्वरूपु सोस
रछितन असि कांछमुत्य फल आस्यनन असि
दिवान ॥

ओं नमः त्रिपुर सौन्दर्यं ॥

—ः लघुस्तवः ः—

ॐ ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती
मध्ये ललाटं प्रभां,
शौक्लीं कान्तिमनुष्ण गौरिव
शिरस्यातन्वती सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः
सदाहः स्थिता,
छिन्द्यान्नः सहसापदैस्त्रिभिरघं
ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥१॥

یندرہ زہ تھرے کمان ہش دنت منز للاٹس دارانی

ژٕندرِمُس ہِش سفید ورن دفتی۔ شیرِمُس ہیڈ لیو ہہ حمکانی
ہرٕ لیٚیں ہٕمیس بیریہٕ پشندی پاکھٕی، چمکہٕ وٕنی دفتی روزآنی
سوے ترٕلیپر سُندری سآئنس ہرٕ لیس مشر روزی تن
سوے جوملی سۆرۆپ سر سۆتی سۆرۆپ نیٚنہٕ اُتھ ٹھکی تن
ترلن یلن ہیشِ اُشگر ٹیہ گنی، ترود پاپ امیہ ژٕکی تن

यन्द्राज़ सन्ज़ हिश कसान छुख दारबुन्थ ही भवानी
मंज़ ललाटस गह चे चमकान दिपिल चै शुबानी।
सासुबंध सिरियि बैयि चंन्द्रमु ज़ुन चे फोल्यमुत्य च़ोपारी,
त्रिभवनस योहय चोन जोति रूप कासि प्रथ
कांसि खारी ।

योहय ध्यान चोन माता शोपरायि हृदयस
मंज़ मे रुज्य तन ।

युथ बे बनुहा परिपूर्ण सथ चित्त आनन्द गण।
चेतितनम पावन ग्यान्यन कंर्यतनम तिक़
मे जानी ।

सरस्वती हुन्द प्रसाद बंन्यतनम, युथ मे
खुलेहे वाणी ।

०

या माता त्रपुसी लता तनुल सत्तन्तुस्थिति स्पर्धिनी,
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां तन्महे ते वयम्।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा,
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पर्शन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नराः
॥२॥

[illegible]

कुस ज़ानिजि तोरेलि लंजि हुंज़ि तारि हिश यथ छु फ़ल्लाव,
साह्रस्वार ज़ानिज वंलिथ यस कुण्डलिनी शक्ती छु नाव।
बीज़ु अछरस मंज़ कला योस छु ठीकिथ छु आसानी,
सोय कला ज़गथ पांदु करनस आसुनय छय व्यूगी।
अमिकुय ध्यान कुस मनुष्य ज़ानि, कर सना करि सु स्पर्श,
गर्भु बावस मुंद बावस अद, कर बनि ब्येयि मनुष्य॥

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तु सहसा
ऐ ऐ इति व्याहृतं,
येनाऽऽकूल वशादऽपीह वरदे
बिन्दुं विनाप्यक्षरम्।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे,
वाचः सूक्ति सुधारसद्रवमुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात्
॥ ३ ॥

ہی دیوی یوٗد کانٛہہ خوفناک چیز وُچھتھ ژٕلُن ژٕلُن
کری اے اے بِندو رٔٹتھ سٔدی تَلہٕ تی ژٕلُن
ییمہ مُجرا تَسَس بنہِ تَس چوٗن انُگرہ
نیرِ وانی تَسنٛدِ مۄکھہٕ نِشہِ زُٹہِ امرِتہٕکۍ سُمُدرٕ

ही दीवी यीद कांह खोफनाक चीज़
वुछिथ जल जल,
करि ऐ ऐ बिन्दु रॅटिथ सपदि
तल ती हल।
यियि मुजरा तससि सन्त्र बनि तस चोन अनुग्रह,
नेरि वांणी तसुन्दि मोखु निशि छुटि अमरयतुक्य
सुर्मुह॥

०

यन्नित्ये ! तव कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं,
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद्बुधश्चेद्भुवि।
आख्यानं प्रतिपर्व सत्य तपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पदं प्रणयितां
नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम्॥४॥

ہی نتیہ روٗپی دوٗیُم منتر چوٗن کامہ راجہ ناو آسہ وُن
سے منتر نِشکل بنِتھ کانہہ پرتھوی پیٹھ چھ زانہہ وُن
سے گو سارسوت بیز اکشر تت تپ ہی لگتی چھی پران
دوم پرون پیٹھ برہمن اسک ویاکھیان چھی کران
وانہ ناوتھ اوچ جاے پیٹھ یی منتر اچارن کران

ही नित्यरूपी दोयुम मन्त्र चोन कामः राज नाव आसुवुन।
सुय मंत्र निष्कल बनिथ कांह पृथ्वी प्यठ कुझानुवुन,
सुय गव सारसोत बीज़ु अक्षर सततप ही गोस छि परान।

वोतम परवन प्यठ ब्राह्मण अस्युक व्याख्यान छि करान,
वातुनांविथ ओंचि जायि प्यठ यी मन्त्र उच्चारन करान॥

०

यत्सद्यो बचसां प्रवृत्तिकरणे दृष्ट प्रभावं बुधै,
स्तातीयीकमहं नमामि मनसा त्वद्बीजमिन्दु प्रभम्।
अस्त्यौर्वोपि सरस्वतीमऽनुगतो जाड्याम्बु-
विच्छित्तये,
गौः शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं
विनासिद्धिदः।
॥५॥

٭ ٭ تریمہِ بیز اکھرُک مہا وٲنی کھُلنس پیٹھ گاٹلی وُتھان
تتھ اکھرس ژٕندر دِتھ سوٚستس چھُس بہ ہنہٕ کنی پرنام کران
سوٚروٗپ بنتھ سہ یوگ دار نایہ روٗستے سیٚدی دِوان
موٗرکھ روٗلی پاپیس گالنہٕ باپتھ واڈو نامی اگن بنان

त्रेयमि बीज़ अक्षरुक महिमा वांणी खुलनस प्यठ
दाना वुथान,
तथ अक्षरस चंन्दुर दिफ़ति सोंसतिस कुस बंसनु
किन्य प्रणाम करान
सोंरूप बंनिथ सु योग दारनायि रोंसतुय सेंदी
दिवान,
मूर्ख रूपी पांपियस गालनु बापथ वाडव नांमी
अंगुन बनान॥

एकैकं तव देवि बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं,
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वास्थितं
व्युत्क्रमात्।
यं यं काममऽपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा
चिन्तितम्,
जप्तं वा सफलीकरोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम्॥
(६)

ہی دیوی یُس پَرِ چون بیز اَچھُر یوٗد کُنُے
دُوٗشہِ رۄس یا دُوٗشہِ سۄس یا وُلٹہٕ سیٚود یا بیٚون بیٚونُے
ییٚمہِ ییٚمہِ کامنایہِ باپتھ یُس مَنُش آسہِ زَبان
تمِس مَنُشس بوسرس منز ساری مَطلب چھی نیران

ही दीवी युस परि चोन बीज़ अक्षुर
योंद कुनुय,
दुषि रोंस या दुषि सोंस या वुल्टु स्योंद या
ब्योंन ब्योंनुय।
येंमि येंमि कामनायि बापथ युस मनुशा आसि ज़बान,
तमिस मनुशस बवुसरस मंज़ सारी मतलब छी
नेरान॥

वामे पुस्तक धारिणीमऽभयदां साक्षस्रजं दक्षिणे,
भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरां कर्पूर कुन्दोज्ज्वलाम्
उज्जृम्भाम्बुज पत्रकान्त नयन स्निग्धप्रभालो-
किनीं,
ये त्वामऽम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां
कवित्वं कुतः ॥७

کھوورِس اَتھس منز ژھے پوستک دورمُت ہی بوانی
دچھنِس اَتھس زپہ مال ہیتھ ستی ابھے دِوانی
بیاکھ اتھ چون پمپوش زن بکھتن وَر دِوانی
کیتھ امتی پمپوشہ نیترو زن ژ بکھتن وُچھانی
یس یہ دیان کرِ چون امبا تس پرسن بنانی
اسہ کاہہ سہ یتھ جگتس منز تس چھ دانا وانی

खोवरिस अथस मंज़ छे पोस्तक दोरमुत ही भवानी,
दछिनिस अथस ज़पमाल वेथि सुत्य अभय दिवांनी।
ब्याख अथ चोन पम्पोश ज़न बखत्यन वर दिवांनी,
कोल्यसुत्य पम्पोशि नेत्रव जन चु बखत्यन वुछांनी।
युस यि ध्यान करि चोन अम्बा मन तस प्रसन्न बनांनी
आसि कांह सु यथ ज़गतस मंज़ तस छिदाना वनांनी।

०

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीकपटल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
सिञ्चन्तीममृत द्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम्।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षर पदा निर्याति वक्त्राम्बुजा,
तेषां भारति! भारती सुर सरित्कल्लोललोलोर्मिवत्॥
(८)

یُس سفید پمپوش ڈلہ پاٹھ خوش ژے دِفتی وُچھانی
ورشُن کران امرِتہ کُے ژھٹ تمہ چے یِ آئے
یُس یہ دِیان کرِ برہماندس منز چھِ تس نیرآنی
بے روک پاٹھی تسند مۆکھ نشہ سرسوتی ہنز وانی

(۸)

युस सफेद पम्पोश डल पांठ्य
खोश त्रै दिफती वुछांनी,
वर्शुन करान अमरथ तुकुय कुट
तमिचे चिंवांनी।
युस यि ध्यान करि ब्रह्माण्डस
मंज़ छि तस मेरांनी,
बे रोक पांठ्य तसुन्दि मोखु निशि
सरस्वती हुंज़ वांणी॥

ये सिन्दूर पराग पुञ्जपिहितां त्वत्तेजसा द्यामिमा,
मुर्वी चापि विलीनयावकरस प्रस्तारमग्नामिव।
पश्यन्तिक्षणमऽप्यऽनन्यमनसस्तेषामऽनङ्गज्वर,
क्लान्तास्त्रस्त कुरङ्ग शावकदृशो वश्या भवन्ति स्फुटम्
(९)

چانہٕ تیز کِنہِ یُس اکھا وُچھ ستێندر بُری چھے آکاش
پرتھوی لاچھ رنگہٕ فٹمٕتٕ وُچھ آسیس منس پاس
نہ ڈلہِ وَنی کھینہ ماترس یُس یہِ دیان دارانی
سارے شکھتی تریہِ روپ بنتھ تِمن چھ قولو لوانی
تِمہ شکھتی یمن کامہ دیو تیر سیتی بند کرانی
(9) تِتھ پاٹھی یتھ کھوژمت مرگہ بچہ کانہہ چھے رٹانی

चानि तीज़ु किन्य युस अख्या वुछि सैन्दूरि बँर्यमुय आकाश
पृथ्वी लाछि रंगु फटमुत वुछि आस्यस मनस पास।
न डलुवुन्य क्षणु मात्रस युस यि ध्यान दारांनी,
सांरुय शखती त्रुयि रूप बनिथ तिमन छि कोलू यिवांनि
तिमु शखती यिमन कामदीव तीर सुत्य बन्द करांनी,
तिथु पांठ्य यिथु खूचमुत मृगु बचि कांह छुय रटांनी।

०

चञ्चत्काञ्चनकुण्डलाऽङ्गद धरामाऽबद्ध काञ्चीस्रजम्
ये त्वां चेतसि तद्गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितम्।
तेषां वेश्मसु विभ्रमादहरहः स्फारीभवन्त्यश्चिरं,
माद्यत्कुञ्जरकर्णताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः॥
॥ २० ॥

چمکوُنہ سونہ موختہ کنہ واجہ نٔژھ بند ژ لاگانی
سونہ سُنٛز تاگر پرٛزلہ وِنی چھکھ ژٕ کمرس گنڈانی
لیُس یہ دیان چون مَنٛز مَنَس تَتھی پیٹھ لیُس لگانی
تَس روز شانہ شوکت گرس ژیر تامتھ لچھمی
سو لچھمی لیوسہ مدہسی کنہ چہ ھسر گنٛز پاٹھی ژنٛچل آسانی
((10)) ساریے سَرٗپا یہ تَس پورشس قرار کرِتھ چھہ روزانی

चमकवुनि सोन मोख्तु कनवाजि नच्छबंद च़लागांनी,
सोन सुज़ तागुर प्रज़लवुन्य छुख च़ कमरस गंडानी।
युस यि ध्यान चोन सज़ मनस तथ्य प्यठ युसलगांनी,
तस रोज़ि शान शौकत गरस चेर तामथ लछमी।
सो लछमी सोस मद हेस्य कनुचि हस्वांच पाठ्य चञ्चल
आसांनी,
सारेय सरूपायि तस पुरुषस करार करिथ छि रोज़ानी॥

०

आर्भठ्याशशि खण्ड मंडित जटाजूटां नृमुण्डस्रजं,
बन्धूक कुसुमारुणाम्बर धरां प्रेतासनाध्यासिनीम्।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामाऽपीनतुङ्गस्तनी;
मध्ये निम्नवलित्रयाङ्कित तनु त्वद्रूप संवित्तये ॥११॥

شوبوِنہ چانہ جٹہ مکٹہ نالہ منشہ گلہ مالہ سوس ۲۴
بندوقہ پوشہ رنگہ سو رخ پوشاکہ تلہ موٗرد آسنہ سوس
کمرس تاگر گنڈتھ ژوٗتر بوز ترےٚ نیتھر دارآنی
چون سوروپ زانتہ باپتھ یہ دیان لگھتی چھ سو رآنی
((۱۱))

शूब्वुनि चानि जटु मुकटु नाल्य मनशि
कलु मालु सोंस , " "
बन्दूकु पोशि रंगु सोरुख पोशाकु
तल नोरदु आसुनु सोंस।
कमरस तागुर गंन्डिथ चोंतुर बोज़
त्रे नेथुर दारांनी ;
चोन सोंरूप ज़ानुनु बापथ यि
ध्यान लंखती छि सोरांनी॥

जातोऽप्यल्प परिच्छेदे क्षितिभुजां
सामान्य मात्रे कुले।
निःशेषावनि चक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः॥
यद्विद्याधर वृन्द वन्दित पदा श्री वत्स वत्सोऽभवत्,
देवि! त्वच्चरणाम्बुज प्रणतिजः सोऽयं
प्रसादोदयः ॥१२॥

کانٛہہ راجا موموٗلی کولس منٛزٕ آسہٕ زامُت
کُل پرتھوی سیٚٹھ کران آسہٕ راج آسمن پروٚدُمُت
تس چکرورتس پاٚدن دیوتا چھِ پوٗزانی ٭
چھُ مہِماتس چانہِ پادٕ پوٗزایہِ ہنٛز مہربانی ((۱۲))

कांह राजा मोमूली कोलस मंज़ आसि ज़ामुत,
कुल पृथ्वी प्यठ करान आसि राज
आस्मान प्रोवुत।
तस चक्रवर्तस पादन दीवता छि पूज़ानी,
छु महिमा तस चानि पादि पूज़ायि हुन्ज़
मेहरबानी॥

०

चण्डि! त्वच्चरणाम्बुजार्चनविधौ बिल्वी दलोल्लुण्ठन-
त्रुट्यत्कण्टक कोटिभिःपरिचयं येषां न जग्मुः करा:।
ते दण्डाङ्कुश चक्रचाप कुलिश श्रीवत्स मत्स्याङ्कितै-
र्जायन्ते पृथिवी भुजः कथमिवाम्भोज प्रभैःपाणिभि:॥
«२३»

ہی چنڈی چانی ژرن پوزایہ بیٹھ یُس اَنانی
بیل پوش ژٕنٛڈۍ ژٕنٛڈۍ کٕنڈ سِتی اَتھ یَس چھ ژٕھنانی
ٹھونگ تہٕ تیر کمانہٕ ہِندۍ یَس کٔنڈ خشہٕ سِتۍ وسانی
تِتھی اَتھ سوٗس پورُش بیٚیہ زٕنمہٕ راجہٕ مہاراجہٕ بنانی
(۱۳)

ही चंडी चांन्य च़रणु पूज़ायि प्यठ युस अनांनी,
ब्यल पोश च़ंट्य च़ंट्य कण्डि सूत्य अथु
यस छि च़्यनांनी।
ठोंग तु तीर कमानि हुन्द्य यस कोंण्ड खशि
सूत्य वसानी,
तिथ्य अथु सोंस पोरुष बैयि ज़न्मु राजि
महाराजि बनांनी॥
(13)

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्य मध्वासवैः,
त्वां देवि! त्रिपुरे! परापरमयीं संतर्प्य पूजाविधौ।
यां यां प्रार्थयते मनः स्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवम्,
तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृता॥
॥२८॥

برہمن راجہ ویش یا شودر چانی پوزا کرانی
دود، گیو، ماچھ، شراب پوزایہ کنی تسے ارپن کرانی
شردایہ کنی یہ کیشہ منگن چھکھ ضور زور کن دوانی
بے روک پاٹھ وگنہ روستے سیندی سہ پراوانی
॥۱۲॥

ब्रह्मण राजि वैश्य या शुद्र चांनी पूज़ा करांनी,
दोद, ग्यव, माछ, शुराब पूज़ायि किन्य
च़े अर्पन करांनी।
श्रदायि किन्य यि केंछा मंगन छुख
ज़ोरस तिमन दिवांनी,
बे रोक पांठ्य वंगनु रोस्तुय संदी
सु प्रावांनी॥

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे,
त्वत्तः केशववासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम्।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यसौ,
सा त्वं काचिदचिन्त्य रूपमहिमा शक्तिः परा-
गीयसे ॥१५॥

ہی ماتا ترلوکس منز شبد روپ چھکھ آسانی
جگتس منز ناو چھوئے سرسوتی چھی وناں
یَس نشہ کیشو اندراز دیوتا پرکٹ بناں
کلپہ انتس برہماک یَس نش لے گژھاں
کیتانی نہ سورنی مہما سوچتس شکتی چھی وناں
(۱۵)

ही माता त्रिभुवनस मंज़ शब्दु रूपु छु आसांनी,
जगतस मंज़ नाव चानुय सरस्वती छी वनांनी।
यैमि निशि केशव, यन्द्राज़, दीवता प्रकट बनांनी,
कल्पु अन्तस ब्रह्मादिक यैमि निशि लय गछांनी।
वोन्तान्य न सोरनी महिमा सोंचतिस थंज़
शक्ती छी वनांनी ॥15॥

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्मवर्णास्त्रयः।
यत्किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं,
तत्सर्वं त्रिपुरीति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः॥
(१६)

دیوَن مَنٛز ترٛٲیہِ دیو ٲسِے ، اَگنَن مَنٛز ترٛٲیہِ اَگن ٲسِے
شَکتی مَنٛز ترٛٲیہِ شَکتی ٲسِے ، سوَرن مَنٛز ترٛٲیہِ سوَر ٲسِے
وَرنَن مَنٛز ترٛٲیہِ وَرن ٲسِے ، گنٛگا ، جمنا ، سرَسوَتی ٲسِے
بوٗ ، بُوَہ ، سوَہ ، گایتری ٲسِے ، ست ترٛیٖہ آنند ٲسِے
یِہ کینٛژھا نیٖم ترٛگون سوٗروٗپ ، سۄ ترٛےٚ بیٚتھ
پیٚکان ٲسِے - (۱۶)

दीवन मंज़ त्रनुवय दीव छुय, अंगनन मंज़ त्रुअंगुन छुय,
शक्ती मंज़ त्रु शक्ती छुय, स्वरण मंज़ त्रनुवय स्वर छुय।
वर्णन मंज़ त्रु वर्ण छुय, गंगा, जमना, सरस्वती छुय,
भू, भुवः, स्वाह, गायत्री छुय, सत च्यथ आनन्द छुय।
यि कैंछा नियम त्रिगोण स्वरूप, सो त्रय पँत,
पत, पकान छुय ॥16॥

लक्ष्मीं राज कुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करीम ध्वनि,
क्रव्यादद्विप सर्प भाजि शबरीं कान्तार दुर्गे गिरौ।
भूत, प्रेत, पिशाच, जम्बुक भये स्मृत्वा महाभैरवीं;
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोय
पल्वे ॥१७॥

راژ گرن منز لچھمی ، جے ژے منزرن لوسی
ولنہ دتہ کلیان روپی خوفناک جانورن منز شکاری ژے
کوہن پیٹھ چھکھ ژٕ درگا ، پشاچن منز بیروی
یم ولنہ جائین دیان چون سورن ، تمن ژٕ آپدا دور
کرانی -
((۱۸))

राज़ु ग्रज़न मञ्ज़ च़ु लछ्य मी, जयचे मंज़ रणभूमि
बुस्ट वनि कल्यान रूपी खोफनाक जानवरन
मंज़ शिकारि चुय।
कोहुन प्यठ छुख चु दुर्गा, पिशाचन निशि
भैरवी।
यिम वुन्दु जायन च्यान चोन स्वरन, तिमन चु
आपदा दूर करान्य।

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी,
मातङ्गी विजया जया भगवती देवि शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शङ्कर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता कुमारी त्यसि॥
((१८))

مایا ژٕے، کُنڈلنی ژٕے، کریا مدُمتی ژٕے
کآلی ژٕے، کلا ژٕے، مالنی ماتنگی ژٕے
وِجیا ژٕے، جیا ژٕے، یختیارِ واجنی ژٕے
ژٕہتھ سٕورُوپ ژٕے، سامرتھ ژٕے، شامبوی شکتی ژٕے
شنکرِ سُندٕ ٹاٹھ کُکھ ژٕے، سرسوتی بیروی ژٕے
ہرینٛ شکلہِ پراپر تریپرا ماتا یِم رۄپ ژٕے
((۱۸))

माया च़्य, कुण्डलिणी च़्य, क्रिया मदुमंती च़्य,
कोंली च़्य, कला च़्य, मालिनी मातङ्गी च़्य।
विजया च़्य, जया च़्य, यखतियारु वाजन्य च़्य,
च़्यथ स्वरूप च़्य, सामरथ च़्य, शाम्भवी शक्ती च़्य॥
शंङ्करु सुन्दु टाठ कुठ च़्य, सरस्वती भैरवी च़्य।
ह्रीम् शक्तिहि परापर त्रिपुरा माता यिम रू

०

((१८))

आई पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रि क्रमाद्यक्षरैः,
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च
तैस्तैस्वरैः।

नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः॥
((१६))

'अ' پیٹھ سارِنے اچھرن دوِیہ ترٕیہِ کرِتھ مِلۂناوِتھ
'क' پیٹھ 'क्ष' تانۍ شَبد سۘس رلاوِتھ ناو چانۍ بناوِتھ
ہی ترِپرایہ وُہ(۲۰) ساس ناو چانۍ رَہسیہ رُوپ بَنانۍ
ہی بیرو پتنی تمن رَہسیہ ناوَن پرنام کرانۍ
((१७))

'अ' प्यठ सारिनुय अछ़रन द्वियि त्रैयि क्रमु मिलुनांविथ
'क' प्यठ 'क्ष' तान्य शब्द रलांविथ नाव
चान्य बनांविथ।
ही त्रिपरांय वुह(२०) सास नाव चान्य रहस्य
रूप बनांनी।
ही भैरव पत्नी तिमन रहस्य नावन ब
प्रणाम करांनी॥
((१७))

बोद्धव्या निपुणं बुधैःस्तुतिरियंकृत्वा मनस्तद्गतं,
भारत्या त्रिपुरेत्यनन्य मनसी यत्राद्यवृत्ते स्फुटम्।
एक द्वित्रिपदक्रमेण कथितं स्त्वत्पाद संख्याक्षरै-
मन्त्रोद्धार विधिर्विशेष सहितः सत्संप्रदा-
यान्वितः॥२०॥

زانُنۍ چھےٚ گاٹلین یی تۄ ژےٚ کُن مَن لگاوِتھ
چانین پادن ہنٛد شُمار کیٛو اَچھرو کنۍ مِلناوِتھ
گوڈنکہ دوٚیمہ ترٛیمہ پَد کرمہ منتروٚدار بناوِتھ
رِتہ سمپرادایہ سوٚتی یی تۄ اَوّن مےٚ ژےٚ کُن مَن ٹھیکراوِتھ
((۲۰))

ज़ानुनुय छुय गाटुल्यन यी तव च़ै कुन मन लगांविथ,
चान्यन पादन हुन्द शुमार क्यो अछुरव किन्य
मिलुनाविथ।
गोडुनिकि दोयिमि त्रेयमि पदु क्रमु मन्त्रोदार
बनांविथ;
रुति सम्प्रदाय सोत यी तव ओन मे च़ै कुन मन
ठीकरांविथ॥
((२०))

०

सावद्यं निरवद्यंऽस्तु यदि वा किं वानया चिन्तय
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त
संचिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायमानं
हठात्
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मिन्यापि ध्रु
(२२)

نیٚند یا یہ سۄس یا نیٚند یا یہ رۄس فکرا اَچھ تراوِتھ
یُس یہ ستوتر کانٛہہ منُش پَرِ آسس بَکتی چاَنی
یٚمِس پانس لوچر زانٛتھ مےٚ تہٕ دِرِتھا پراوِم
چانہٕ بکھتی ہٕنٛز زور بکواسی بنٛتھ یہ تۄتا بنۄم
((٢١))

नैन्धायि स्रोंस या नैन्धायि रोंस फ़िकिरा अमिच
त्रांविथ,
युस यि स्तोत्र कांह मनुष्य परि आस्य भक्ती
चॉनी।
पनुनिस पानस लोचर ज़ॉनिथ मे ति हठता
प्रावुम,
चानि भक्ती हुन्द ज़ोर् बकवास्य बनिथ यि तोता
बनोवुस।
(२१)

चर्चा स्तवः

— ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै —

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त माल्यं,
मौलौ हठेन निहित महिषासुरस्य।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर शिञ्जित मनोहरमम्बिकायाः ॥१॥

پاد چانٛی سوندر آنندٕ وایک یٚندٕراژن ترٛاوِتھ موختہ مال
یِمہ سۭتۍ زبردستی ہشا سُرسٕے کٔیتھ ماترس مٕنز وۄتہٕ سُہ پاتال
سُہ روشہ پاد چون روٗ زِتن مےٚ ہردیس
یُتھ بہٕ امبِکاے بوزٕ شرنو ژھنٛنی تال
سُے منوہر پاد بٔزۍ تن مےٚ ہیتھ چھے کارکس ہٲویتن کمال

॥

पाद चोन्य सोन्दर आनन्द दायक येन्द्राज़न त्रावि यथ
मोख्तु माल,

यैमि सूत्यज़ीर दिथ महिषासुरसुय हुण मात्रस मंज़
वोत सु पाताल।

सुय रोनि पाद चोन रूज़्यतन मे हृदयस,
युथ बे अम्बिकाय बोज़ु शोनि शोनि ताल ॥
सुय मनोहर पाद बंन्यतन मे हीतो जैजे बारक मे
हान्यतन कमाल॥१॥

सौन्दर्यं विभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
संपत्ति कल्प तरुवस्त्विपुरे! जयन्ति ।
एते कवित्व कुमुद प्रकरावबोध ,
पूर्णेन्दव स्त्रि जगज्जननि प्रणामाः ॥२

یِم پرٛنام سوٗندریُک وِلاسُک جاے بٔنِتھ تھٲنِ شُمار کرنہٕ یِوان
ترٛن لوٗکن ہِنٛد راج سَمپدایہٕ ہِنٛزِ کلپہٕ وٕرکھ ہُوی یِم پرٛنام چھِیان
یِم پرٛنام کوِتایہٕ روٗپی کُمد پوشہٕ پھولراونہٕ باپتھ ژنٛدرمہٕ چھِ بنان
ہی زگتھ زننی واتنےٚ ژےٚ میٲنۍ چھِیہ ہوی یِم پرٛنام حصِس یِتھ ژےٚ
کُن کران (۲)

यिम प्रणाम सौन्दर्युकि विलासुक्य जाय बं निथ
थंथ शुमार करनु यिव
त्रन भवनन हुन्दि राज संपदायि हुन्ध कल्पवृक्ष
हिव्य यिम प्रणाम छीवन
यिम प्रणाम कवितायि रूपी कुमदु पोश फौलरावनु
बापथ चंन्द्रमु छी बनान,
हीज़गथ ज़ननी वातनय ज़ैं म्यान्य यिथ्य हिव्य प्रणाम
० हुस बं चेंय कुन करान।

देवि! स्तुतिव्यतिकरे कृत बुद्धयस्ते,
वाचस्पति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति।
तस्मान्निसर्ग जडिमा कतमोऽहमत्र,
स्तोत्रम तव त्रिपुरतापन पत्नि! कर्तुम॥३॥

چانٛژ توتا کرنس پیٹھ چھُہ سامرتھ
برہسپت تہٕ دیوتا جڈ بنانی !
ہی ترن تاپن گالون چھُس ہو رکھ بہٕ آسِتھ
(۳) کتھ سامرتھ بہٕ کرٕ توتا چانی ۔

चान्य तोता करनस प्यठ छुन सामर्थ,
ब्रहस्पत तु दीवता जड बनानी!
ही त्रन तापन गालवुन्य छुस मूर्ख
बे आसिथ,
कति सामर्थ बे कर तोता चानी॥०॥
—((3))

मातः ! तथापि भवतीं भवती प्रताप,
विच्छित्तयेस्तुति महार्णवकर्णधारः।
स्तोतुं भवानि ! समवच्चरणारविन्द,
भक्ति ग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥४॥

ہی ماتا زانتھ یہ سنسار کٹھن دوکھ
ژٕ ژھنہ بایتھ کرم توتا یہ چانی
یہے توتا سنسار ساگرس
بنہ ناو سیانی بیہ ہانز سیانی
چانہ پادِ کملہ کے لولچہ آوِشہ
بکواسی ہیتھ چھسے توتا کرانی ((۴))

ही माता ज़ॉनिथ यि सम्सार कठिन्य दोख,
च़ छनु बापथ कॅरुम तोताथि चानी।
यिहय तोता सम्सार सागरस,
बनि नाव म्यान्य बैयि हान्ज़ म्यानी॥
चानि पादि कमलु के लोलचि आविशि,
बकवास्य ह्युव छुसय तोता करानी॥॥
«4»

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति,
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि।
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि,
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः॥
॥५॥

برہما رۄپہ زگتس کران پاد ژھے
وِشنو رۄپہ پالن کران ژھے
رودر رۄپہ سمہار آخرس کران ژھے
مۄہہ دِوان تہ بیٚیہ تھتہ تہ گالان ژھے
لیلا یہ کیہ چانہ چھس وُچھان رنگہ رنگہ
جے جے کار آسی تے چانین لیلاین (۵)

ब्रह्मा रूपु ज़गतस करान पांदु छुय,
वैष्णु रूपु पालन करान छुय।
रौद्र रूपु समहार आखरस करान छुय,
मुह दिवान तु बैयि तथ ति गालान छुय॥
लीलायि यिमु चानि छुस वुछान रंगु रंगु,
जय जय कार आस्य नय चान्यन लीलायिनुय॥

०

यस्मिन्मनागऽपि नवाम्बुज पत्र गौरि,
गौरि! प्रसाद मधुरां दृशमादधासि।
तस्मिन्निरन्तरमऽनङ्ग शराव कीर्णा,
सीमन्तिनी नयन संततयः पतन्ति ॥६॥

ہی گوری پمپوشہ رنگہ صفایس
اَمریتہ نظر چھکھ ژھ تراوانی
تس پیٹھ نیتہ نیمہ سارییے یوگنیہ
کامدیوس زن چھ وشہ گڑھانی
((५))

ही गौरी पम्पोशि रंगु सफ़ा यस,
अमृयतु नज़र छख ब़ त्रावांनी।
तस प्यठ नैति नेमु सारेय यूगिनीवि,
कामदीवस ज़न छि वश गछ़ांनी॥

०

((6))

पृथ्वी भुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य,
विद्याधर प्रणति चुम्बित पाद पीठः।
यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणयः स एष ,
त्वत्पाद पंकजरजः कराजः प्रसादः॥
((७))

اُدین راجس کھرٲوِ پیٹھ کران میٹھی ٭
وِدیادر تہٕ دیو تس چھی آدین ٭
چکرورتی عۆہدہ اوس تمی پرووُمت
چانہٕ پادٕ گردِ ہندِ انوگرہٕ ستی
((٧))

उदयन राजस ख्राव प्यठ करान मीठ्य,
विद्यादर त दीव तस छी ओदीन।
चक्रवर्ति ओहद ओस तम्य प्रोवमुत,
चानि पाद गरदि हुन्दि अनुग्रेह सुत्य॥
((७))

०

त्वत्पाद पङ्कजरजः प्रणिपात पूतै,
पुण्यैरऽनलपमऽतिभिः कृतिभिः कवीन्द्रैः।
क्षीर क्षपाकरदुकूल हिमाऽवदाता,
कैरपिबापि भुवन त्रितयेऽपि कीर्तिः ॥
((८))

ہی دیوی چانئن پئمپوشہ پادن
ہنز گرد بیٹھ کوٗر یمو پرنام
تم بنیہ وۄتم تیز لوٗز سوٗس
دانا وۄتم کوی پروو تمو نام
دوٗد زندرمہ ریشم وستر بیہ شینہ پانٹھو
صفا بنتھ ترن لبون منز بنیہ نیکنام ((۸))

ही दीवी चान्यन पम्पोशि पादन ,
हुंज़ि गर्दि ब्यठ कोर यिमव प्रणाम ।
तिम बनेयि वोतम तीज़ बोज़ सोस,
दाना वोतम कवी प्रोव तिमव नाम ॥
दोद ज़ेन्दरमु रीशिम वस्त्र बेयि शीनु पांठ्य,
सफा बनिथ त्रन बवनन मन्ज़ बनेयि नेकनाम॥
((९))

०

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्रपूजा,
मुद्दीपित प्रियतमा मदरक्त गीतिम।
नित्यं भवानि! भवतीमुपवीणयन्ति,
विद्याधराः कनकशैल गुहागृहेषु॥
((६))

کلپہ وِرٕکھ پوشہٕ ستہٕ چانٛی پوزا
لولہٕ ستہٕ چھِ گیوان چانٛی گیت
نیتھ ستہٕ سمیرکے گُفاہ رٔپی گرن منٛز
وایان وِدیادر سوز تہٕ ساز کیتھ ((۹))

कल्पवृक्ष पोशव सूत्य चान्य पूज़ा,
लोलु सूत्य छि ग्यवान चान्य गीत।
न्यथ समीर के गुफा रूपी गरन मंज़,
वायान विद्यादर सोज़ तु साज़
कूरय
(९)

०

लक्ष्मी वशी करण कर्मणि कामिनीना,
माऽकर्षण व्यति करेषु च सिद्धमन्त्रः।
नीरन्ध्र मोह तिमिरच्छिदुर प्रदीपो,
देवि! त्वद्ऽङि्घ्र जनितो जयति
प्रसादः॥
(१०)

چانہٕ ژرنہٕ کمل سیوایہٕ ہمیشہ پرساد
وش کران لچھمی تہٕ بییہ سیدین
تِگھتی سہ پراوان مہہ روٗپی گینہ
انہٕ گٹہٕ گالان ژانگہ سیتی زن
((१०))

चानि चरणु कमलु सीवायि हुन्द प्रसाद,
वश करान लक्ष्मी तु बैयि सैदियन।
शक्ती सु प्रावान मुह्नु रूपी गैनि,
अनि गटु गालान चॉंगि सूत्य ज़न॥
((10))

देवि! त्वदंघ्रि नखरत्न भुवो मयूखाः
प्रत्यग्र मौक्तिक रुचोमुद मुद्वहन्ति।
सेवानति व्यतिकरे सुर सुन्दरीणां,
सीमन्त सीम्नि कुसमस्तव कायितं यैः॥
«२१»

مأج لوأنی چانِن ژرنن ہنْدی نمہ زتِن
موخت ہ دِفتی داران ژن کِرن
یوگنیہ ییلہ پرن ہوان زئے ژرنن ہیٹھ
نمہ چمکہ پزلان مَس تہ سمِہ تیمَن
«۱۱»

मांज ववांन्य चान्यन चरनन हुन्द्य
नमु रत्न,
मोख्त दिसी दारान ज़न किरण।
यूगिनियि येलि परन प्यवान चैं
चरनन प्यठ,
नमु चमकि प्रज़लान मस तु सुमु तिमन॥
«११»

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिन दीधिति दीप्ति
दीप्तं,
मध्ये ललाटमऽमरायुधरश्मि चित्रम्।
हृच्चक्र चुम्बि हुतभुक् कणिकानु-
रूपम्,
ज्योतिर्यदेत द्दिदमम्ब! तव स्वरूपम्॥
((१२))

ماتا ژےٚ مستک ژنٛدرٕ زن پرزلوٗن ٭
رام رام بٕرِتھ ڈوٗنٛی چھکھ نی ٭
ہردیس منز اگنی جیوتی سوٗروٗپ زن
ماج چون سوٗروٗپ چھُے پرکاش آسوٗن
((۱۲))

माता छै मस्तक चंन्दुर ज़न प्रज़लवुन,
राम राम बेदरुन्य दुन्य चमकुवुन्य ।
हृदयस मंज़ अग्नी ज्योती सौरूप ज़न,
मांज चोन सौरूप छुय प्रकाश आसुवुन॥

०

(१२)

सिन्दूर पांसु पटलच्छुरितामिव द्यां,
त्वत्तेजसा जतुरस स्नपितामिवोर्वीम्।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे विहाय,
व्रीडां मृडानि सुदृशस्तमनु द्रवन्ति॥
((१३))

سیٚندر گرد سۄستُے جۄرمُت آکاش
لٲچہِ رنگہٕ پرتھوی شرٲن کرِتھ زَن
یُس ژھٕ چھپہٕ ماترُس لاج تراوِتھ
((١٣)) تس سٮ۪دی آج لیوٲنی پتہٕ دوران

सैन्दरि गरदि सौस्तुय जौरमुत आकाश,
लाछि रंग पृथ्वी श्रान करिथ ज़न।
युस वुछि क्षण मात्रस लाज त्राविथ,
तस सैदी मांज ववान्य पत दोरान॥
((13))

o

मातः! मुहूर्तमऽपि यः स्मरति स्वरूपं,
लाक्षारस प्रसरतन्तु निभं भवत्याः।
ध्यायन्त्यनन्य मनसस्तमनङ्गतप्ताः,
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्वगुणं तरुण्यः॥
((२४))

ہی ماتا یُس مُہورتس دیان کری
چون سۆروٗپ لاچھِ رنٛگہٕ تارِ سمان
سۆنٛدر جوان اَچھ رٕچھ نہٕ ڈلوٕنہٕ مَنہٕ سۭتہٕ
کامنایہٕ تاوِ مٔنٛز تس چھِ سمران
((۱۴))

ही माता युस महूरतस ध्यान करी,
चोन सोरूप लाछि रंग तारि समान।
सोन्दर जवान अछु रछु न डलवुनि मनुसस,
कामनायि तावि मन्ज़ु तस छि सुमरान॥

((14))

o

आधार मारुत निरोध वशेन येषां,
सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि! वपुस्त्वदीयं,
ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्या॥
॥१५॥

مولادارُک پرٛان بنٛد کرِتھ یِمَن ✤
سینٛدرِ سیتی رنٛگمُت پمپوش زَن
ہردیس منٛز اَتھ پمپوشس پیٹھ
چون سوٛروٗپ باسان راتھ کیوٗ دِن
تِمنے پورشن ہُنٛد چھِ دیان داران
((۱۵)) سیٛدی ساد دیوتاہ تہٕ بییہٕ ستھ زَن

मूलाधारुक प्राण बन्द करिथ यिमन,
सेन्दूरि सूत्य रंगमुत पम्पोश ज़न।
हृदयस मंज़ अथ पम्पोशस प्यठ,
चोन स्वरूप बासान राथ क्यो द्यन॥
तिमनुय पोरशान हुन्द छि ध्यान दारान,
सेद्य साद् दीवताह ति बैयि सथज़न॥
((15))

o

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवर्ति,
रूपं त्वांऽम्ब ! नवयावक पङ्कपिङ्गम् ।
तेषां सदैव कुसुमायुध बाणभिन्न -
वक्षः स्थला मृगदृशो वशगा भवन्ति॥
((१६))

سِریہ منڈلکہ پرکاشہ وۄزلہ رنٛگہ سۄنٛس بیٛیہ
لاچھہ رنٛگہ سۄنٛس یِم چوٗن دیان داران ۔
کامدیوٕ سُند تیٖر وچھ مچھہ وچھہ سۄنٛس ۔
اَچھہ رٕچھہ تِمن ماتحت چھِ روزان
((١٦))

सिर्यि माण्डलुकि प्रकाशि वोज़लि रंग सोंस बैयि,
लाछि रंग सोंस यिम चोन ध्यान दारान ।
कामदीव सुन्द तीर् वचमाचि बछि सोंस,
अछ़ रछ़ तिमन मातहत छि रोज़ान ॥
((16))

o

रूपं तव स्फरित चन्द्र मरीचि गौर,
मडालोकते मनसि वागऽधिदैवतं यः।
निस्सीम् सूक्ति रचनामृत निर्भरस्य,
तस्य प्रसाद मधुराः प्रसरन्ति वाचः॥
((१७))

یم پۄژھ مَنَس منٛز ژٔندرمہ ہیو چمکِھ وُن
تَس سۄتی رۄپہ چون دیٛان دارُن
حد رۄس وانی مۄدُر امرتُچ برٛیتھ
نیٖرِتھ تِمَن نِرمَل پرٛوَاہ ہیوٗ زُن
((۱۷))

यिम पोश्रा मनस मंज़ चन्दरम् ह्युव चमकुन,
सरस्वी रूपु चोन ध्यान दारन।
हदु रोस वांनी मोदुर अमर्यथ बंर्यथुय,
नेरि तिमन न्यरमल प्रवाह ह्युव ज़न॥
((17))

○

शर्वाणि! सर्वजन वन्दित पाद पद्मे,
पद्मच्छद च्छवि विडम्बित नेत्र लक्ष्मिः।
निष्पाप मूर्ति जन मानस राज हंसि,
हंसि त्वमाऽपदमऽनेक विधां जनस्य ॥१८॥

ہی پاپ گالوݩی ژےٚ پادٕ کمَلَن
سارٕی زیو چھی پرنام کرآنی
پمپوشہ بیرگکے دیٖپتی ہندی پاٹھی
چانی نیترٕ کمل چھ شوبانی
شود منشس چھکھ ژٕ ہتہ ساگرس منز
راز ہنس ہش زٕن ژٕ روزآنی
ژےٚ چھکھ سادکن نانا پرکارکی
دوکھ ژٕ دآوی اپرادور کرآنی ((۱۸))

ही पाप गालवुन्य चैंय पादिकमलन,
सारी ज़ीव छी प्रणाम करानी ।
पम्पोशि बेरगुके दिप्ती हुन्द्य पाठ्य,
चान्य नेत्रु कमल छि शूबानी ॥

शोद्ग मनशस कुरख च्यथ सागुरस मज़,
राज़ हन्स हिश ज़न छु रोज़ोनी।
युय छुख सादकस नाना प्रकारक्य,
दोषन छु दोद आपदा दूर करोनी॥
॥१८॥

इच्छानुरूपमऽनुरूपे गुण-प्रकर्षं,
संकर्षिणि! त्वमनुभृत्य यदा विमर्षि।
जायेत स त्रिभुवनैकगुरुस्तदानीं,
देवः शिवोऽपि भुवनत्रय सूत्रधारः ॥१९॥

ہی سنکرشنی پننے یژھاے
یٔیلہ چھکھ ترگنن سوروپ پانہٕ داران
تٔیلہ ہی دیوی تژن لوٗنٛ تہٕ شہ
کیول گورو شیوناتھ چھُے ورپان
اُسے شو مبو تژن لوٗنٛ تہٕ شہ
نوسود پانٔی سوترٕدار بیٚناں

((१९)) ही संकरषणी पननि यछाये,
यैलि छुख त्रगोण स्वरूप पानु दारान।

तैलि ही दीवी ग्रन भवनन हुन्द ,
केवल गौरु शेवनाथ कु वोपदान ।
अदु सुय शौरूब ग्रन ववनन हुन्द ,
नौसूद पोठ्य सूत्रदार बनान ॥१९॥

* * *

योयं चकास्ति गमनार्णव रत्नमिन्दु-
यौयं सुराऽसुर गुरुः पुरुषः पुराणः ।
यद्वाममऽर्थमिदमऽ-न्धक सूदनस्य ,
देवि ! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ॥२०॥

آکاشہ سوٗدرس ہشہ رتن لوٗسہ ۶
شوٗبا زُندرس چھے آسانی ۶
دیوَن تہٕ اسرن لُس گوٗرو چھ آسہ وُنے
بھگوانس شکتی لیُس دوا آئی
یوٗسہ ہا دیو ستیٛن چھ ادا آگئی سوٗ
چھکھ ژے یہ چھ آعم ستید بانی
((۲۰))

आकाश सोंदरस मंज़ रत्नन योस,
शूबा चन्दरमस क्य अनांनी ।
दीवन तु असुरन युस गुरु छु आसवुनुय,
भगवानस शक्ती योस दिवांनी ;
योसु महादीव सुन्ज़ छि अर्धाङ्गनी स्वय,
कुस चुय यि छु मांज स्यद बनांनी ॥

((२०))

—o—

ध्याताऽसि हैमवति ! येन हिमांशुरश्मि-
मालाऽमलद्युतिरऽकल्मष मादरेण ।
तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमऽनल्प कल्प;
मऽल्पैर्दिनैः सृजसि सुन्दरि ! वाग्विलासम् ॥

((२१))

لُیس سوٗرِ چھوٗن دِیانٛ نِیرٕل کِرنوٗ سوٗس
ژٕنٛدرمس سمانٛ اُنٛدرِ شوٗد مَنہٕ کیٛی
ہی سُنٛدری تَس تِہ چھُٹ ہیٛٹ کرانٛ یادِ
سرسوٗتی ہُنٛد وِلاس اَنٛوٗ گژِھ کیٛو

((۲۱))

युस सोरि चोन ध्यान न्यरमल किरणव सोत,
चन्दरमस समान अंन्दर शोद नन किन्य।
ही सोन्दरी तस चु जह पट करान पाद,
सरस्वती हुन्द व्यकास अनुग्रह किन्य॥
((21))

त्वां व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति,
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललितेत्यऽपराजितेति,
देवि! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति ॥
((२२))

ساری سے وأتھ ژ کامنا دایک
لچھمی، کلا، بیٹھ مالا روپ
دشمنس پیٹھ ژیہ سوس ژے للتا
چھی ونان ژیے زیا ژیے اوما روپ ((۲۲))

सांयसुय वांतिथ चु कामना दायक,
लछमी, कला, बेयि माला रूप ।
दुश्मनस प्यठ ज़यि सोस चुय ललिता,
छी वनान चेय ज़या चेय वोमा रूप ॥
((22))

०

उद्दाम काम परमार्थ सरोज षण्ड-
चण्ड द्युति द्युतिमुपासित षट् प्रकाराम्।
मोह द्विपेन्द्र कदनोद्यत बोधसिंह-,
लीला गुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि॥
«२३»

یوسہ کامراجہ بیزاکھر پمپوش ڈلکے
پھولنہ پاتھ سدھیہ روپہ روزانی
ہولادار پیٹھ تھ کنہ منز
ووپاسی روپہ لوسہ تتہ آسانی
یوسہ شیہ لس گالتہ پاتھ ✤
گیانہ روپہ تتہ گوپھ چھ روزانی
تمی سے بھگوتی ماتا تروپرایہ کن
گنگونڈ لس تھس پرنام کرانی

((۲۳))
योसु कामराजि बीज़ाक्षर पम्पोश डलुके,
फोलुन बायथ सिद्धयि रूपु रोज़ांनी।

मूलाधार प्यठ षठ चक्रस सन्ज़,
वोपासी रूप युस तति आसांनी ।
योस सुह हेस्यतिस मालुन बापथ,
ज्ञान रूप सुह गोफि छि रोज़ांनी ॥
तेस्यसुय भगवती माता त्रोपरायि कुन,
गुल्य गंन्डिथ तस छुस प्रणाम करांनी ॥
(२३)

गणेश वटुकस्तुतारति सहाय कामान्विता,
स्मरारिवर विष्टरा कुसुम बाण बाणैर्युता ।
अनङ्ग कुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः,
कदम्बवन मध्यगा त्रिपुर सुन्दरी पातु नः ॥
(२४)

گنیش تہ بیرون چھے لوتا ژے کرمژ
رتی سان کامدیو ژے سیوا کرون
شونامہ پانہ چھے آسن چھوتے
کامدیو لوشہ پانن سہ داروُن
اننگہ آکرشمہ بیہ ترییو سدیو لو ژو چھمژ
کدمبہ جنگلس منز ژہ رودزانی

شبہ روپ یتھ چون مانز ہی تر پور سوندری
کلیانہ کے ذ تتم تہ راچھ سپانی

((۴۹))

गणेश तु वैश्रवन कुय तीता छैकरमुत,
रती सान कामदीव छे सीवा करवुन ।
शिवनाथ पान कुय आसन बोनुय,
कामदीव पोषि बानन सु दारवुन ॥
अनङ्गः कोसमय वोषि त्रैयव सोदियव वु
वजिमुत,
कदम्ब, जंगलस मंज़ तु रोज़ानी ॥
सुयरूप चोन मांज ही त्रैपुर सोन्दरी,
कल्याण मे के यतनम तु राछ्न्यानी ॥

((२४))

त्वामैन्दवीमिव कला मनु भाल देश,
मुद्भासिताम्बर तलामऽवलोकयन्तः ।
सद्यो भवानि! सुधियः कवयो भवन्ति,
त्वाम भावन हित्तधियां कुल कामधेनुः ॥

((२५))

یِم مستکس منٛز ژٕنٛدرمہ کلاہِش
ژٕھ چمکاوِتھ آکاش ستٕوس
ہی دٔلوی جلدٕے چھی تِم بنان دانا
بیٛیہ بڈٕ کوِتاہ سوٗستی
چھکھ تِمن دِوان ژٕے سارِنی مطلبن
چانہِ باوناہ کِنی تِم نِرمل لوٗرِ سوس

((۴۵))

यिम मस्तकस मञ़ छै चेन्दरसु कला हिश,
वुछ चमकांव्य मुत्य आकाशि सौंस ।
ही दीवी जल्दुय छी तिम बनान दाना,
बैयि बडि कौवितायि सौंस्य ।
छुख तिमन दिवान च़ुय सारिनुय
मतलबन,
चानि बावुनायि किन्य तिम
न्यर्मल ऑज़सौस

९२

०

उत्तमहेमरुचिरे ! त्रिपुरे ! पुनीहि ,
चेतश्चिरन्तनमऽघौघ वनं लुनीहि ।
कारागृहे निगड बन्धन पीडितस्य,
त्वत्संस्मृतौ झटिति मे निगडास्त्रुटयन्ति॥
((२६))

تووُہت سۆن زَن ژٕ چمکان ترٛوپراے
شۆد کَر مَن مےٚ پاپہٕ کھِلہٕ میانی لۆن
سمسار رۆپی جیلس منز چُھس بہٕ
کامنایہٕ بیڑٕین ہُند چھُم مےٚ لۆر
چانہٕ سُمرنہٕ کِنیٚ جلد جلد ژھِنن مےٚ بیڑ
ییٚلہٕ آسہٕ ؤتِس مےٚ اَنوگرہٕ چھون
((۲۵))

तोवनुत सोन ज़न चु चमकान त्रोंपरांय,
शोद कर मन में पापु खिल म्यांन्य लोन।
सम्सार रूपी जेलस मज़ कुस बं ,
कामनायि बेड्यन हुन्द छुम में वोर ।
चानि सुमरनि किन्य जलद जलद छ्यनन में ;
येंलि आसि आंरतिस में अनुग्रह चोन ॥26॥

रुद्राणि! विद्रुम मयीं प्रतिमामिव त्वां,
ये चिन्तयन्त्यऽरुणकान्तिमऽनन्य रूपाम।
तानेत्य पक्ष्मलदृशः प्रसभं भजन्ते,
कण्ठाऽवसक्त मृदुबाहु लतास्तरुण्यः॥
((२७))

ہی رودرانی یُس چانِس سۆرۆپس وُچھ
رودر شکتھ سِریِہ سِندی پاٹھی چمکان
اپوٗرو روٗپس یتھی سے دیان کرِ
سوندر نظرٕ سوٗس اَتھ رٕژھ جوان
زور ستی تمہ گردنہ پیٹھ اَتھ ترآوی تھ راو
انڈ انڈی رۄزتھ تس سیوا کران
((۲۷))

ही रौदरानी युस चानिस सौरूपस वुछि,
रौदर शकति सिर्यिय सुन्दय पाठ्य चमकान।
अपूर्वु रूपस यिथ्य सुय ध्यान करि,
सौन्दर नज़रव सौस अछ रछ जवान।
ज़ोर सत्य तमि गर्दनि प्यठअथ त्रांव्यत्रांव्य
अंन्द अंन्द रज़िथ तस सीवा करान॥
((27))

०

त्वद्रूपमुल्लसित दाडिम पु
मुद्भावयेन्मदन दैवतह्लं
तं रूपहीनमऽपि मन्मथ
माऽलोकयन्त्युरु नितम्ब भरास्तरुण्यः ॥
॥२८॥

یُس چون دیان کرِ دآن پوشہ رنگہ سوٗس
اوِناشہ کامراجہ بیز اَکھہ رس
یوٚدوے روٗپہ کنِی آسہ سُے بدشکل
اَڈھہ رَڈھہ وُچھن زَن کامدیو تس
((۲۸))

युस चोन ध्यान करि दांन पोशि रंगु सोंस,
अविनाशि कामराजि बीज़ अक्षरस ।
योदवय रूपु किन्य ऑसि सुय
बद शकुल,
अछ़ रछ़ वुछन ज़न कामदीव तस ॥
॥28॥

०

रुद्राणि! विद्रुममयीं प्रतिमामिव त्वां,
ये चिन्तयन्त्यऽरुणकान्तिमऽनन्यरूपाम्।
तानेत्य पक्ष्मलदृशः प्रसभं भजन्ते,
कण्ठाऽवसक्त मृदुबाहु लतास्तरुण्यः॥
((२७))

ہی رۄدرانی یُس چانِس سۄرۄپس وُچھِہ
رۄدر شکلہ سِری بہ سِندی پانٹھ چمکان
اپورو رۄپس یتھ دیان کرِ
سو نظرِ سۄس اَتھ رٔژھ جوان
زور ستی تمہ گردنہ پیٹھ اَتھ ژاوی ژاوی
اَنٛدٕ اَنٛدٕ رٔزِتھ تَس سیوا کران
((٢٨))

ही रौद्रानी युस चॉनिस सोरूपस वुछि,
रौदर शकलि सिर्यिय सुन्द्य पाॅठ्य चमकान।
अपूर्वु रूपस यिथ्य सुय ध्यान करि ;
सौन्दर् नज़रव सौंस अछु रछु जवान।
ज़ोर स्त्य तमि गर्दनि प्यठ अथ त्रांव्य त्रांव्य
अंन्द्य अंन्द्य रूज़िथ तस सीवा करान॥
((२८))

०

त्वद्रूपमुल्लसित दाडिम पुष्परक्त,
मुद्भावयेन्मदन दैवतक्षरं यः ।
तं रूपहीनमऽपि मन्मथ निर्विशेष-
माऽलोकयन्त्युरु नितम्ब भरास्तरुण्यः ॥
((२८))

یُس چوٗن دیان کرِ دٲن پوشہٕ رنگہٕ سوٚس
اَوِناشہٕ کامراجہٕ بیٖز اَکھرَس
یوٚدوے رۄپہٕ کِنہِ آسہِ سُے بدشکل
اَچھ رَچھ وُچھن زَن کامدیوٗ تَس
((۲۸))

युस चोन ध्यान करि दांन पोशि रंग सोंस,
अविनाशि कामराजि बीज़ अछरस ।
योदवय रूप किन्य ऑसि सुय
बद शकुल,
अछ़ रछ़ वुछन ज़न कामदीव तस ॥
((२८))

०

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धोदृशो-
स्त्वद्गुण
ग्रामाऽकर्णनरागिताश्रवणयो स्त्वत्संस्मृति
श्चेतसि।
त्वत्पादार्चन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं
वाचि मे,
कुत्राऽपि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि
मा शाम्यतु॥
(२९)

ہی دلوی چانہ درشنک ابلاش
ہر دم شیڑنے منز مے روزی تن
چانی گون لوزنک تمناہ مے آسی تن
نر روزی تن مے اتھن کمن
نامہ سمرن زیتس منز مے ترگیہ
چانی یاد لوزا مے
چون کہرتن کرنی رودن مے وای
دو پاسنا چانی گم منتہ مے گژھی تن ॥۲۹॥

हीदीवी चानि दर्शनुक अभिलाश,
हरदम नैत्रनुय मंज़ मे रुज़्यसन।
चोन्य गोण बोज़ुनुक तमन्ना मे आस्यतन,
हर दम रुज़्यतन ख्यान्यन कनन॥
चोन नामु सुमरन ख़्यतस मंज़ गरि गरि,
चोन्य पादि पूज़ा ख्यान्यन अथन॥।
चोन कीर्तन करवुन्य रुज़्यतन मे वानी,
वोपासना चोन्य कम मतु मे गंछ्यतन॥॥
(29)

—— ० ——

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरिचन्द्र सहस्त्र रश्मि,
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दिताये।
वागीश्वरी! त्रिभुनेश्वरि! विश्वमात-
रऽन्तर्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते ॥३०॥

سُرسوتی ژٕ لۄپر سۄنٛدر زٕ گژھ ماتا
بۄنٛی شتورٕی چھکھ آسۄنۍ ژٕ سے
برہما یٚنٛدر رۄدر سۄریہ ژٕ نٛدرمہ کماد
وِشنو گنیش چھے پۄزان ژٕے
اَنٛدرٕ نیبر وٲتھ ژٕ تریو بۄلس ساریے
گٔلی گنٛدِتھ نیوت بٕ پرنام وٲتی ... ॥۳۰॥

सरस्वती त्रुपूर सौन्दरी ज़गथ माता,
बवनेश्वरी क्षख आसुदुन्य च़ुय ।
ब्रह्मा रौदुर यंन्दुर सिद्धयि च़ंन्दरमु कुमार,
वैष्णो गणेश छुय पूज़ान च़ैय ॥
अंन्दर् नेबरु वातिथ त्रेबवनस सांयसुय,
गुल्य गंन्डिथ म्योन प्रणाम वातिनय च़ैय ॥
((३०))

यः स्तोत्रमेतदऽनुवासरमीश्वरा याः,
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
तस्यैप्सितं फलति राजभिरीड्यतेऽसौ,
जायते स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम् ॥ ३१ ॥

یُس یہ چون ستوتر یر پرِتھ دوہہ لولہ سان
یا کنُہ بوزِ ادِ بنہِ تس کلیان
چکرورت راجہ تس کرن لولہ زا
ساری مطلب تس چھ نیران
منز کامنا سِدّ تس چھ سیدان
سے چھ لوگنین ہند زیادِ لولہ بنان
((۳۱))

युस यि चोन स्तोत्र परि प्रथ दोह तोलु सान,
या खनव बोज़ि अदु बनि तस कल्यान।
चक्रवृत राजि तस करन पूज़ा,
सारी मतलब तस छि नेरान॥
मनुष्य कामना स्यद तस छि सपदान,
सुय छु यूगिनियन हुन्द ज़्यादु टोठ बनान॥
((३१))

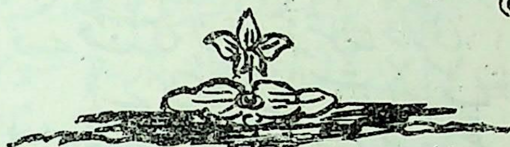

ॐ नमो महामायायै

॥((अथ घटस्तवः))॥ [तीसरा स्तव]

देवि! त्र्यम्बक पत्नि पार्वती सति
त्रैयलोक्य मातः शिवे!
शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे
रुद्राणि कात्यायनि!
भीमे भैरवि चण्डि शर्वरि कले! कालक्षये शूलिनि!
त्वत्पाद प्रणतानऽनन्य मनसः पर्याकुलान्पा-
हिनः॥१॥

ہی دیوی چھکھ ژٕ ترٕمبکہ پتنی
ژٕیے ونان سنتی ژٕے پاروتی
ترٕیلوکی ہنٛز ماتا بھگوتی
ژٕے ور دِوان ژٕے چھکھ مرڈانی
ژٕے ترٕپور سوندری ژٕے رودرانی
ژٕے بھیانک روٗپ ژٕے شروری
ژٕے چنڈی ژٕے ترٕشول دارانی
ژٕے کلہ کالس ناش کرانی
آے شرن ژٕ پادن وینے کیٛنہ چھتہ نتھے
دیا کرتا سہ مہ شرانہ رچھہ ژٕے

ही दीवी छुख च़ु त्रम्बकु पत्नी ,
च़ेय वनान संती च़ुय पारवंती ।
त्रेयलूकी हुन्ज़ माता भगवंती,
च़ुय वर दिवान च़ुय छुख मृडांनी ।
च़ुय त्रुपोर सोन्दरी च़ुय रोंदरांनी,
च़ुय भयानक रूप च़ुय शर्वरी ।
च़ुय चंण्डी च़ुय त्रशूल दारांनी ,
च़ुय कलि कालस नाश करांनी ।

आय शरण चे पादन ब्यनुकिन्य चे [illegible]थुस,
ब्याकोलतायि मन्ज़ [illegible] ॥
उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक्त मूर्छा इव,
प्राप्त प्रौढमदा इवाऽतिविरह ग्रस्ता इवाऽता इव।
ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्यक्तोपाधि विवृद्ध राग मनसो ध्यायन्ति वामभ्रुवः
॥२॥

مشراوہ تہ پرٲنہٕ سوٗس زہر کنی مۄرچھتھ لشہٕ سوٗس
دپہٕ سٕن ژٕلی ژہتی چاپہٕ اَرژٕرٕ ستوٗس
ہی ہمالہٕ پُتری یم کرٕن چون دیان
تِم آستہٕ وُنی چھِ ستھا ماگیہ وان
اَرچھ رٕژھ ایکاگر بنتھ او پادِ روٗس
راگہٕ سوٗس لشتہٕ ہے دیان چھ داران۔ ((آس شرن))

मचुराह तु प्राहु सौंस ज़हर् क्रिन्य मूर्छित नशि सोंस,
विरहन चेंद्यमुत्य चानि ओरज़र, सोंस ।
ही हिमालु पुत्री यिम करन चोन ध्यान,
तिम आस, वुन्य छि स्यठा भागवान ।
अछु रछु एकाग्र बनिथ उपाधि रोंस,
रागु सोंस तसुन्दुय ध्यान छि दारान॥ (आस शरण)

देवि!त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृत स्तं नम
न्त्याऽजन्म स्फुरदङ्घ्रिपीठ विलुठत्कोटीर
कोटिच्छटाः
यस्त्वासऽर्चति सोच्र्यते सुरगुणैः यः स्तौति
न स्तूयते,
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्ति विधुरा ध्या
यन्ति सिद्धाङ्गनाः॥३

یُس پورُش اَکہ لٹہِ کرِ ژےٚ کُن پرنام
تَس تَنز کھڑاوِ پیٹھ راز مُکٹ ڈُلوان
یُس پورُش لولہ کنی کرِ چانی پوٗزا
تَس پورُشس پوٗزان دیوکھل
یُس پورُش کرِان آسہِ چانی توٗتا
دیوتا تَس تنزِ اَستوتی کران
یُس پورُش منہ کنی کرِ چونے دیان
سوٗرگچہِ اپٕچھرژ تَس چھِ پوٗزان۔ ((۳))

युस पोरुश अकि लटि करि चे कुन प्रणाम,
तसुन्ज़ि खड़ावि प्यठ राज़ मुकट डुलवान।

युस पो़रुष लो़लु सान करि चांनि पूज़ा,
तस पो़रुषस पूज़ान दीवु खिल ।
युस पो़रुष करान आसि चांनी तो़ता,
दीवता तसुन्ज़य अस्तोती करान ।
युस पो़रुष मनु किन्य करि चोनुय ध्यान,
सोरगुकि अछ़ु रछ़ु तस छि सुमरान ॥ ३॥
(आय शरण०)

--०--

ध्यायन्ति ये क्षणमऽपि त्रिपुरे ! हृदि त्वां,
लावण्य यौवन घनैरऽपि विप्रयुक्ता: ।
ते विस्फुरन्ति ललितायत लोचनानां,
चित्तैकभित्ति लिखित प्रतिमा: पुमांस: ॥४॥

ہی ترٕپور سٕنٛدری یُس کرِ دِیان چون
منٛز شَس اَکی سے کھینہٕ ماترَس
لوٚد وٕسے شہ آسی سُنٛدر تاپہٕ رُوس
بیٚنیہٕ جوآنی رُوس پیٚنیہٕ نبر دن
اَشٕنہٕ سٕنٛدی لَس مَنٛز لبہٕ سپُھ
شکلہٕ کھٕنٛن لَشُدٕ سے دیان سورن
((۴)) (آے شرن)

ही त्रेपोर् सौन्दरी युस करि ध्यान चोन,
मञ़ मनस अंकिसुय क्षणुमात्रस ।
यौदवय सु आसी सौन्दरतायि रौस,
बैयि जवानी रौस बैयि न्यरधन ।
अष्ट्र सैंदी तस मनुचे लबि प्यठ,
शकलु खनन सुय ध्यान सोरन ॥4॥
((आस शरम०))

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाल्यस्याङ्ग-
मङ्गैर्निजैः ;
किं वाऽमुं निभृतान्यऽभेन सहसा किं
वैकताभाऽभ्ये !
तस्येत्थं विवशो विकल्पघटना कूतेन योषिज्जनः
किं तदन्न करोति देवि! हृदये यस्य त्वमाऽऽवर्तसे।
((५))

[illegible]

بے روک پأٹھۍ آدِین سَپَدان
سَنسارَس منٛز کیاہ چھ دوٗلب تَس
ہردیس منٛز ییٚس ژٕ پانہٕ پھیران۔ (۵)

यिथिस पोरुषस कर्हा प्रवेश नज़री सूत्य,
अच्हा अन्यसुन्धन वुस्तुखानन ।
कथा सना न्यन्गुलिथ गछ्ना अमिस सूत्य,
कुनि किन्य पानस सूत्य रछहन ॥
अछ रछ सोन्दर गरि गरि तस कुन,
बे रोक पांठ्य आदीन सपदन ॥।
संसारस मंज़ क्या छु दोलब तस,
हृदयस मंज़ यस चु पानु फेरन ॥॥(5)
(आदि शरण)

—०—

विश्वव्यापिनि! युद्ववीश्वर इति स्थाणावऽनन्या-ऽऽश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि! त्वय्येव तथ्य-स्थितिः॥
इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमा क्षुद्रा रुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानऽपि न क्षिणोषि च रुषा तद्देवि चित्रं महत् ॥६॥

ہی زَگتہٕ وِیاپنی یُتھ شِونا کُھس
الِشرناوِ زَگتس منٛز وَنان

تتھے پاٹھۍ ماج بوانی ژے جگتس منز
شکتی ہند ناو چھے ژے شوبان
یودوے ایشر بکھتین سمسارس منز
ماج کُنہ کُنہ دوکھ چھُ دیوان
آشر چھُ ماج چون کرودس پیٹھ تہ چھکھنہ
پننین بکھتین دوکھ ژ ہاوان ۔ ((۶))
((آے شرن))

ही ज़गथ व्यापिनी युथ शेवु नाथस,
ईश्वरु नाव ज़गतस मन्ज़ बनान ।
तिथय पांठ्य मांज बवांन्य छुय ज़गतस मंज़,
शक्ती हुन्द नाव छुय च़े शूबान ॥
योदवय ईश्वर बख्त्यन सम्सारस मंज़,
मांज कुनि कुनि दोख छु दीवान ॥।
आश्चर छु मांज चोन क्रूदस प्यठ तिछखनु,
पनुन्य बखत्यन दोख छु हावान ॥॥ 6 ॥॥
-(आ'यशरण०)-

—o—

इन्दोर्मध्यमतां मृगाङ्क: सदृशच्छायां मनोहारिणीं
पाण्डूत्फुल्लसरोरुहासन गतां स्निग्ध प्रदीपच्छविम्।
वर्षन्तीमऽमृतं भवानि! भवतीं ध्यायन्ति ये देहिन-

स्तैर्निर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झति तान्दूरतः ॥(७)॥

ژٔندٕرمَس ہِش صَفا ژٔندٕرمہٕ گَہہ سوٗس
پھوٗلی منِتس پمپوشس سِیٹھ ژٕے
خوش یوٗنہٕ پرٕکاشہٕ گَہہ سوٗس ژٕ آسوٗنی
یوٗسہٕ کَران وَرشُن اَمرِیتہٕ کُے
یِم یہٕ دیان کَران تِم بِمارٕ رَوٗس روزان
آپدا چھہٕ تِمنٕے دوٗر سپدان ((۷))
(آسےشرن)

चं़न्दरमस हिश सफा चं़न्दरमु गह सोंस,
फोंल्य मुतिस पम्पोशस प्यठ च़ुय ।
खोशि यिवनि प्रकाशि गह सोंस चु आसुवुन्य,
योसु करान वरशुन अमरयतु कुय ॥
यिम यि ध्यान करान तिम ब्यमारि रौस रोज़ान,
आवदा छि तिमनुय दूर सपदान ॥(7)॥ (आयशरब)

पूर्णेन्दोः शकलै रिवार्त्तिवहुलैः पीयूषपूरैरिव,
क्षीराब्धेर्लहरीभरैरिव सुधा पङ्कस्य पिण्डैरिव ।
प्रालेयैरिव निर्मितं वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया,
चित्तान्तर्निहितार्त्तिताप विपदस्ते सम्पदं बिभ्रति ॥(८)॥

پُنِم ژٔنٛدرمہ زٔن امرِتہٕ پرٛواہ زٔن
گژھہٕ پینٛڈ کھیٖر سوٚدرچ لہر زٔن
شٕنِس ہیوٚ صفا چون سوٚروٗپ بناوِتھ
یُس کٔر دیان تنہٕ منہٕ لولہٕ کِنہٕ
تٔس چھِ دوٗر گژھان دوکھ آرتہٕ آپدا
سمپداسہٕ پراوان زنمہٕ زنمن ((۸))
((آے شرن))

पुनिम चन्द्रमु ज़न अमरथ्स प्रवाह ज़न,
गछ पिण्ड क्षीर सोंदरुच लेहर ज़न।
शीनस ह्युव सफा चोन सोंरूप बनाविथ,
युस कॉरि ध्यान तनु मनु लोलु किन्य॥
तस छि दूर गछान दोख आरथ त आपदा,
सम्पदा सु प्रावान ज़न्मु ज़न्मन ॥८॥
(आय शरण)

ये [illegible] हरन्ति तरलां सहसो कुमारीं,
त्वां [illegible] पङ्कजाभिदं तरुणार्क शोभाम्।
[illegible] बहुलरागिणि मञ्जयन्ति,
[illegible] जगद्भाति चेतसि तान्नुगाढ्य ॥९॥

یُس سادک کرِ دیان چون باسہ وُن
زَلزَل پرکاشہ سوّس بجلی سمان
پانژہ دل ژٹی چھے بال سِتری یہ شدی پاٹھو
ووزلہ رنگہ سوّستے زَن ژمکان
رنگ سوّدرس منز پھوٹمت سوّرے
زگتھ زَن رنگہ کی ستہ سدھی سان
یُس یہ دیان کرِ تس یوگنی زہ تس منز
تسندُے گرِ گرِ دیان چھہ داران (۹)
(آے شرن)

युस सादुक करि ध्यान चोन बासवुन,
ज़ल्ज़ल प्रकाशि सौस बिजली समान।
पांछु दल चंट्यथुय बाल सिर्यायि संध्य पाठ्य,
वोज़ल्लि रंग सौंस्तुय ज़न चमकान॥
रंग सौंदरस मन्ज़ फोटमुत सोरुय
ज़गथ ज़न रंगु किन्य सौरली सान,
युस यि ध्यान करि तस योगिनी ज़्यतस मंज़,
तस्-दुय गरि गरि ध्यान छि दारान॥९॥
—०— (आय शरण॥)

लाक्षारसस्नापित पङ्कजतन्तु तन्वी,
मऽन्तः स्मरत्यऽनुदिनं भवतीं भवानी।
यस्तं स्मर प्रतिममऽप्रतिमस्वरूपा,
नेत्रोत्पलैर्मृगदृशो भृशमऽर्चयन्ति ॥१०॥

لاچھ ستّی رنگی متھ پمپوشہ تارہ ہیو،
پرتھ دوہہ یُس دارِ چونُے دیان
تس کامدیو زانتھ کمہ یوگنی،
نیترہ روپہ پوشو چھ پوزا کران ۔ (۱۰)
((آیہ شرن))

लाछि सत्य रंग्य मुति पम्पोशि तारि ह्युव,
प्रथ दोहे युस दारि चोनुय ध्यान।
तस कामदीव ज़ांनिथ कमु यूगिनी,
नैत्रु रूपु पोशव छि पूज़ा करान ॥ १० ॥
(आय शरण०)

—०—

स्तुमस्त्वाँ वाच्यमऽव्यक्तां,
हिमकुन्देन्दुरोचिषम।
कदम्ब मालां विभ्राणा—
माऽऽपादतललम्बिनीम् ॥ ११ ॥

توتا کران تھی اسی ژُے واکھ دیوی
ژندرمس کوند پوشس ہش یوسہ چھے دفتاں
شوبہ ونی کد سہ مال تاج چھکہ ژ دار ونی
تالی چھے ژ شیر سیٹھ پادن تانی ۔۔۔۔
(آے شرن)

तोता करान छी अंस्य छै वाखदीवी,
च़न्दरमस कोन्दु पोशस हिश योस छै दिफ्तिमान ।
शबुवुन्य कदरवु माल मांज छख छ़ दारवुन्य
तोल्य छय छै शेरु प्यठ पादन तांन्य ।...
—०— (आयशारम)

मुहुर्नीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डुत्विषं
वर्षन्तीममृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपि रिन्द्रोऽथ च।
अचिक्कनाच मनोहरा च ललिता चाऽपि प्रसन्नाऽपि च
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते! वाक्सर्वतो वल्गति ॥
॥ ९२ ॥

کلس پیٹھ شوبہ ون ژندرمہ ژے ورانت
پمپوشس پیٹھ ژ دِنتی سوُستس

تِمَن چھِکھ تہٕ شِوٕ بٕ وَنی ثربہٕ رِٹدٕرس مۄنٛز
اَمرٕ تہٕ ژُھٹان بَڈ شِوٕ بایہٕ سوٗس
یُس یہٕ دیان کَر چوٗن ہی دیوی لَس
سرسوتی نیر مۄکھ بَڈ وِکاسہٕ سوٗس (۱۱۳)
(آے شرن)

कलस प्यठ चॆन्द्रस शूब्वुन चे स्नातु,
पन्पोशास प्यठ चु दिवती सोंस ।
बिहिथ छख चु शूबवुन्य ब्रह्म रौन्दरस
अमरथ छुटान बडि शूचायि सोंस ॥
युस यि ध्यान करि चोनै ही दीवी तस
सरस्वती नेरि मोखु बडि व्यकासु सोंस
-(आय शरण) (११

दत्तानीष्टानभोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति वि
दहत्याधीन व्याधीन्शमयति सुखानि प्रत
हटादऽन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टि बिरहं,
सकृदुध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कर
مطلب چھکھ دوان دشمنن ژگلان
آسہٕ تَین چھکھ تہٕ ناشہٕ کران (۱۱

آدِین زالان ویادِین شومراوان
سوکھ تہ سمپدا چھکھ ژ ویستاران
اندرِم دوکھ تہ دادِ پریہ وِرہ ژ گالان
یم اکہ لٹہ ماج دیان چون کران
تم ادکمہ نیا پہ نشہ چھی مو کلان
یم اکہ لٹہ ماج دیان چون کران۔ رسول
(آے شرن)

मतलब छुख दिवान दुश्मनन ज़ु गालान,
आपदायन छुख ज़ु नाश करान।
आदियन ज़ालान व्यादियन शोमुरावान,
सोख तु सम्पदा छुख ज़ु व्यस्तारान।
अन्दरिम दोख तु दाद्य प्रेयि विरह ज़ु गालान,
यिम अकि लटि मांज ध्यान चोन करान।
तिम अद कमि नु पापु निशि छी मोकलान,
यिम अकि लटि मांज ध्यान चोन करान।
—०— (आयशरन) ((13))

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते नित्तय
त्यत्वेति निचयते कलयति स्तौत्या श्रयत्यर्चति।

यश्च त्र्यम्बकवल्लभे ! तव गुणानाऽकर्णयेत्यादरा-
त्तस्य श्रीमं गृहाद्दैति विजयस्त्वयाग्रतो-
धावति ॥२४॥

یُس چون کرِ سُمرن بوز ستی یُس زانہ
وِدیا یہ کِنی ماج یُس ژےٚ پراوی
شُدھ مَنہ کِنی زپہ ناو چون گرِ گرِ
لولہ نیترو ستی کرِ درشن
شرون کِنی منن کِنی یُس وِچارِ
ہری وتہ توتا یہ کرِ جانی بنیو زا *
گون کیو چانی لولہ سان دین تہ راتھ
تمہ سُند ستھ لچھمی روزِ اکھ ساتھ
لچھمی چےٚ تمہ سُند گرِ نیران
لسےٚ تس پتہ کتھ وقتہ بروٚنہہ کنہ دوران
((۲۴)) ۔ [(آسہ شرن)]

युस चोन करि सुमरन बोज़ सत्य युस ज़ानि,
विद्याधि किन्य मांज युस च़्रै प्रावी ।
शोदि मनु किन्य ज़पि नाव चोन गरि गरि,
लोलु नेत्रव सत्य करि दर्शुन ।
श्रवणु किन्य मननु किन्य युस व्यचारि,

हर वक्तु तोताय्‌ि चोन्य बौयि पूज़ा ।
गोम गौवि चांनी तोलु सान छ्यन तु राध ।
लखि रौस्तुय छुस नु रौज़ि अखसाय ।
लक्ष्मी छनु तसुन्द्‌ि गरि निशिनेरान,
ज़ुव तस प्रथ वक्तु म्रौन्ह छु दोरान ॥१५॥
(आयशारा)

किं किं दुःखं दनुजदलिनि! क्षीयते न स्मृतायां,
का का कीर्तिः कुलकमलिनि! ख्याप्यते न स्तुतायाम् ।
का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यते नार्चितायां,
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम् ॥
(१५)

کم سِتا دُکھ چھ تم ہی دوکھن گالہ وُنی
یم گُلہ نے نہ جانہ ستمر نہ ستی
کوسہ چھ نیک نامی ہی کولس کھالہ وِنی
یوسہ نہ تنہ جانے لو تابہ ستی
کوسہ کوسہ چھ سِدی ہا ہی ستیہ دارتی
یوسہ نہ آفت سید جانہ لو زابہ ستی
کم تم چھ تم یوگ ہا نہ لگت اَتھا !!!
یم نہ سید نتی جانہ تہ شتہ ستی ((۱۵))
(آےسشرن)

कम सना दो॒ख छि लिम, ही दो॒खन गालुवुनि,
यिम गलुनय नु चानि सुमरनि सूत्य ।
को॒सु छि नेक नामी ही को॒लस खारुवुनि,
यो॒सु नु बनि चाने तो॒ताथि सूत्य ।
को॒सु को॒सु छि सेंदी ही सेंदी दाञ्जी,
यो॒सु नु प्राप्त सपदि चानि पूज़ायि सूत्य ।
कम कम छि लिम योग ही ज़गत अम्बा,
यिम नु स्यद बनन चानि च़्यनतनु सूत्य ॥
(आय शरणी)(१०)

—०—

ये देवि! दुर्धरकृतान्त मुखान्तरस्थाः,
ये कालि! कालघन पाश नितान्त बद्धाः ।
ये चण्डि! चण्ड गुरु कलमष सिन्धु मग्ना
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥२६॥

ہی دیوی یم مہا کالہ سندی کھٹنس
موکھس منز بأگ گژھتی
ہی کالی یم مہا کالہ سنز منز
رز ژوٗر یا گھٹ چھہ گنڈنہ آمتی
ہی چنڈی یم بار ریک تہ کھٹنس
پاپن سمندرس منز چھ کھنتی متی

یِلہ کرِن دِیان چون تیلہ چھکھ رچھان
تِمن موکلاوان بییہ تاران ژُے ۔(۱۶)
(آے شرن)

ही दीवी यिम महाकाल सुन्दिसयकठिनिस,
मोखस मन्ज़ बाग गंमुत्य ।
ही काली यिम महाकालु सुन्ज़ि मोचि,
रज़ि चुरि पांठ्य छि गन्डनु आमुत्य ।
ही चण्डी यिम बारीक तु कठिनिस,
पापुकिस समन्दरस मन्ज़ छि फंर्यमुत्य ।
येलि करन द्यान चोन तेलि छुख रछान,
तिमन मोकलावान बेयि तारान चुय ।
—०— (आय शरण) ॥१६॥

लक्ष्मी वशी करणचर्ण सहोदराणी,
तत्पाद पङ्कजरजांसि चिरं जयन्ति ।
यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे,
लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुरक्षराणि ॥
॥२७॥

ماج بوان لچھمی وشی کرِنس سیتھ

پادٕچ گرد چانٛنی چھ تاقتہ سوٗس
چانہِ پرٛنامہ وِزِ لگہِ یمن للاٚس
پادٕچ گرد چانٛنی بڈٕ نِشانہ سوٗس
سوے پادٕچ گرد گالہِ دوٗر اٚکھیر لَس
زگتس منٛز بنہِ سہٕ جےٚ کارٕ سوٗس (۱۷)
(آیہِ ستٕرن)

मांज़ चान्य लछमी वश करनस प्यठ
पादुच गर्द चान्य ताकुत सोंस।
चानि प्रणामु विज़ि लगि यिमन लल
पादुच गर्द चान्य बडि निशानु सोंस।
सोय पादुच गर्द गालि दोर साफ़र तस
ज़गतस मंज़ बनि सु जयकार सोंस॥

—०—

(ऑश शुरण

रे मूढाः! किमऽयं वृथैव तपसा काय:
परिक्लिश्यते
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्ती क्रिय
गृहाः।
भक्तिश्चेदऽविनाशिनी भगवती पादद्वयं
...

मुक्तिद्धाम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मी:
पुरो धावते ॥१८॥

ہی موڑ کیاز چھکھ بے فایدٕ تیہ کِنۍ
پَنٕنِس شریرس تکلیف دِوان
یِگنہٕ کِنۍ دانہٕ کِنۍ بجہ دَکھنایہ کِنۍ
کیاز چھکھ گرٕ پَنُن خالی کران
گژھ شرن آجہ شارکایہ پراو بکھتی
ہے کرُن تَسنٛدے پادٕ سیون
اَدٕ پھولِ مُکتہٕ پمپوشہ نیترٕ سۄس
گژھی پرونٛد پرٛوٚنٛد ہیٚی دوُرن - (۱۸)
(آسے شرن)

ही मूडु क्याज़ि छुख बे फायदु तनु किन्य,
पनुनिस शरीरस तकलीफ दिवान ।
यज्ञ किन्य, दानु किन्य, ब्जि दखिनायि किन्य,
क्याज़ि छुख गरु पनुन खाली करान ।
गछ़ शरण तु माजि शारिकायि प्राव बखती,
हे करुन तसुन्दुय पादि सेवन ।
अदु फौलि मुक्ति पम्पोशि नेत्रव सोस,

लक्ष्मी ब्रोंठ ब्रोंठ हे यी दोरुण ॥१८॥

—०— —(आय शरण०)

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि,
सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्यः ।
श्लक्ष्णं वसे मधुरमद्मि भजे वरस्त्री-,
देवि ! हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ॥१९॥

کأنْسہ منگہ نہ ینہ کأنْسہ تارنہ بآزو
عارتہٕ تراوٕ کرنہ کأنْسہ سیوا
وآوِلی وستر دارہ کھسمہ موڈری چیز
اَژھ رژھ نے شٔنی کرکھیلا
پیالہ ماج لوآنی ہردِیس منز میٔے روزکھ
تیلہ مشان کامنا یہ ستید سندن ((۱۹))
(آیہ شرن)

कांसि मंगुनु बैयि कांसि तार नु बोज़्य,
आरुज़र त्राव करनु कांसि सेवा।
ज़ाविल्य वस्तुर दार रुव्यमु मौदुर्य चीज़,
अछु रछ़ुनुय सूत्य कर खेला।

यैलि सांज ववांन्य हृदयस मंज़ में रोज़ख,
तैलि स्यानि कामुनायि स्यद सपदन ॥19॥
—o— (आय शरण०)

शब्द ब्रह्ममयि! स्वेच्छे! देवि! त्रिपुर सुन्दरि,
यथा शक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरी ॥२०॥

ہی شبد رُوپی نیرمل سوٗروٗپی
ہی دیوی ہی تِرپور سوندری
کر یتھا شکتی میٚ چانٛی پوزا
(۲۰) - کر سویکار ہی پرمیشوری
(آے شرن)

ही शब्द रूपी न्यरमल स्वरूपी,
ही दीवी ही त्रिपोर सोन्दरी।
कर यथा शक्ती में चान्य पूजा,
कर स्वीकार ही परमीश्वरी ॥२०॥
—o— (आय शरण०)

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः,
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ॥२१॥

روٗزِن تَن سوٗکھی مٲج سادک ساری

یِم دوشٹ آسن تم گٔلۍ تن
شِو رُوپ اَوستھا منٛز تِ مانٛز بٔنۍ تن
گور دیو سدا منٛز پٮ۪ٹھ پرسن رٕژ تن (۱۲)
(آیٚ شرن)

रुज़्यतन सोंखी मांज सादक सारी,
यि म दोष्ट आसन तिम गल्य तन।
शिवरूप अवस्था मैं ति मांज बेन्य तन,
गोर दीव सदा मैं प्यठ प्रसन्न रुज़्यतन ॥१२॥
(आयशरण)

—•—

दर्शनात्पापशमनी जपान्मृत्यु विनाशनी।
पूजिता दुःखदुर्भाग्य हरा त्रिपूर सुन्दरी ॥१३॥

چانِہ درشنہٕ پاپ ساری چھہ گلان
چانہ ژپہٕ مرتیو چھُ ناش سپدان
لوزایہ کیٚژ حیٚن مہماگیوٚنہٕ کیٚنژ
زیوٚس دوکھ تہٕ دور بٲگیہ دور شیدان - (۱۳)
(آیٚ شرن)

चानि दर्शनु पाप सारी छि गलान,
चानि ज़पु मृत्यू छु नाश सपदान।

पूज़ायि किन्य चोन महिमा स्वन
ज़ीवस दोख तु दोर बाग्य दूर सपद..॥ ॥

—०— (आयश .)

नमामि यामनी नाथलेखालङ्कृत कुन्तलाम्।
भवानी भवसन्ताप निर्वापन सुधा-नदीम्॥ ॥२२॥

نمسکار چھس کران ییمس کیشن اندر زے
تنْدرمہ پرزلان راتس دوہ
سنساہ دوکھن چھکہ نوارن زے
امرتہ ندی نشہ پرواہہ سنتیٔ زن
(آے شرن)

नमस्कार छुस करान यैमिस केशस मंज़
चंन्दरमु प्रज़लान रात्रो द्यन॥
संन्सार दोखन कुस न्यवारान चुय
अमरयतु नदी हुन्द प्रवाह सूर्य
=०= (आय शरण)

मन्त्र हीनं क्रिया हीनं विधिहीनं च यद्गतम्।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि॥
॥२३॥

منتر ہین آسنہ کرِیا ہین آسنہ
ودِی ہین آسنہ یہ کینژھا پرووم

تتھ سارے ہی پرمیشوری ، ونی
ژے کرٚپایہ کیتی عارتس منز آچھ بخشتھ (۲۴)
(آدیشٹرن)

मन्त्र हीन आंसिथ, क्रियाहीन आंसिथ ।
बिदि हीन आंसिथ, यि केंछा प्रोवुम ॥
तथ सारिसय ही परमीश्वरी ।
चुय कृपायि किन्य आंरतिस मे मांज
आय शरण चैं पादन विनदि [illegible] लखशुम
थाके लुतायि मंज़ु असि रछतु, चुय ॥(24)

ॐ

अथ अम्बास्तव

(चौथा स्तव)

ॐ नमो जगदम्बिकायै ।

ॐ यामाऽऽमनन्ति मुनयः प्रकृतिं पराणीं,
विद्येति यां श्रुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
तामऽर्धं पल्लवितशंकर रूप मुद्रां,
देवीमऽनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये ॥ १॥

یُس مُنیشر آدِ پرکرتی مانان ،
یُس وَنان وِدیا وید رَہسیہ زانہٕ وُنی
تُس شِو ناتھٕ سٕتٕر اَردانگی یُوسہٕ
شوبایہ سُوس زَگتس چھِ رَچھِ وُنی
تُس آمُت بہٕ ایکاگر زٕچھ بنِتھ
چھُس پیوان تُس پادَن پیٹھ پَرن ۔ (۱)

यस मुनीश्वर आदि प्रकृती मानान,
यस वनान विद्या वेद रहस्य ज़ानुवुन।
तस शिवनाथु सन्ज़ अर्धाङ्गी योस,
शूबायि यौस ज़गतस छि रछिवुन्य ॥
तस आमुत बे एकागर च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान तस पादन प्यठ परन ॥1॥

—०—

अम्ब! स्तवेषु तव तावद्ऽकर्तृकाणि-
कुण्ठी भवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि।
डिम्भस्य मे स्तुतिरऽसावऽसमञ्जसाऽपि-
वात्सल्य निघ्न हृदयां भवतीं धिनोति॥
- (२)

ہی ماتا چانۍ توتا کرنس پیٹھ
برہما وانۍ تہ جڈ بنانۍ
مے شُرۍ سنز یہ توتا یود چھ ٹوٹھ پھٹیے۔
باوناہ یِر کِنۍ ہردیس ژ سوکھ دِوانۍ۔ (۲)

ही माता चांन्य तोता करनस प्यठ,
ब्रह्मा वांनी ति जड़ बनांनी।
मे शुर्यसुन्ज़ यि तोता योद छि टोठ फुट्य,
बावुनायि किन्य हृदयस चु सोख दिवांनी॥
(२)

ओमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुरेखा,
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति।
निष्यन्दमान सुखबोध सुधा स्वरूपा,
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम॥३॥

چھ اکا شہ روپہ کِنۍ ناد بِنٛد روپہ کِنۍ
ژنٛدرمہ کلا ہش چمکانہ ژ پرزلان
واگی بھوتہ شبد روپا چون چھ ... ون
سوکھ تہ گیان امرتھ ژ بیٚنس بران
چمکان چھیکھ تس منز ... ژ ویسنے
ژ گژھتس منز ... باگیہ وان۔ (۳)

चिदाकाश रूप किन्य नाद बिन्दुरूपु किन्य,
चंन्दरसु कला हिश छुख चु प्रज़लान ।
वांणी हुन्द शब्द रूप चोन छु आसवुन,
सोरव तु ज्ञान असरस्थतु चैय निश नेरान॥
चमकान छुख तस मंज़ मनस चु पानय,
ज़गतस मन्ज़ आसि सुस बाग्यवान ॥३॥

आविर्भवत्पुलक संततिभिः शरीरे-
र्निष्यन्दमान सलिलैर्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपासते ये,
पादौ तवाम्ब! भुवनेषु त एव धन्याः॥४॥

آسُن لُسن لِم وو چھونُ شرین
اوش آسِس تیُتھ زِ نیران
پانٕی ژھ پَیر گژھ گژھ
پادن تَرِ آسی لُو زا گراں
نِش تُہ گژِھن تَتھ چھہ تربلوکی منز
ترُن بونُن منز چھہ با گیہ وان (۴)

आसन तस रून बोधुवनि शरीरस,
ओश आरुयस नैत्रव नेरान ।

वांगी किन्य पद परि गित्य गंह्य गंह्य,
पादन चेै आसि युस पूज़ा करान ।
तस छुव कुस सना कु त्रैयलूकी मन्ज़,
त्रेन बचुनन मन्ज़ सुय छु बाग्यवान ॥५॥

वक्त्रं यदुद्यतमऽभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदऽपि देवि! शिरः करोति।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमऽम्ब! तानि
कस्याऽपि कैरऽपि भवन्ति तपोविशेषैः॥५॥

سوکھ لیس آسہ وُدلوگ سترس
یِہ ماج چانی لوٗتاکرلس پیٹھ
شرلیش لسے آسہ گرٔہی ماج !
ژیٚے کُن نمسکار کرٔنس پیٹھ
عَن لیٚس لوٗگمُت آسہ ماج ژیٚے کُن
شُرن کرٔ حیُن راتس روٗد
آسہ کانٛہہ تہٕ باگیہ وان کُمہ تانی خاص تہٕ
پوٚنہٕ کنی روزِ گرگرٔ ژیٚے شرن (۵)

शेख यस आसिव कुथुग सौस ही मांज,
चान्य तोता करनस प्यठ ।
शेर यस्कुद्युक आसि गरि गरि ही मांज,
चैंय कुन नमस्कार करनस प्यठ ॥
मन यस लौगमुत आसि मांज चेंय कुन,
सुमरन करि चोन रात्रो द्यन ।
आसि कांह सु भाग्यवान कति तान्य खास तर्फ़े,
पोषि तिम्य रोज़ि गरि गरि चैंय करान ॥
(5)

—०—

मूलालवाल कुहरादुदिता भवानि !
निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडिल्लतेव ।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु-
निःष्यन्दमान परमाऽमृत तोय रूपा॥६॥

سۄلا دارٕ لشہِ دٕرا منز کرِتھ پھیوٗش ژٕ نِتھ
بجلی ہشہ دۍ پأشی ہیوٗرکن کھسان
سہسر ڈلہ سۍ منز أدِتھ تۄر نیران
امرتہٕ وأنۍ رۄوپہٕ لبون چھہٕ واتان
(٦) —

मूलादार निशि द्रासुच थंर शैं पम्पोशाचंरिथ
बिजली हुन्द्य पांठ्य ह्योर कुन खसान।
संहस्र डलसुय मंज़ अंचिथ सोर नेरान,
असरातु वान्य रूपु बोन वैचि कि वसान॥ (६)

—०—

दग्धं यदा मदनमेकमनेकधा ते,
मुग्धः कटाक्ष विधिरङ्कुरयां चकार।
धत्ते तदा प्रभृति देवि! ललाटनेत्रं,
सत्यं ह्रियेव मुकुलीकृतमिन्दुमौलिः॥७॥

ییٚلہٕ زٕل کامدیو اَکھ ژیو ناشِس
اَکہِ کٕٹا کِھ تِتھی کٔرتھ دوٚیِم پٲدٕ کھ
تَنہٕ سٕتی مہادیو نٔش نٕیرِ تھ
(۸) - تُرم ژٕ اُوڈے نیتھر چھُ تراوِتھ

येलि ज़ोल कामदीव अख शीव नाथन,
कुं कटाक्षि तिथ्य कृत्य वोपदोविथ।
तमि प्यठ महादीव मंज़ ललाटुक नेथुर
... न्य ओडुय नेथुर छु मुचुरावि... (७)

—०—

अज्ञात संभवमनाकलिताऽन्ववायं,
भिक्षुं कपालिनमवास समद्वितीयम्।
पूर्वं करग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ॥ ८॥

تہٕ زانِتھ ژٕ زٔمِس کوٗلہٕ سوس بِکٕھیُو
نَنگےٚ تہٕ دوٚیِمہٕ روٗس کپٲلہٕ مال
چانہِ وِوائہٕ برٛونٛہہ ہِمالہٕ پۄتری
کُس اوس زانان شیوس سُند حال ((۸))

नज़ांन्यमुति ज़न्म युस कोलु सौस बिछु,
नन्गय त, द्वोयमि रोस क्रुनिथ कलुमाल।
चानि व्यवाहु ब्रोंठ ही हिमालु पुत्री,
कुस ओस ज़ानान शीवु सुन्द हाल ॥
((८))

—०—

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च,
भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ।
वेतालसंहति परिग्रहता च शम्भोः,
शोभां बिभर्ति गिरिजे! तव सहचर्यात्॥
(९)

چرم پوشاک شمشان بسنا ملتھ
نژران شمشانن سُہ بیکھ منگوُن
بوُت کھِلہٕ پرِوار آسہٕ وُن تس شِوس
شوبان تیلہٕ ییلہٕ زیٚیہ سٟتۍ کُپکوُن (۹)

चर्म पोशाक शुमशान बस्ना मंलिथ,
नज़्रान शुमशानन सु बीख़ मन्गुवुन।
बूत खिलु परिवार आसुवुन तस शिवस,
शूबान तेलि येलि ज़ेय स्त्य कुपकुवुन॥ (९)

कल्पोपसंहरण केलिषु पण्डितानि,
चण्डानि खण्डपरिशोरऽपि ताण्डवानि।
आलोकनेन तव कोमलितानि मातः,
लस्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै॥१०॥

کلپانتک ناش نژرناہ تہٕ گنستاہ
تس ہنا دیوت زہٕ کہٕ بڈٕ گرسنا
وُچھے نیٚدلان سمپداین مہنز
پیالہ تراوان زٕ تہٕ شوب لگان (۱۰)

कल्पान्तुक नाश नबुनाह तु गिन्दुनाह,
तस महादीवु संज़ क्रि वंद क्रीड़ा
सोरुय सु बदुलान सम्पदायन मंज़,
येलि त्रावान तथ चु शोब नज़राह ॥
—(१०)

जन्तोरपश्चिमतनोः सतिकर्मसाम्ये,
निःशेष पाश पटलच्छिदुरा निमेषात्।
कल्याणि! दैशिक कटाक्ष समाश्रयेण,
कारुण्यतो भवसि शाम्भव वेद दीक्षा ॥११॥

زیوس کرس سیٚدی شوٗدی
اَلہِ پیٚٹھ یِ کیا اَلے سپُن تَس تِ گالان
ژےٚ دَیہ یِ کیا ژٕ یِ ژٕ گور روٗپ بنیِتھ تَس
شِو شکٔتی دیکشا وو پدیش کران۔

(११) जीवस कर्मन सपदिथ शोदी,
अकि निमीशि फांसि समूह तस कु गालान,
त्रय दुख दयायि किन्य गोर रूप बनिथ तस,
शिवशक्ती दीक्षा वोपदीश करान ॥११॥

मुक्ता विभूषणवती नवविद्रुमाभा,
याच्येतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या।
एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणां,
कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥२२॥

موختہ مالہ زیور روٗد پالہ ژھنۍ ژھنۍ
آسوی چھکھ ژہ آج ستۍ باسان ٭
یُس پورُش آسہ سندیا تار کو سُس
چون سوٗروپ یُتھ شُبہٕ لس باسان
تس پورشس ترِبوٗنچِ یوگنیہ
پانژ کانہٕ روٗستی کامدیوٗ سمران ۔(۱۲)

मोरुतु मालु ज़ेवर रौद्र, मालु छुन्य छुन्य,
आसुवुन्य छस चु मांज शूबायिमान।
युस पोरुष आसि सन्ध्या तार कव सोस,
चोन सोरूप युथ छ्यव तस बासान,
तस पोरुशस त्रिबवैनुचि युगिनीयि,
पांचि कानि रौस्ती कामदीव सुमरान॥

—o—

-(१२)-

ये भावयन्त्यऽमृतवाहिभि रंशुजालै-
राप्यायमान भुवनामऽमृतेश्वरी त्वाम्।
ते लङ्घयन्ति ननु मातरऽलङ्घनीयां,
ब्रह्मादिभिः सुर वरैरऽपि कालकक्षाम्॥१३॥

ہی ماتا یِم ژٕے سوٗرٕ وٕنی آسَن
اَمرِتہٕ رُوپہٕ سوکھ دِوان ترٕن بوٗنن
تِم کَران کالہٕ مُریادایہ اَپور
یَتھ ترٕن کَٹھیُن برہمادِکَن تہٕ دیوَن (۱۳)

ही माता यिम चे सोरबुन्य आसन,
अमरथतु रूपु सोख दिवान त्रन बवनन।
तिम करान कालु मर्यादाय अपोर,
यथ तरुन कठ्युन ब्रह्मादिकन तु दीवन॥
(१३)

—o—

यः स्फाटिकाक्ष गुण पुस्तक कुण्डिकाढ्यां,
व्याख्या समुद्यत करा शरदिन्दु शुभ्राम्।
पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते,
मातः! स विश्वकबिताकिक चक्रवर्ती॥
— (१४)

سٹکچ زپہ مال اکہ اتھ داریتھ ژ
پوستک کمنڈل بیٹھ دوٚن اتھن
ویاکھیانس پیٹھ بیاکھ اتھ کوٚلمت
ژ اندر مس پوشوزن ژٹے آسن
یُس یتھ دیان کرِ حیون ماج منز منس
کوٚیہ پُن شہد ژ کرو رتنان سُہ گژھ

सटकुच ज़पुमाल अकि अथु दारिथ च़,
पोस्तक कमंडल बैयि दोन अथन ।
व्याख्यानस प्यठ ब्याख अथु कोलमुत,
चन्दरमस ह्युव न्योपोशजन छे आसन ।
युस युथ ध्यान करि च़ोन माज मंज़ मनस,
कव्यन हुन्द चंद्रकत वनान सु ज़गतस॥
(14)

वहंतिं स युत बंबर वेणी पाशां,
गुंजावली कृतघनस्तनहारि शोभाम् ।
श्यामां प्रवाल वदनां सुकुमार हस्तां,
तामेव नौमि शबरीं शबरेश्वर जायाम्॥१२।

سوٗنہِ کیہہ ملٲلہ سوٚن تہٕ چھکیوٗ نہ کینٛہہ سوٚن چھُ
تہٕ قلہ ہار سوٚن تہٕ شوٗباییمان
چھکہ وٕتہٕ موکھ سوٚن تہٕ کومل اَدھر سوٚن تہٕ
تیٚتھی شِکار باپتھ روٗپس بہٕ پرنام کران۔
(۱۵)

मोर् पखि मुकट सौंस चु चमकुनि कोश
स्तु फलि हार्सोंस चु शुभायिमान। सौंस,
चमुकुनि मोख सौंस तु कोमल अधर सौंस
तथ्य शिकार बाथि रूपस बं प्रणाम करान्।।

—०— (15)

अधेन किं नवलता ललितेन मुग्धे,
क्रीतं विभोः परमपूर्धमिदं त्वयेति।
आलीजनस्य परिहास वचांसि मन्ये,
मन्दस्मितेन तव देवि! जडी भवन्ति॥
(१६)

ہے یا سوٗندری چھکھ زےٚ آسوٗنۍ
مَنو یِر تہٕ سوٗندر نوٗ کھسر زٕ نٔٹ
کیا زٕ پٔتھ تھقَن دولہ بیچھ ہیچھوٗ ساتی

بیش سخت بیہ کٹھور شۍ چھ آسہ وُن
وسنی ہنہ ایتھ ہاسہ پُورۍ وکن وَن
چانہ کم اَسنہ ستی مود تھۍ یم بنن (۱۶) -

ही महासौन्दरी छुख च़्य आसवुन्य,
मनोहर तु सौन्दर नेब थंर ज़ंन।
क्याज़ि होतचन मोल युथ ह्युव सामी,
युस सख्त बैयि कठोर शीवु छु आसवुन।
व्यसन हुन्दि अथ हासि पूर्वक वचन,
चानि कम असनु सृत्य मूड छि तिम बनन॥
— (16)

—०—

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलोऽयं,
मायोदधिर्विविध दुःख तरङ्ग मालः।
आश्चर्यमऽम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति,
त्वद् ध्यान सन्तति महा वड़वा मुखाग्नौ॥
(१७)

برہمانڈ ببر کِھلہ برتھ یہ مایا سودر
دوکھہ لہرو ستی برتھ آسہ وُن

آسترٕ چھےٚ آج ناشس چھو واتان
چون دیان اَتھ کیٚت چھو واڑوا اَگُن (۱۷)

ब्रह्माण्ड बुबर खिल बंरिथ यि माया सोंदुर,
क्षीरु संहरव सत्य बंरिथ आसुबुन।
आख़र छुही मोज नाशस छु वातान,
चोन ध्यान अथ क्युत छु वाडवा अंगुन।
(१७)

—०—

दाक्षायणीति कुटिलेति गुह्यारणीति,
कात्यायनीति कमलेति कलावतीति।
एका सती भगवती परमार्थतोऽपि,
संदृश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव ॥१८॥

دکھٕ بٕتری تٔرے مۆلادار واسٕنی
اُرتھ گوچھایہ منٛز چھکھ تٕ روزانی
کانٛتیائنی تٕرے لۆچھمی تٔرے سِتیٖ
چھکھ کَلاوَتی تٕرے بھگوتی
چھکھ کَرے آسٕتھ ہُ تان چھوانی
نٔتہ چھکھ ہوان بہو روٗپ نرتانی (۱۸)

दह्लि पुत्री चुय मूलाधार वासिनी,
ह्यथ गौफायि मंज़ छुख चु रोज़ानी।
कान्त्यादेवी चुय लक्ष्मीरुय बैयि,
छख कलावती चुय तु चुय भगवती॥
छुख कुनी आसिथ ही मांज भवानी,
लबनु छख यिवान लुहु रूपु नचानी॥ (१८)

—०—

आनन्द लक्षणमनाहत नाम्नि देशे,
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे।
प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं,
शंसन्ति नेत्र सलिलैः पुलकैश्च धन्याः॥
(१९)

آننٛدٕ رۄپی ہیتھ ژیکرس منٛز
نادٕ رۄپہٕ بنِتھ یَس چونے دیان
اَبیاسہٕ کِنۍ اَنتر موکھہٕ بنِتھ کنۍ
اَتھٕ سۄس کرِ دیان سُے چھُ باگیہٕ وان (۱۹)

आनन्दु रूपी ह्यथ चेकरस मन्ज़,
नादु रूपु बनि यस चोनुय ध्यान।

अभ्यासु किन्य अन्तर मोखु मनु [illegible],
अखि सोंस करि ध्यान सुय छु बा[illegible] ।
—०—
(१९)

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं,
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम् ।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनी त्वमूष्मा,
निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात्॥
—(२०)

ژے چھکھ ماج بوٲنی ژندرمس روشنی
ژے سِریس دِپتی آسان
ژے چھکھ چیتنی پورشس آسہ وٕنی
ژے پونس منز بل باسان
ژے سواد آبس اگنس شکتی
ژیٚ وس زگتس سارچھ روزان -(۲۰)

च्युय छख मांज ब्वान्य चन्द्रमस रोशनी,
च्युय सिर्ययस दिप्ती आसान ।
च्युय छख चैतन्य पोरुषस आसुवुन्य,
च्युय पवनस मन्ज़ बल बासान ॥

द पांसि

स ज़गत [illegible]

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्ति यदन्तरिक्षं,
सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च धत्ते।
यद्वाति वायुरऽनलो यददर्चिराऽस्ते,
तत्सर्वमम्ब! तव केवलमाज्ञयैव ॥ २२॥

ہی ماتا سِری یِم زُندرمہ تارکھ
آکاشس پیٹھ یِم پرکاش دِوان
شیش ناگ یُس کُل پرتھوی داران
میگھ یِم رُد زگتس تراوان
وایُو پھیران اَگُن چھُ زوان
تِم ساری حیانہ حکمہ تِی چھ جان - (۲۱)

ही माता सिर्यिय चंन्दरम तारख,
आकाशस प्यठ यिम प्रकाश दिवान।
शीशनाग युस कुल पृथ्वी दारान,
मेघ यिम रुद ज़गतस [illegible] ॥

वायू फेरान अंमृन कु ज़ोतान,
त्तिम सारी चानि हुकमु सृत्य चलान ॥
(२१)

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं,
वाक् तर्कयो स्त्वमऽसि भूमिरनाम रूपा,
यद्वाविकासमुपयाति यदा तदानीं,
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरी भवन्ति ॥२२॥

شنکوچ یژھایلہ چھے ژےسپدان
تیلہ ژے ماج من تہ لوُد نیروِکار بنان
ییلہ وِکاس یوان چھکھ ژٕ ہی گرجے
تیلہ چانٛی نام رۄُپ نیٚ چھ نیران (۲۲)

संकूच यछा यैलि छुय चे सपदान,
तैलि चे मांज मन तु वोद नेर विकार बनान।
यैलि विकासस यिवान छुख चु ही गिरिजी,
तैलि चान्य नाम रूप नेन्य छि नेरान ॥
(22)

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य,
भ्रूकिङ्करी कृत सरोज गृहाः सहस्राः।

चिन्तामणि प्रचय कल्पित-केलि शैले,
कल्पद्रुमो पवन एव चिरं रमन्ते ॥२३॥

ہی دلوی سو کھ باپتھ باگیہ وان
ییلہ تہ ژے چھی تم پرنام کران
تیلہ چانہ سمبہ ہر کڑ تمن لچھمی سنہ
ساسہ بڑ ایشوری چھ روزانی
چنتامنی رتنک سموہ بناوی متس
کھیلہ ہندس پہاڑس پیٹھ تم کھیلانی
کلپہ ورکھہ ستو ستیو بری متین باغن
منز تم ییژ کال چھی پھیرانی (۲۳)

ही दीवी सोखुबापथ बाग्यवान,
यैलि चै छी तिम प्रणाम करान।
तैलि चानि हुम्बि हरकंच तिमन लंक्ष्मी
सासु बज़ ऐश्वर[illegible] ज़ांनी। तु
[illegible]तामणी रत्नुक समुह बनांव्यमुतिस
खेलि हुन्दिस पहाडस प्यठ तिस खेलांनी।
कल्प वृक्ष सोस्त्यव बंयमुत्यन बागन,
मंज़ तिम यंचकाल छी फेरांनी॥ २३॥

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशो,
संसार तापमऽखिलं दयया पशुनाम्।
वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्त्या,
घर्मं निजं शमयितुं निजयैव वृष्ट्या ॥२४॥

ہی ماج زٕلوس سمسار دۄکھ ساری
چھِہس ژٕےٚ ناش کران دیایہ کٕی
دۄکھن ہُند ناش ژٕےٚ ماتحت چھُ آسُن
دۄکھ نِورِتی چھی ژٕےٚ آدین
(۲۴) بیٚتھ پانٹھۍ سٕری بہ چھےٚ ٹیٚنی گرمی
شومراوان ییٚنہ ورشنہ کٔرِتھ

ही मोंज ज़ीवस संसार दोखु सारी ;
छ़िहस च़ुय नाश करान दयादि किन्य।
दोखन हुन्द नाश च़ेय मातहत छुआसुन,
दोख न्यवृति छी च़ेंय आदीन।
बिथु पांठ्य सिर्यियि छुय पनुनी गर्मी,
शीमरावान पनुनि वर्षन किन्य ॥२४॥

—o—

शक्तिः शरीरमऽधिदैवतमन्तरात्मा,
ज्ञानं क्रिया करणमासनस जालमिच्छा।

ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं,
किं तन्मयद्भवसि देवि ! शशाङ्कमौलेः ॥२५॥

شریر چھے آسوِن شکتی چھے آسوِن
ویاپک سورُوپ چھکھ آسوِنی چھے
جیو آتما دیان شکتی، کریا شکتی
یندریہ شکتی آسن شکتی چھے
یچھا شکتی ایشوری پریوار چھے
گریہہ دن ہنز جاے آسوِنی چھے
کیا چھکھ نہ آسوِنی لیس سورُوپ چھو پنُن
سے سورُوپ چھکھ پرلوکن چھے (۲۵)

शॆरीर छुय आसवुन्य शक्ती छुय आसवुन्य,
व्यापक स्वरूप छुख आसवुन्य छुय ।
ज़ीव आत्मा ध्यान, शक्ती, क्रिया शक्ती,
यॆन्द्रॆयि शक्ती आसनु शक्ती छुय ॥
यछ़ा शक्ती ऐश्वरी परिवार छुय,
ग्रॆह धन हुन्ज़ जाय आसवुन्य छुय ॥

क्या नु छुख चु आसवुन्य युस स्वरूप शिवु
सुय स्वरूप छुख परिपूर्ण चुय ॥२५॥ सुन्द.

—०—

भूमौ निवृति रुदिता पयसि प्रतिष्ठा,
विद्यानले मरुति शान्तिरतीतशान्ति ।
व्योम्नीति याः किलकलाः कलयन्ति विश्वं,
तासां विदूरतरमऽम्ब! पदं त्वदीयम् ॥ -(२६)

پرتھوی منزٕ نیورتی کلا روپ چھے
جلس منزٕ پرتشٹا کلا روپ چھے
اگنس منزٕ ودیا کلا آسہ وُنی
وایُس منزٕ شانتی کلا چھے
آکاشس پٔیٹھ کلایہ ژٕ گژھ داران
تمو نِشہ دور چھو ن سُہ روپ آسن
تمی کلی دور چھو آسن روپ (٢٥)
تمہ نِشہ ژٕ چھکھ دور روزان پانے -

पृथ्वी मन्ज़ न्यवृती कला रूप चुय,
जलस मन्ज़ प्रतिष्ठा कला रूप चुय ।
अंग्नस में विद्या कला चु आसुवन्य,

पवनस मज़ं शांन्ती कला ॒चुय।
आकाशस यिम॒ कलायि ज़गथ कारान,
तिमव निशि दूर चोन स्वरूप आसॖ वुन।
तिमव कलायव निशि दूर चोन स्वरूप छु
तमि निशि मांज दूर रोज़ान ॒चुय॥ २६॥

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं,
नाङ्गी करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये।
तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल प्रकारा-
स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति॥
(२७)

یوتتام پاد جٖیہی جانی ژرن ہردس
تُھکت کرہ نی وِلٹھ وادی۔
یی زگتہ رچھہ بنہ توت تانی یم شکہ بوچھ
مُرُ پاو تھ نہ سد ناش کنہ سیدی (۲۸)

यौत ताम नु पाद जूर्य चान्य रटन हृदयस,
यिम बहस करवुन्य बुलटु मांदी।
ही ज़गथ रछिवुनि तोत तान्य तिम
शाकु बंय छुय,

मूड़ बावु, तिहुन्द नाश कति सपदी॥२९॥

—o—

यद्द्देवयान पितृयान विहारमेके,
कृत्वा मनः करण मण्डलसार्वं भौमस।
याने निवेश्य तवकारां पञ्चकस्य,
पर्वाणि पार्वति नयन्ति निजासनत्वम्॥
(२८)

یِم لُوکی پوٗشِن پرانہ اَبیاس لوٗگ،
اَبیاس کرٕی کرٕی ییلہ پیراوٕن
اِنٛدرِیے کھیلہ تہٕ من آسکھ زلوٗنٛتھ
تِم سوٗاری کراں چھی پاٛنٛژن کاریٖن (۲۸)

यिम यूगी पोशन प्राण अभ्यास, खो,
अभ्यास कर्य कर्य येति प्रावन।
येन्द्रेय खिल त मन आस्यख ज़्यूनत,
तिम सवार्य करान छी पांचन कारुणन॥
(२८)

—o—

स्थूलसु मूर्तिषु मही प्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब! यस्याः।

पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं ,
सासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम॥ (२६)

پرتھوی توٗت پیٹھ مایا توٗتس تام
یم ستھوٗل موٗرتیہ ماج چھ آسان
کُنہ موٗرتی منٛز ہی ماج بۄآنی
چانی شکتی چھنہ باسان
برہمادکن تہ چھنہ تیتھ شکتی سامرتھ
گوٗن چانی گیوِتھ چھنہ تِم تہ کینہہ ہیکان
تِمے وِلوٗتی پشدی گوٗن کری گان
مانی دِم مے چھس نہ آشاوان (۲۹)

पृथ्वी तोत प्यठ माया तोतुय ताम ,
यिम स्थूल मूर्तियि मांज छि आसान ।
कुनि मूर्ती मन्ज़ ही मांज बवांनी ,
चान्य हिश विबूती छे न, बासान ॥
ब्रह्मादिकन ति छुन त्युथ ह्युव सामर्थ,
गौण चान्य गेंविथ छिंनु तिम ति केंह हेकान ॥

तिमुय विबूती हुन्ध गोण कंदें में गायल,
मांकी दितम में हुस वं आशावान ॥ २९॥

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडध्वशुद्धा,
वाल्लायनेषु भवतीमभृतौ च वृष्टिम् ।
श्यामां घनस्तनतटां सकली कृतौ च,
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति॥ ३०॥

کلپانتہ اَگنہٕ پاٹھۍ گہہ سوٚس ہی ماج
سَمسار ناشس پٮ۪ٹھ چھُ چمکان
سوٚزرے بیٚیہِ قایم کَرنس سۭتۍ
سۭکھ چھُ تیٚلہٕ امرتُک وَرشُن کران

(۳۰)

کُم تاج زنگیں گوٗر چھِ سیداں
پیٚم شاہ رِوٗپ سوٚندرِ حوٗن دیاں چھی دارا

कलपांतु अंग्न्, पांठ्य ग्रहे सोस ही मांज,
समसार् नाशस प्यठ छ़ु चमकान ।
सोरुय बेंयि कायिम करनस प्यठ,
सुख चु तेलि अमृतुक वर्षुन करान ॥

यिस शासुरूपु सौन्दर चोन ध्यान छि दारान,
तिम माजे ज़गतुक्य गौरव छि सपदान ॥
(30)

—०—

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब! केचि,
दानन्दमेव कतिचित्कति चिन्मायाम् ।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम,
साक्षादऽपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव ॥ ३१॥

کینژھ چھی ونان ووِدیا کینژھ چھ آنند
کینژھ چھی مایا روپ زانان
کینژھ زگتھ ماتا ساکشات ہدوس
دیا سوروپ گور روپ اسی زانان (۳۱)

कैंह छी वनान विद्या कैंह छि आनन्द,
कैंह छी माया रूप ज़ैं मानान ।
कैंह ज़गथ माता साक्षात हद् रेस,
दया स्वरूप गौर रूप अस्य ज़ानान ॥
((31))

—०—

कुवलयदलनीलं बर्बर-स्निग्ध केशं,
पृथुतरकुच भाराक्रान्त कान्तावलग्नम् ।

किमिह बहु मिहक्तैरन्यत्स्वरूपपरं नः,
सकल भुवन मातः सन्तत सन्निधात्तम्॥
(३२)

کولۍ ورگہٕ پاٹھۍ چھکھ ماج پرٚزلوٚنۍ
دۄرہٕتٕ ژٕ ریٚتھ ماج سوٗندرٕ کیٚش
سوٗندرٕ کمرٕ سٔنس شیٖنہٕ لوٗن ترٛاوِتھ
یٔہ ماج آسہٕ وُنۍ ژٕ زگژٕچ ایٖشٕ
زیادٕ وٗنۍ چھےٚ کیاہ نیرِ حاصل ماج
سنٛوکھ مےٚ روزتم نیتھ دِتم تِیتھ سندیش (۳۲)

कुवलय वर्ग पांठ्य छख मांज चमकुन्य,
होरमुत ते छुय मांज सोन्दर केश।
सोन्दर कमरु सोंस सीनु बोन त्रोविथ,
ही मांज आसवुन्य चु ज़गतुच ईश।
ज्यादु वन्यथुय क्याह नेरि हांसिल मांज,
सनमोख मे रोज़तम न्यथ दितम त्युथ सन्देश॥
(32)

सकलजननीस्तवः।

(पांचवां स्तव)

अजानन्तो यान्ति क्षयमवश्यमन्योन्यकलहै,
रमी माया ग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः।
जगन्मातर्जन्मज्वरभयतमःकौमुदि! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम्॥
(१)

نہٕ زانِتھ ونی مورکھ پانہٕ وانۍ لٕڑِتھ لٕڑِتھ
اَوَش پاٹھۍ ناشہٕ باوس چھِ واتان
یِم مَتہٕ وادی مایایہِ ہُنٛدۍ
گَنٛڑنے تَتھ یِم ڈٕلہٕ ڈٕلہٕ گڑھان
ہے زَگتہٕ ماتا اَسہٕ ژٕ نیکی جور
بیہ کہِ تیتھ کے ژٕ ژٕلہٕ ہہٕ ژٕ پاسان
آمتۍ شرن چھی شُنمکھ ہی مٲج
گلی گنڈِتھ اَسی ژٕ سٮ۪ کٕن ژٕ نام چھِ کران (۱)

न ज़ानुवुन्य मूर्ख पानु वान्य लड्थ लड्थ,
अवश्य पांठ्य नाशि बावस छि वातान।
यिम मतुवादी मायायि हुन्दि नुय,

गछुनुव फंसिथ यिम डुलडुल गछान।
ही जगथ माता अलि जन्मुक्य ज्वर,
क्याकि तमुकुय चन्दरमु चु बासान।
आमुत्य शरण छी सन्मोख ही मांज,
गुल्य गंन्डिथ अंस्य छै कुन प्रणाम छी
—०— करान ॥ 1 ॥

वचस्तर्का गम्य स्वरस परमानन्द विभव-
प्रबोधाकाराय द्युति तुलित नीलोत्पलरुचे।
शिवस्याराध्याय स्तनभर विनिम्राय सत्तं,
नमो यस्मै कस्मैचन भवतु सुर धाय सहंसे॥
(२)

واَنی کِو وترارکی حیکھہ نہ آج نہ پراوِنی
حیکھہ زِ چیتَن سرُوروپ پرم شِند
نیلہ اتپلہ لوشہ دِ قتی شونس سے
شونہ باپیمان بِہیم گمان نہ اَنند
شوس حیکھہ آرادَن زنگس پراوان
گیانہ کریا زِ رُوپہ مِہ کرِ تنہ بار کنی۔
نمسکار آسی نے تنحہ کنہ تانی تیرس
سارنے مہنس اندر آنان زِ ییمہ کنی۔ (۲)

वोंणी किन्य व्यचार छिन्य छख च़ु मांज़ न प्रासनी,
छख चु चेतन स्वरूप परमु आनन्द।
नीलि उत्पलु पोशि दिपती सोंस चुय,
शूबायिमान वैंयि ज्ञान तु आनन्द।
शिवस छख आराधिनी ज़गतस बड़ावान,
ज्ञानु क्रिया रूपु तनु बारि छिन्य ॥
नमस्कार आंसि नय तथ कथ तान्य तीज़स,
सानिनुय मुहस अन्दर अनान चु यैमि किय॥
(२)

त्रुटत गुञ्जाहार स्तनभर नमन्माध्यलतिका,
मुदञ्चद्धर्माम्भः करा गुणितनीलोत्पलरुचम्,
शिवं पार्थत्राणप्रवरामृगयाकार गुणितं,
शिवासन्नव्यान्तीं शबरमऽहमन्वीम शबरीम्॥
(३)

رَژِ فُلی یار ژٕے نالِ تتہٕ یار ژھمتہٕ
زاوُل کمر لٕسٕ ژٕے آج تہٕ یان
چُھٹہٕ مٕنہٕ گرد سیٹھی گمہٕ ہیُری ژٕے تُو لوکی
نیلہِ اتسلہ لوتہٕ رنگہٕ چمکان -

اَرٕزنس رٔچھنے تٔس شیٚوِس پتھ پتھ
دورِمت شِکارٕ رُوپ تُس تٔے آسوٚن
تتھ شِکارٕ بایہِ رٔچھس ہی ماج بوانی
گُلی گنڈِتھ تٔے کُن آمُت ژھیٚنے شرن ۔(۳)

रछ़ फोल्य हार चे नोल्य तनु बारि नेत्वथुव,
ज़ांल्युल कमर युस च़ै मांज शुबान।
फोटिमुति गुम सुल्य गुमु कैथे चै खूबसूरत्य,
नीलि उत्पल पोशि रगु चमकान।
अर्ज़नस रछिने तस शेवस पतु पतु,
दोरमुत शिकोर्य रूप युस चै आसुवुन।
तथ शिकोर्य बायि रछस ही मांज भवांनी,
गुल्य गंण्डिथ चैय कुन आमुत छुसय
शरणं॥ ३॥

—०—

मिथः केशाकेशि प्रधन निधनास्तर्क घटना,
बहु श्रद्धा भक्ति प्रसराय विषयाश्चाप्यविषयः।
प्रसीद प्रत्यक्षी भव गिरिसुते! देहि शरणं,
निरालम्बं चेतः परि लुठति पारिप्लवमिदम्॥
(४)

وُہَس کَرٕتُنۍ چھی مَس کَڑان اَکھ اَکِس
لَنٛڈی لَنٛڈی تِمَن پَتہٕ چھُ ناش سَپدان
سیٹھا پوشُش بَکتی کِنۍ تہٕ پریمہٕ کِنۍ
شرادایہ کِنۍ چانۍ پوزا کَران
ہی ماج پرکٹ بَن اَسہِ پیٹھ پرسَن بَن
سنتوشٹ بَن اَسہِ روز بَچاوان
اَسہِ چھِ ژَنۍژَل مَنہٕ سوٗس تھپہٕ روستُے
تھَپھ کَر اَسہِ ماج نَتہٕ چھِ ڈُلہٕ گژھان - (۴)

वंहस करतुन्य छी मस कड़ान अख अंकिस,
लंडय लंड्य तिमन पतु छु नाश सपदान।
स्यठा पोरुष बक्ती किन्य त प्रेयमु किन्य,
श्रदायि किन्य चांन्य पज़ा करान।
ही मांज प्रकट बन असि प्यठ प्रसन्न बन,
सन्तोष्ट बन असि रोज़ बचावान।
असि छि च़न्यच़ल मनु सौंस थपु रोस्तुय,
थफ कर असि मांज नतु छि डुलु गछान॥

—०—

(4)

शानां वा बह्वेवां खगपरिषदो वा यदशनं,
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति।
अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहिमसाह्लाय वपुषि,
प्रपद्येथाश्चेत्तः सकल जननीमेव शरणम्॥
(५)

ہی منہ یتھ شریرس پیٹھ نہ ایتبار
چھ خوراک یہ اَنگک یا پَنٛچھی کھیوان
کمہ وقتہ کتھ جایہ کِتھ پاٹھی کمہ طرفہ
پیَیہ یتھ شریرکہ کانٛہہ نہ زانان
میانہ منہ گژھ شرن زگتچہ ماجہ کُن
(۵)- شریرچ ممتا کوٗرتہ جلد تراوان

ही मन यथ शरीरस प्यठ न एतिबार,
छुय खोराक यि अंगुनुक या पंछी ख्यवान।
कमि वक्तु कथ जायि, किथु पाठ्य कमि तीक्,
पेयि यथर शरीर कर काँह न ज़ानान॥
स्यानि मनु गछ़ शरण ज़गतुचि माजि कुन,
शरीरुच ममता कोन छ़ जल्द त्रावान॥५॥

—:०:—

अनाद्यन्ता भेद प्रशायरसिकापि प्रणयिनी,

शिवस्यासीर्यस्त्वं परिणयविधौ देवि! गृहिणी,
सवित्री भूतानामऽपि यदुदभूः शैलतनया,
तदेतत्संसार प्रणयन महानाटक सुखम् ॥६॥

آد اَنت رٗوس بیٚیہ بیید رٗوس پرٛیہ سۆرُوپ
آسِتھ تہٕ چھکھ شیوٕ سنٛز پرٛیِمہ رُوپ
وِواہہ وێدی کِنۍ ہی دیوی چھکھ
تَس مہادیوٕ سنٛز گرٛہنی رُوپ
ہی ہِمالہٕ پُتری جیٖون کران زٕ پادٕ
سنٛسار لیلا چھِ چون جشنہٕ رُوپ (۶)

आदि अन्त रोस बैयि बेद रोस प्रेयि स्वरूप,
आसिथ ति छुख शेवु सन्ज़ प्रयमु स्वरूप।
व्यवाह वेदी किन्य ही दीवी छुख;
तस महादेवु सन्ज़ गृहणी रूप।
ही हिमाल पुत्री जीवन करान चु पादु,
सम्सार लीला छि चोन जशनु रूप ॥६॥

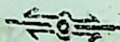

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति! सदन्ये विदुरस-
त्परे मातः! प्राहुस्तव सदसदन्ये सुकवयः।

परे नैतत्सर्वं समभिपद्यते देवि! सुधिय-
स्तुदेतत्त्वन्मायाविलसितमशेषं ननु शिवे॥
(७)

ہی دیوی کینہہ چھی وَنان ژےٚ تَتو رُوٗپ
کینہہ چھی وَنان سَتھ کینہہ اَستھ رُوٗپ
کینہہ چھی وَنان تھٔد کھوتہٕ تھوٚد سۄرُوٗپ ٲخ
کینہہ دانا وَنان سَتھ اَستھ رُوٗپ
کینہہ چھی وَنان اَنِرواچیہ ژٕ آسِتھ وُن
کینہہ وَنان یہ سوٗرُے چھُے چون کھوٚلنہٕ رُوٗپ

ही दीवी केंह छी वनान चे तत्व रूप,
केंह छी वनान सथ केंह असथ रूप।
केंह छी वनान थदि खोतु थोंद स्वरूप मांज,
केंह दाना वनान सथ असथ रूप।
केंह छी वनान अनिर्वाच्य चु आसुन,
केंह वनान यि सोरुय छु चोन कोलनु रूप॥
(7)

—o—

[illegible]कोटिज्योतिर्द्युति दलित षट्ग्रन्थिगहनं
[illegible]विष्टं स्वाकारं पुनरपि सुधावृष्टि वपुषा-

किसल्येष्वात्रिंशक्तिरण सकली भूत सनशिं,
भजे धाम श्यामम् कुच भरनतं बर्बरकच्चम् ॥
॥ ८ ॥

کرور دُزملہ سۄمان چانٛی دِفتی ✤ ✤
کٹھنین سُٕتھ گنڈن ژٹھ چھکھ اژان
سوادار ژکرس بیٹھ تور نیران
أمریتہ ورشن سۄروپہ کنٛی وسان
۳۸ کلا روٗپہ زگتھ ویکساوِتھ ✤ ✤
تنہ بارِ نمتھے کیش ژٕے چمکان
تتھ شامہ روٗپس ہی ماج بوانی
گرِ گرِ روزِہا پٔتھ سیوا کران -(۸)

करोर् वुज़मलि सम्मान चान्य दिपती,
कठिन्यन शंन गन्डन चंटिथ छख अचान।
स्वादार् चकरस बैयि तोर नेरान,
असरथतु वर्षिरा स्वरूप् किन्य वसान।
38 कला रूप ज़गथ वेंकसाविथ,
तनु बारि नंमिथुय केशा ज़ें चमकान।
तथ शाम रूपस ही मांज बवांनी,
गरि गरि रोज़हा बं सीवा करान ॥ 8 ॥

चतुष्पत्रान्तः षड् दलभग पुटान्त स्त्रिवलय,
स्फुरद्विद्युद्वह्नि द्युमणि नियुताभद्युतिसुते।
षडश्रं च भित्वादौ दशदलमऽथ द्वादशदलं,
कलाश्रं च द्वयश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते॥
((६))

چَتُشٕ دَلہٕ کَمَلہٕ مَنٛزٕ نیٖرِتھ شٔٹھ دَلس
ترِکوٗنس منٛز ساڑِ ترٕوار سَر پاکار ❁
وُزملہٕ چمک زَن ساسہٕ بُدی سِریہٕ زَن
شَکتی کُنٛڈلِنی تَتی زٕ چمکان ❁ ❁
شٔٹھ دَلہٕ تٕرُٹھ دٔشہٕ دَلہٕ پٮ۪ٹھٕ دوادشہٕ دَل
پٮ۪ٹھ شوٗڑشہٕ دَلہٕ پٮ۪ٹھ چھی شیٚران
دوٕ دَلہٕ منٛزٕ دڑا مِشرٕ لٔس کُنٛڈلِنی
ہے گِرِجی چھُس تَتھ سوٚروٗپس نمسکارٕ کران ((۹))

चतुशदल् कमल् मंज़ु नीरिथ षठ दलस,
त्रिकूनस मंज़ साडु त्रिवांर सर पाकार।
वुज़मल् चमक ज़न सासु बंद्य सिंर्ययिज़न,
शक्ती कुन्डलिनी तती ज़ु चमकान॥

षठदल रंटिथ दशिदल पत द्वादशदल,
पत षोडषि दल प्यठ छि नेरान ।
द्वदल मन्ज़ द्रामुचि तस कुन्डलिनी,
ही गिरजी कुस तथ स्वरूपस नमस्कार
करान ॥९

कुलं केचित्प्राहुर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः,
परे तत्संभेदं समभिदधते कौलमऽपरे ।
चतुर्णामप्येषामुपरि किमऽपि प्राहुरपरे,
महामाये। तत्त्वं तव कथमऽमी निश्चिनुमहे ॥
((१०))

کینہہ گیانی وَنان ژِتے ۳۶ تتو رُوپ
کینہہ گیانی وَنان ژِتے پرمہ شِو رُوپ
کینہہ وَنان چھی مآج شیو شکتی رُوپ
کینہہ وَنان امہ کھوتہ تھود چھُے چون رُوپ
کینہہ وَنان کھد کھوتہ تھود گُستانی سوٚرُوپ
ہی ماہا مایا کتھہ پاٹھی بہ اَسہ لٔشیے
گُستاخی اکھ چھُے چون مآج سوٚرُوپ
((۱۰))

कैंह ज्ञानी वनान च़े 36 तत्वरूप,
कैंह ज्ञानी वनान च़ें ब्रह्म शैव रूप।
कैंह वनान छी चें मांज शिव शक्ति रूप,
कैंह वनान अमि खोतु थोंद छु चोन स्वरूप।
कैंह वनान थोंद खोतु कुस्तान्य रूप,
ही महामाया कित्थु पांठ्य बनि असि निश्चय।
कुस सना अलौकिक छु चोन मांज स्वरूप॥

((10))

षडध्वारण्यानीं प्रलयरविकोटि प्रतिरुचा,
रुचा भस्मीकृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम।
वितन्वानः शैवं किमपि वपुरिन्दीवररुचिः,
कुचभ्याम् ानम्रः शिव पुरुषकारो विजयते॥

((११))

شُہ وَتہٕ سوٗس جَنگل پژلے کالس سیٛتھ
کرور دِنِتی سوٗس ژٕ پرزلان
سِنہٕ پَن بکھتَن سیٛم جانَنہٕ ژرٕ نِتھ
ییٛتھ کتھوان مستَک تھیکھ کَرِ رحیان
شُہ سپنہٕ کوٗ ستانی سوٗروٗپ ژٕ دِنِتی سوٗس

گتیان کرِتھ پانہٕ پانہٕ شُمتھٕ زٕ سے شُوبان
ستھ پوت پور رشنہٕ کارتچھکھ آج زٕ سون
شمتھ ستٕ کھنہٕ رولس چھس بہٕ پرنام کران (۱۱)

शिवति सोंस जंगल प्रलय कालस प्यठ,
करोर दिपती सोंस चु प्रज़लान।
पनुन्यन बंबत्यन यिम चान्यन चरणन,
प्यठ थवान मस्तक छुख तिमन रछान।
शिवु सुन्ज़ कौस्तान्य स्वरूप चे दीपती
ज्ञानु क्रिया तनुबरि नमिथ चे शूबान। सोंय,
शिवु सुन्ज़ पोरुषकार छुख मांज चु आसवन्य,
तंथ्य शक्ती रूपस छुस बु प्रणाम करान॥
—०— (11)

प्रियङ्गु श्यामाङ्गीमऽरुण तरवसः किसलयां
समुन्मीलन्मुक्ताफल बहुलनेपथ्य कुसुमाम्।
स्तनद्वन्द्वस्फार स्तवकनमितां कल्पलतिकां,
सकृद्ध्यायन्तस्त्वां दधति शिव चिन्तामणि-
पदम्॥२२॥

پھنگہٕ پوشہٕ پاٹھی شانہٕ سوندر شرپر سوٗن

سوٗرخ وستر ژھاپھ ژ دار آنی
پھوٗلی متہ موکھتہ پیٹھ پوشہ لباسہ سوٗس
تنہ بارِ نمی تھے ژشوانی
ہی دلوی چھکھ ژ کلپہ تھر آسہ وٕنی
لسُ اکہ لٹہ چون دیان دارآنی
سُے شیو روٗپی چنتامن رتن
چانہ دیایہ کنہ چھُ پراوآنی - (۱۲)

पिंगु पोशि पांठ्य श्याम, सोन्दर शरीर सोस,
सोरख वस्त्र छ्ख चु दारांनी ।
फोलमुति मोख्तु पेठ पोशि लिबासु सोस,
तन बारि नेमिथुय चे शबांनी ।
ही दीवी छ्ख चु कल्पु थॅर आसवुन्य,
सुस अकि लटि चोन ध्यान दारांनी।
सुय शीवु रूपी चिन्तामन रत्न,
चानि दयायि किन्य छु प्रावांनी ॥ 12 ॥

प्रकाशानन्दाभ्यामविदितचरीं मध्य पदवीं,

प्रवीशौ तद्द्वन्द्वं रवि शशि समाऽरुयं कवलयन्।
प्रविश्योर्ध्वं नादं लय दहन भस्मीकृत कुलः,
प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमङम्ब प्रविशति॥
(२३)

گیانہٕ کِنہٕ کریایہٕ کِنی پھیرِتھ سُشمنا
اَنْدَرٕ اُژِتھ دوشونی گراس کرٲن
اُردٕ نادس اُژِتھ ژیِتھ وِکیرشہٕ اَنگہٕ کِنہٕ
سارِنُے چکرن بسم چھِ کرٲن
تمہٕ پتہٕ چانہٕ اَنُگریہہ کِنی سادک
اَوِناشہٕ شِوپدس پیٹھ چھِ واتان - (۱۳)

ज्ञानु किन्य क्रियायि किन्य फीरिथ सुशमना,
अन्दर अ़चिथ दोशवुनी ग्रास करान।
उर्द्व नादस अ़चिथ च्यथ व्यमर्श अंगु किन्य,
सारिनुय चकरन भसम छि करान।
तमि पतु चानि अनुग्रेह किन्य सादक,
अविनाशि शिवु पदस प्यठ छि वातान॥13॥

षडाधारावर्तैरपरिमित मन्त्रोर्मिपटले-

श्चलन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद्दैवतझषैः।
क्रमस्त्रोतोभिस्त्वं वहसि बरनादाऽमृत नदीं,
भवानि! प्रत्यग्रा शिवचिद्ऽमृताब्धि प्रणयिनी॥
॥१४॥

٦ چکر آولنہ نشہ منتر ملکونشہ
مُدرائی کفہ نشہ ییلہ ژھ نیران
کرم روپہ گاڈو نشہ کرمکہ دریاوِ نشہ
پرناد امرتھ روپہ ییلہ چھکھ وسان
ہی ماج واتان چھکھ نوس دریاوس
شو روپہ ژہتہ سودرس منزہ روزان
(۱۴)

6 चक्र आवुलनि निशि मन्त्र मुल्कव निशि,
मुद्राई कफि निशि येलि च़ु नेरान।
क्रमे रूप गाऽडव निशि क्रमकि दर्ययावु निशि,
परनाद अमृत रूप येलि छख वसान।
ही मांज वातान छख नविस दर्ययावस,
शिव रूप च़्यतु सोंदरस मंज़ च़ु रोज़ान॥
(14)

महीपाथो वह्निश्वसनवियदात्मेन्दु रविभि,

वपुभिर्ग्रस्तांशैरऽपि तव कियानऽम्ब!
मीहमा।
अमून्यालोक्यन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतरा-
मऽवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योम
वपुषि॥१५॥

پرتھوی، جل، اگن، وایو تہ آکاش
سٔریہ، ژندرمہ بێیہ زیو آتما
اَمشوٚ کنیٚ ناوٚ ویتِھنی چھی ژےٚ پانے
کوتاہ چھُ ماج بوٚأنی چون مہما
چانِس پرمہ آکاشکِس سوٗروٗپس
مَنٛز چھِنہٕ یِم تہٕ کُنہ وۆجودس لوان (۱۵)

पृथ्वी, ज़ल, अंग्न, वायु तु आकाश,
सिंयंयि, चंन्दरमु, बैंयि ज़ीव आत्मा,
अमशव किन्य बनांव्यमुत्य छी चे पानय।
कोताह छु मांज ववांन्य चोन महिमा,
चांनिस परमु आकाशकिस स्वरूपस,
मंज़ छिनु यिम ति कुनि वोजूदस यिवान॥

(15)

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोक त्रयमिदं
भवाम्भोधौ मग्नं त्रिगुण लहरी कोटिलुठितम्।
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम्॥
(९८)

مَنش، چار وآے تہٕ دیو ترٛیلوکی
سَمسار سۄدرس منٛز چھِ پھٔٹِتھ مٔتی
کرورٕ بٔزٕ سَتھ رج تمہٕ لہرن منٛز
ترٛیگُن مُلکن منٛز ڈُلہٕ چھِ گامٔتی
لۄدوَے یِمَن منٛز بَنہٕ کانٛہہ چون کانٛہہ کھیہ
ہے ماتا سہٕ زٕلو اَد چھُ وَاتان
پَرمانند کِس سۄرولیَن چھُ جلدے
تَمہٕ پَد دیایہٕ جانہٕ کٔرِ چھُ ترٛاوان (۱۵)

मनुष्य, चार वाव, तु देव त्रियलूकी
सम्सार सोंदरस मंज़ छि फ़टिथ मुत्य।
करोर् बज़ु सथ रज तमु लंहरन मन्ज़,
त्रिगोण मुल्कन मंज़ डुलु छि गामुत्य।

वोदवय यिमन मंज़ बनि कांसि चोन कटाक्ष,
ही माता सु ज़ीव अद् छु वातान।
परमानन्दुकिस स्वरूपस छु जलदुय,
परमु पद दयायि चानि किन्य छु प्रावान॥
(16)

कलां प्रज्ञामऽथां समयमनुभूति समरसां,
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथाम्।
प्रमाणं निर्वाणं परमश्रुतिभूतं परगुहां,
विधिं विद्यामाहुः सकलजननीमेव मुनयः॥
(१७)

ہی زگت ماتا مُنیشور چھ ژینہ وَنان
کرِیا، بود، آدِ انوبوٗ سمتا
گوٗرو پرم پرا ونیۓ وُپدیش شِو کتھا
پرمان، نِروان، پرتیکھش تہٕ آتمان
رہسیہ، گیان، سری یادا بیٚیہ وِدیا شکتی
زگت ماتا چانی سوٗروٗپ تہٕ نان (17)

ही जगत माता मुनीश्वर छि चेय वनान,
क्रया, बोद, आदि अनुबव समता।

गोरु परमपरा विनय वोपदीश शिव कथा,
प्रमान, न्यर्मान प्रत्यक्ष तु अनुमान ।
रहस्य, ज्ञान, मर्यादा, ब्यथि विद्याशक्ति,
जगत माता वांनी स्वरूप यिम वनान ॥ (१७)

प्रलीने शब्दौघे तदऽनुविरते बिन्दु विभवे,
ततस्तत्त्वे चाष्ट ध्वनिभिरऽनुपाधिन्युपरते।
श्रिते शाक्ते पर्वण्यनुकलित चिन्मात्र गहनां,
स्वसंवित्तिं योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम् ॥ (१८)

ستھ مۆہ رُکاوٹھ ییہ بنہ ویبو گالتھ
اُتھ لۄگیان زبتھ آکاشس منزلیں گۄتھ
تتھ وۄس سۄتھ آتمہ سۄرولس وۄہ یادٕ زبس
یاد روپہ پیر امرتس منز رُکاوٹھ
شکتہ ماتک آشریہ چھ تم رٹان
زیٹھن ماترک رہسیہ تم وسمرش کران
تلاوِک شیو سۄروپس تم پراوان
کشمیرس شیو سۄروپس تم سۄاد کران (۸

शब्द समूह रुकांविथ पतु ब्यन्द ब्यबू गांलिथ,
येंष्ठ ज्ञान च्यथ आकाशस मंज़ लीन कंरिथ।
तत्वस प्यठ आत्मु स्वरूपस थोपादि रस्यतिस,
नाद रूपु पर अस्यतस मंज़ रुकांविथ।
शक्ति मागुक आश्रय छि यिम रटान,
चेतन मातृक रहस्य तिम ब्यमर्श करान।
स्वाबांविक शिव स्वरूपस तिम भावान,
थंदिस शिव स्वरूपस तिम स्वाद करान॥

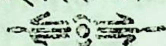

(18)

परानन्दाकारं निरऽवधि शिवैश्वर्य वपुषं-
निराकारं ज्ञान प्रकृतिमऽनवच्छिन्न करुणाम्।
सवित्रीं लोकानां निरतिशय धामास्पदपदां,
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम्॥
(२९)

خُد رُوّس بَرِہ آشنہ رُوٗپہ چون دیان
شیُو ایشوٗری رُوٗپہ لیس ماتان ٭
نِبر ویکار گُلیا یہ سوٗس خُد رُوّس دیا رُوٗپہ
زِلو پادِ کرُون لیس زِ مساتان ٭

تس برابرے چھُے موکھشہ یا سمسار
یُس کُنہِ رُوپہٕ چانۍ سیوا کران - (۱

हद् रोस परमानन्द रूप चोन ध्यान,
शीव ऐश्वरी रूपु यस मानान।
न्यरविकार ज्ञानु सोस हद् रोस दया रूपु,
ज़ीव पांद् करुवुन युस चु मानान।
तस बराबरुय छुय मोक्ष या समसार,
युस कुनि रूपु चांन्य सीवा करान॥ १९॥

जगत्कायेकृत्वा तमऽपि हृदये तच्च पुरुषे,
पुमांसं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्य गहने।
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदऽपि परमानन्द विभवे,
महा व्योमाकारे! त्वदऽनु भवशीलो विजयते॥
(२०)

زگت کایا یہ منز چھکھ ہردے ژ آسہ وِ
ہردیس منز چھکھ آتمہ دلو رُوپ
آتمہ تس منز بندو ژ ٹھیکہ
بندس منز چھکھ پرد ناد رُوپ

نادس منز گیان رۄپ چھونٛ آسوٗن
گیانس منز پرمانند ویٚنٛو رۄپ
ہی زگت ماتا جے کار تمنے
یم کرن چھونٛ اَنُوبوٚ مہا کاشہٕ رۄپ ۔ (۲۰)

ज़गत कायायि मन्ज़ छुख हृदय चु आसवुन
हृदयस मन्ज़ छुख आत्म दे रूप।
आत्म पोरषस मंज़ बिन्दु चु डीकिथ,
बिन्दस मन्ज़ ज्ञान रूप चोन आसवुन।
नादस मन्ज़ ज्ञान रूप चोन आसवुन,
ज्ञानस मन्ज़ परमानन्द वेंदु रूप।
ही ज़गत माता जयकार तिमनय,
यिम करन चोन अनुबव महा काशि रूप
((20)

विधे विद्येवेद्ये विविध समये वेद जननि,
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेद गुलिके।
शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदवदान्ये शिवनिधे
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमाम्॥
(२१)

ہی کریا شکھتی ، گیان شکھتی قسمہ قسمہ
سِدانت آچار رۆپہ ہی وید ماتا
ہی وِچتر رۆپی چھکھ ژٕ زگتچ آدی
وہنیہ کنی ژٕ پراوانی ویدچ ساٗر
شیو اگنیاپیہ ہنز ژےٚ سوبا و رۆپی
شیو پد دِوان ژےٚ ہی ماتا
سوکھکے خزانہ چھکھ اسونی ژٕ ہی ماج
بے حد بکھتی دِتہ ہے ہی ماتا ! ـ (۲۱)

ही क्रिया शक्ती, ज्ञानु शक्ती कुस्मु कस्मु,
सिद्धान्त आचार रूपु ही वीदु माता।
ही विचित्र रूपी छख च़ु ज़गतुच आद्य,
व्यनयि किन्य च़ु प्रावांनी वीदुच स्यार॥
शीवु आंगिन्यायि हुन्ज़ च़ुय सोबावु रूपी,
शीवु पद दिवान च़ुय ही माता।
सोखुकुय खज़ानु छख असुरुन्य च़ु हीमांज,
बे हद बंख्ती दित् हे ही माता॥
(21)

विधेर्मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
हरि शूल प्रोतं यदऽगमयदंसाऽऽभरणता
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब! गिरिशो
शिवस्थाया: शक्ते स्तदिदमऽखिलं ते -
विलसितम्॥२

برہما سُند کلہٕ الگ کٔرِتھ تتھ کلس
پننے اَتھک پاتر بناوِتھ
پننے پھیکہٕ کے بنووُن زیور
نارائن ترشولس پیٹھ وُرِتھ
سنتسے کھوتہ شئتنے زہر گنڈتھ شُون
ہوٗٹ لیس پننے شُوبہٕ رووٗن
شوٗبس پیٹھ ٹھپیمٕنز اَمیٚ شکتی ہُند
(۳۲) یہ سورُے چھوے ولاس چھہ آسووُن

ब्रह्मा सुन्द कलु अलग केरिथ तथ क्लस,
पनुने अथुक पात्र बनाविथ।
पनुने फैकिलुय बनोवुन ज़ेवर,
नारायण त्रशूलस प्यठ वुरिथ।

सरन्तु, स्रोतु सरन्तुय ज़ांहरुकि ... तंम्य शिवन,
हेंट युस पनुनुय श्रूबरोवुन ।
शिवस प्यठ ठेकिसुंचि अमि शक्ती हुन्द,
यि सोरुय चोनुय व्यलास हु आसवुन ॥

((22))

विरिञ्च्याख्या मातः! सृजसि हरिसंज्ञा त्वम-
अवसि
त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वरदशाम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनी,
त्वमेवैकाऽनेकाऽमऽवसि कृतभेदैर्गिरिसुते॥२३॥

برہما ناوکنی کران پاد ترِلوکی
نارایِنہ ناوکنی تھاکھ ژٔ تتھ رچھان
رودر ناوکنی تھاکھ ژے کران سمہار
ایشر دشا تھاکھ ژے داوان
سدا شیو ناوکنی زگتس دوان اسوکھ
پاشن ہندی سموہ ژے گا
ہی ہمالہ پتری ژے گنی آسیتھ
بیون بیون کامو کنی اکھ ژے سان - (۲۳)

ब्रह्मा नावुकिन्य करान छु पादु ग्रेयसूकी,
नारायण नावुकिन्य कुख छु तथ रछान।
रुदर नावु किन्य छुय कुख करान समुहार,
ईश्वर दशा छुख छुय दावान।
सदा शिव नावु किन्य जगतस दिवान सोख,
पाशन छुन्य समूह छुय गालान।
ही हिमालु पुत्री छुय कुनी ऑसिथ,
ब्योन ब्योन कामुयव किन्य अनीख छ
वासान॥ (२३)

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायै रपि मनाक्,
अशक्ये संस्पृष्टुं चकित चकितैरऽम्ब सततम्।
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरे,
कथं ते विन्दन्ति पदकिसलये पार्वति! पदम्॥
((२४))

ہی ماتا ہیم منیشور چھی مسہ کہو
گلی میتو دُو ستو ستوی آسہ وُنی
ہم تہ کھوری ماج چانین یادن
سیرش کر لمس سیٹھا چھی نہ ہکہ وُنی
وۄنہ پتھ نس باوِنے کھنی پاٹھی ہلی تھے
چانین زرنہ کملن تل جاے پراون-((۲۴))

ही माता यिम मुनीश्वर छिय मनु क्यो,
गंत्यमुत्यव दूषव सोंस्य आसवुन्य।
तिम ति खूच्य खूच्य मांज चान्यन पादन,
सपर्श करनस प्यठ छिय नु ह्यकुवुन्य।
बॉपनिशाद सोबाव, किन्य कठिन्य पोव्य
पंकिथुय तिम,
चान्यन च़रनु कमलन तल जाय प्रावुन्य॥
((२४))

तडिद्वल्लीं नित्यामऽमृत सरितं पार रहितां,
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमऽगुण ग्रन्थि-
गहनाम्।
गिरां दूरां विद्यामऽवनत कुचां विश्वजननी-
म पर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो-
भगवतीम्॥२५॥

وُزنُل رۆپ اَپار اَمرتٕچ رۆپ
نِرمَل تُ ژھُرہ تُرگُنَن نِش رۆپ
وَاَنی نٔتہ دوُر زٕژے ھۄر ویدیا سُندُ رۆپ
گیان کرِیا تہٕ نِمت زَگتُک ماے رۆپ

چھی وَنان سَتھ زَن ہی دلوی چانْی
یِم رُوپ تہٕ بیٚیہِ اَنتہ لَچھمی رُوپ ((۲۵))

वुज़मलि रूप अपार अमरुयतु नेदी रूप,
न्यर्मलु वंद्रमु त्रगोणात्मक रूप।
वाणी निशि दूर छुय थज़ि विद्या स्वरूप,
ज्ञान क्रिया तनव निर्मित ज़गत माता रूप
छी वनान सथ ज़न ही दीवी चान्य,
यिम रूप त बैयि अनन्त लछमी रूप॥
((25))

शरीरं क्षित्यम्भ्यः प्र ते रचितं केवलमिदं
सुखं दुखं चायंकलयति पुमांश्चेतन इति।
स्फुटं जानानो अपि प्रभवति न देही रहयितु
शरीराहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते॥
((26))

پرتھوی، زَل، اَگن، وایُو تہٕ آکاش
چھےٚ یمَن پانٛژَن لوٚتَن شریر بنان
سوکھ دوکھ اَمنیک زانان یوٗرِش چیتن
نوٗمود پانٛھو زلو اَمنیک اَلوٚبۄ کران

ہی ہِمالہ پُتری شریرُک اہنکار

چھُنہٕ زیو چانہٕ انُوگرٛیہہٕ رۄس تراوان۔((۲۶))

पृथ्वी, ज़ल, अंगुन, वायु तु आकाश,
छुय यिमन पाँचु बूतन शरीर बनान।
सोख दोख अम्युक ज़ानान पोरुष चेतन,
नोमूद पांठ्य ज़ीव अम्युक अनुबव करान।
ही हिमालु पुत्री शरीरुक अहंकार,
छुनु ज़ीव चानि अनुग्रेह रोस त्रावान॥
((२६))

पिता माता भ्राता सुहृदऽनुचरः सद्म गृहिणी,
वपुः पुत्रो मित्रं धनमऽपि यदा मां विजहति।
तदा मे भिन्दाना सपदि भय मोहान्ध तमसं,
महाज्योत्स्ने मात भव करुणया सन्निधिकरी॥
((२७))

مول مآج بآے بٕشِد کوٗرٕ گرٕ ہٕنی

شریر نیچُر مِتٕر گربٕتھ دٕنہٕ

یٕمہٕ وقتہٕ تراون تمہٕ وقتہٕ بے مہہ

اندکار رٕس خارجار زٕشُونی مَن

مہاپرکاشہ رۄپہ کنہٕ ستھ دیابہ کنہٕ ماج
نزدیک ٹھہرتھ سنمۄکھ مے بن - ((۲۷))

मोल मांज बांय बन्द नोकर त् ग्रेहणी,
शरीर पुत्र मेंत्र गर् बैयि दॅन् ।
यैमि वक्तु आवनम तमि वक्तु नय मुह,
अन्दकारस जलुद जलुद च्रटनुन्य बन।
महा प्रकाशि रूप् बॅनिथ दयायि किन्य मांज,
नज़दीक वुहरिथ सन्मोख मे बन ॥२७॥

सुता दक्षस्यादौ किल सकल मातस्त्वमुदभूः,
स दोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया।
अनाद्यन्ता शम्भोरऽपृथगऽपि शक्तिर्भगवती,
विवाहाज्जयासीत्यहहचरितं वेत्ति तव कः॥
(२८)

ہے زگت ماتا گوڈٕ ہیلہ آسکھ
دکھہ پرزاپتی زٔنے کوٗ مٲری
دوشہ کنہٕ زٕ صف نش تہ زٔنے تہ آوکھ
ہیتہ بنیکھ زٔنے ہمالہ پتری

آدی انتہ رستی تس شیوس لشہ چھکھ نہ
زانہہ تہ بشیوٗن ہی شکتی ھگوٗتی
ولوانہہ روٗس ور دوٗرکھن ژیتے سنکر
تم چاپٗنی چرتر کس زانی - (۲۸)

ही जगत माता गोड् येंलि आसुख,
दक्षि प्रज़ापत संज़ कुय कौमांरी।
दूषि किन्य कुनथन सुय येंय जांविथ,
पतु बनेयख चु हिमालय पुत्री॥
आद्य अन्तु रंसितिस तस शिवस निशकुनु,
ज़ांह ति ब्योन ही शक्ती भगवंती:
व्वराह रैंस वर दोरथन चेंय शंकर,
तिम चान्य चरित्र कुस ज़ानी ॥ २८॥

कणास्त्वद्दीप्रानां रवि शशि कृशानु प्रभृतयः
परम्ब्रह्म क्षुद्रं तव नियतमाऽनन्द कणिका।
शिवादि क्षित्यन्तं त्रिवलयतनोः सर्वमुदरं,
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवती॥
(२९)

ہی دیوی سِرئیہ ژندرمہ بیّیہ اَگن
چانہِ دیپتی ہنٛز چھ اَکھ تیمبرا
پرم برہم چھُے چانہِ نیتّہِ آنند منٛز
آسوُن چھُے اَکھ لوکٹ ہِشہ لِشہ
شِوناتھ سُنٛدِ پیٹھ پرتھوی تتوٚس تانی
سارِنُے ژُ کُنڈلِنی رۄپ روزان
آخرس چھُ چون ماج بَرتھ چھکھ ژُے
ہردیس منٛز پرکھٹ چمکان - ۔ ((۲۹))

ही दीवी सिर्यैयि चन्द्रमु बैयि अंगन,
चानि दीप्ती हन्ज़ छि अख त्यम्बुरा।
परं ब्रह्म छुम चानि नैत्यआनन्द मंज़,
आसवुन छुय अख लोकुट हिश लिश।
शिवनाथ सुन्दि प्यठ पृथ्वी तत्वस तान्य,
सारिनुय छु कुण्डलिनी रूप रोज़ान।
आख़्र छु चोन मांज बरुत्मान छुख चुय,
हृदयस मन्ज़ प्रेखुट्य चमकान॥
-(29))

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं,
त्वयैवेच्छत्यम्ब ! त्वमसि निखिला यस्य तनवः।
गतः साम्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम भवती,
तथाप्येवं हित्वा विहरति शिवस्येति
किमिदम्॥ ३०॥

چانٛی کِنۍ زانان چانٛی کِنۍ یژھان سُے
چانٛی کِنۍ سُہ شیوٗ زَگت چھُے بناوان
ژ‌ے چھکھ تَس سۄرُوپ چانٛی کِنۍ چھُے سُے
سامی باوَس پیٹھ واتان
چانے یژھایہ تیٚلہ سُے چانِس
پرمہ آکاشَس منٛز لین سپدان ((۳۰))

चांन्य किन्य ज़ानान चांन्य किन्य यछ़ान सुय,
चांन्य किन्य सु शेव ज़गत छुय बनावान।
सुय छुख तस स्वरूप चांन्य किन्य छुय सुय,
सांमी बावस प्यठ वातान।
चाने यछ़ायि तैत्लि सुय चांनिस,
परमु आकाशस मंज़ लीन सपदान॥ (३०)

पुरः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं,
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलं गुह्यमऽ-
गुह्यम्।
दवीयो नदीयः सदसदिति विश्वम्भगवतीं,
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनक्षोभजननीम्॥
((३२))

برونٹھ پتہٕ اَندر نیٚبر لوٗک لوٚڈ موٚٹ سوٗکشم
شِو روٗپ شکتی روٗپ گُرُ روٗپ
دوٗر نزدیک ستھ اَستھ روٗپس ژٕ گٔژھ
تتھ سٔرشٹی ستھِتی سمہار کرُوٕنۍ
زگتھ آگنیا کار ژٕ زانِتھ پوان

((۳۱))

ब्रोंठ पत् अंन्दर् नेंबर् लूक बोंड मोंट सूक्षिम,
शिव रूप शक्ती रूप गुरु [illegible] रूप।
दूर नज़दीक सथ असथ रूपस [illegible] गत,
तथ सेंष्टीस्थिती समहार चु करवुन्य,
जगथ आग्न्यिआ कार चु ज़ानुनु पियान॥
((३१))

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्दीप्तिकणिकाः,
पयोधौ कुल्लोलप्रतिहितमहिम्नीव पृषतः।
उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजैस्तात्त्विककलै-
र्भजन्ते तत्त्वौघाः प्रशममऽनुकल्पं परवशाः॥
(३२)

سرِیہٕ سٕنٛز کرنہٕ زَن، اَگنِچہٕ تیمبٕر زَن
سمندرن مَلکن ہٕنٛز پانٕنۍ چھکہٕ زَن
تِتھے پاٹھۍ شِو بیٹھہٕ پرٕتھوی تتوٕس تانٛۍ
پرٕتھ کلپانتس وٕتھۍ وٕتھۍ لیہ سپدان - (۳۲)

सिर्ययि सुन्ज़् किरणु ज़न, अंगनुचि त्यम्बरि ज़न,
समन्दरन मलुकन हुन्ज़् पानय छ्रिकु ज़न।
तिथय पाठ्य शिवु प्यठु पृथ्वी तत्त्वस तान्य,
प्रथ कल्पान्तस वुथ्य वुथ्य लय सपदान॥
(३२)

विधुर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिरणुरात्मा दिनकरः,
स्वभावो जैनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमऽनिलः।
शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां,
विकल्पैरेभिस्त्वामऽभिदधति सन्तो भगवतीम्॥
(३३)

ژندرمہ، وَیشنو، برہما بیئے سِرِیہ
مایا، سوباو، مت، ژیو تہ آتما
آکاش، وایو، شِو، شکتی یِم ناو
بید کِنہ ویدس یِم واتان
سَتھ ژَن یِموَ ناوَو کِنہ بیٚون بیٚون
ہی ماج بوانی ژےٚیے چھی سُمران ــ (۳۳)

चंन्द्रमु, वैष्णो, ब्रह्मा, बैयि सिर्यियि,
माया, स्वबाव, मत, ज़ीव त्, आत्मा।
आकाश, वायु, शिव, शक्ती, यिम नाव,
बीद किन्य वीदस यिम वातान॥
सथ ज़न यिमव नावव किन्य ब्योन ब्योन,
ही मोज ब्वांनी चेंय छी सुमरान॥३३॥

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदययादैशिकदृशा,
षडध्वध्वान्तौघच्छिदुर गणनातीत करुणाम्।
परानन्दाकारां सपदिशिवयन्तीमपितनं,
स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवतीम्॥
॥३४॥

قودرتی دیایہ کِنہٕ گوڑ سٕنٛز نظرِ کِنہٕ
یِم شکتی ناگس منٛز پرویش کران
تِمنٕے شیتھ وتہٕ سوٚس سنٛسار اندٕکار
دیایہ کِنہٕ ہی ماج چھکھ ژٕ گالان
پرمانندٕکہ سوکھ دِوان ژٕ تِمنٕے
تِمے بأگیوان ماج چھی ژٕے پراوان (۳۴)

कोदरती दयायि किन्य गोरु सुंज़ नज़रि किन्य,
यिम शक्तिनागस मन्ज़ प्रवेश करान।
तिमनुय छैवति सोंस संसार अन्दकार,
दयायि किन्य ही मोज छख चु गालान।
परमानन्दकुय सोख दिवान चु तिमनय,
तिम्य भाग्यवान मोज छी चे प्रावान ॥३४॥

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी,
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादिर्गुणगणः;
अविद्या त्वम् विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं,
पृथक्तत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे॥
(३५)

ژےٚ چھکھ شِو تہٕ ژےٚ چھکھ شکتی
ژےٚ سمَے تہٕ تہٕ چھکھ زانہٕ وُنی ژےٚ
ژےٚ آتما چھکھ وۄپدیش چھکھ ژےٚ
ژےٚ اَنِمادِکھ اشٹہ سیدی ژےٚ
ژےٚ اوِدیا وِدیا ژگتُک پدارتھ
ژےٚ نِشہ کانٛہہ تتھ چھِنہٕ اَسی بۄزون زانان۔ (۳۵)

च़ुय छुख शिव तय च़ुय छुख शक्ती,
च़ुय समय त, तय छुख ज़ानुवुन्य च़ुय।
च़ुय आत्मा छुख वोपदीश छुख च़ुय,
च़ुय अनीमादिख अष्ट सैदी च़ुय॥
च़ुय अविद्या विद्या ज़गतुक पदारथ,
च़ैय निशि कांह तत्थ छिनु अंस्य ब्योन ज़ानान
(35)

असंख्यैः प्राचीनैर्जननी जननैः कर्मविलया-
द्धते जन्मन्यन्ते गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम्।
आवाप्याज्ञां शैवीं क्रमरजुरऽपि त्वां विदिवान्
नयेयं त्वत पूजास्तुति विरचनेनैव दिवसान॥
(३६)

ہی ماتا اَسنکھیہ پرانِن زَمَن ہیندی
کرم گلنہ کِنۍ وونی زَنم پرٲوِتھ
گوٗرُو شِو سۄروٗپ لٔبِتھ شکتی سۄروٗپ پرٲوِتھ
وار پاٹھی ماج چون سۄروٗپ زٲنِتھ
چانی توتا پوٗزا کرُون بہٕ روز ہے
تیتھ سۆتی ژھۄنہ بہٕ دین دین کٹاوِتھ (۳۶)

ही माता असंख्य प्रान्यन ज़नमन हन्य,
कर्म गलनु किन्य वोन्य ज़न्म प्रांविथ।
गौरु शिव स्वरूप लंबिथ शक्ती स्वरूप प्रांविथ,
वार पांस्थ मांज चोन स्वरूप ज़ांनिथ॥
चांनी तोता त पूज़ा करुन ब रोज़हय,
तेथ्य सूत्य छुन ब दान दान कटांविथ॥
(36)

यत् षट् पत्रं कमलं उदितं तस्य या कर्णिका-
-रुया,
योनिस्तस्याः प्रथितमुदरे यत्तदोङ्कारपीठम्।
तस्मिन्नऽन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृतां,
श्यामाकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि॥
॥ २७॥

سوادِشٹان ژکرس منز شٹھ دل
پمپوش یُس چھُے ساز آسُن
تتھ منز آسُن یُس چھُ بیژُک کوش
بیژ کوشس پیٹھ اونکارُچ جاے
اونکارِچ جاے پیٹھ واس کرُون
یوسُ کُنڈلنی چھیہ تتی ژُ روزان
تتی شامہ سوندر مورتی دارُون
زگت ماتایہ ژیے نیتھ بہ سمران ((۳۷))

स्वादिष्टान चकरस मंज़ षठ दल,
पम्पोश युस छुय साज आसुन।
तथ मन्ज़ आसुवुन युस छु बीज़ुक कोश,
बीज़ु कोशस प्यठ ओंकारुच जाय,
ओंकारुचि जायि प्यठ वास करुवुन्य;
योसु कुण्डलिनी छख तत्य चु रोज़ान।
तस्य शामु सौन्दर मूरती दारुवुन्य,
ज़गत मातायि चेय न्यथ बे सुमरान ॥

((37))

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के,
सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका ।
वहति कुचभराभ्यां या विनम्रापि विश्वं
सकलजननि सा त्वं पाहि मामित्यवश्यम् ॥
(३८)

پرتھوی ، زل ، اگن ، والو ، آکاش
سِرییہ ژندرمہ یژمن یمَن آٹھن
چھکھ کُنی شَکتی گیان کِریا رُوپ
تنہِ بارِ نَمی ہتھ زگتس ژٕ دارن
سوے چھکھ ساری زگژ ژٕ ماتا
اوَش پاٹھو رچھ ژٕ کر سون پالن -(۳۸)

पृथ्वी, ज़ल, अग्न, वायू, आकाश,
सिर्यिय च़न्दरमु यंज़मन यिमन ओठन।
छख कुनी शक्ती ज्ञान क्रिया रूप,
तनु बारि नमि ह्युय ज़गत च़ु दारुन्य,
सोय छख सारी ज़गतुच च़ु माता,
अवशा पाठय रछ़ु च़ु कर सोन पालन॥
(३८)

ॐ

ध्यान

काला भ्राभाम कटाक्षैररि कुलभयदां -
मौलिबद्धेन्दुरेखां,
शङ्ख चक्रम् कृपाणं त्रिशिखमऽपि -
करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा-
पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिद रिवृता
सेवितां सिद्धिकामैः॥

کالے ابر کی آبھا سمان روپ سوہنے کٹاکھش کی دشمن
ڈرانے والی سیس اُتے چندر ریکھا دھارن والی شنکھ چکر تلوار ترشول ہتھاں وچ دھارن والی
ترنیتر دھاری سنگھ کی پیٹھ سواری سے تربھون سبھ تیج نوں پورن والی
دھیان کرنا چاہیے جے نام والی درگا دیوی دیوتاں سدھی
پراپت کرن والے سیوا لئیں کران

میگدھا رشی بولے ـــ جب دیوی کے ہاتھوں شمبھا سر سینا سہت مارا گیا تو اندر اور سب دیوتا پرسن ہو کر ساشٹانگ ڈنڈوت کر کے اس پرکار بھگوتی کی استوتی کرنے لگے ـ

काल, ओंबरुख पांठ्य शाम, रूप सौंसुतुय
कटाह किन्य दुशमनन कुलन क्य दिवान,
ड्यकस प्यठ चन्दरम बोरसुत शांख चक्र
तलवार त्रिशूल अथन मंज़ योसुदारान।
त्रें नेथुर दारुन्य सहस लसिथ सोंयलुय
त्रिलवनस पनुनि तीज़ पूरजावान।
ध्यान करिव तस जय नाव, सोय दुर्गायि हुन्द
देव नमान सेंदी यछ़ुन सेवा तस करान॥
मेधा ऋषि बोले :— जब देवी के हाथों महिषासुर
सेना सहित मारा गया तो इन्द्र और सब
देवता प्रसन्न होकर साष्टांग डन्डवत करके
इस प्रकार भगवती देवी की स्तुती करने
लगे।

ऋषिरुवाच :—

ओं शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणति नम्रशिरो धरांसा।
वाग्भिः प्रहर्ष पुलकोद्गम चारुदेहाः॥
(२)

ہی دیوی ییلہِ مأرِی تھک ژِٹ تم دوشٹ
راکھس ستیا یوسہٕ بلوان
وانی کِنہ پرسن کرکھ ژٕ ٹیندرازن تہٕ
دیوو کلہٕ نأمرأوتھ کورکھ ژٕ پرنام
ہرشہٕ کنِہ تمن رُم رُم تھود ووتلیہ
سوندر شریر سوسی آسی تم پرزلان۔(۱)

ही दीवी येलि मार्यथक च़ै तिम दोष्ट-
राक्षस सैना योस बलवान।
वानी किन्य प्रसन्न करख च़ु, ईन्द्राजन तु
दीवव कलु नोमराविथ कोरख
चै प्रणाम।
हरषि किन्य तिमन रुम रुम थोद वोत्लेयि
सोन्दर शरीर सोस्य ओस्य तिम
प्रज़लान॥

देव्या यया ततमिदं जगदात्म शक्त्या,
निश्शेष देवगण शक्ति समूह मूर्त्या।
तामऽम्बिकामखिलदेव महर्षिपूज्यां,
भक्त्यानताःस्म विदधातु शुभानिसानः॥
(२)

ہی دیوی ژٔ یے زگت چھُے ویاپُت
سوٗ یے جانہٕ شکتھی ستی چھُے شوبان
سارِنے دیوَن ہنٛز شکتھی ہُند سمُوہ
چھُے ماج چےٚ سے سورُوپ آسِتھ وُلن
یُس کران چھ پوٗزا ساری دیوتاہ
بیٚیہ وٕ ہ تمہ لیٚسی مت (۲)
گٔگُنڈِ تھ چھُس کران پرنام تمے
سوے ماج کری تمہ کلیان ہیول (۲)

ही दीवी चेय ज़गत छुय व्यापथ्,
सोरुय चानि शक्ती सूत्य छुशबान।
सारिनुय दीवन हुन्ज़ शक्ती हुन्द समूह,
छुय मोज चोनुय स्वरूप आसवुन।
यस करान छि पूज़ा सारी दीवता
बेंयि वोतम रेंश तेमिस माजिकुन।
गुल्य गंण्डिथ छुस करान प्रणाम तेमिसुय,
सोय मोज कंर्यतनम कल्याण स्वोम।

(३)

यस्याः प्रभावमऽतुलं भगवानऽनन्तो,

ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमऽलंबलं च।
सा चण्डिकाऽखिल जगत्परिपालनाय,
नाशाय चाशुभभयस्यमतिंकरोतु॥३॥

یمّی سُنٛد پرٛباو چھُے حد رۄس آسُن
بھگوان تہٕ شیشناگ چھُنہٕ ونتھ ہیکان
برٛہما تہٕ شنکر چھِنہٕ تِم یِم پاٹھۍ
طاقتہٕ سۄنٛزی مہِما چون زانان
سوے چنٛڈی دیوی رٕچھِنتم سےٚ
یوسہٕ سارِسے زگتس چھےٚ پالان
دِیٚتم ترٛٹھ سٕشٹھ بوٗ سوے دیوی
ییٚمہ ستی اشوب لےٚ ناش سپدان

(٣)

येम्य सुन्द प्रबाव छुय हद रोस आसुन,
भगवान तु शीशनाग छुन वनिथ हेकान।
ब्रह्मा तु शंकर छिनु तिम यिम पाठ्य,
ताक्‍त, सोंस्य महिमा चोन ज़ानान।
सोय चंडी दीवी रेछ तनम सें,
योस, सारिसुय ज़गतस छे पालान।

दीतनम तिक़ शोब बोद सोय दीवी।
येमि सूत्य अशोब बय नाश सपदान ॥

(३)

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेषु लक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा-
तां त्वां नताऽस्म परिपालय देवि विश्वम्।
-(४)

بٲگیہ وان گرَن منٛز لوٚسہِ لَکھچھمی رۄپ
پٲپی گرَن منٛز لوٚسہِ اَلَکھچھمی *
سَتہٕ لۄکَن شردا کُلہٕ لۄکَن لَزا
شۄدِ لۄکَن بۄدھِ رۄپہٕ رۄزانی
پالنا کرتہٕ ساری سۄ گٔژھ ماج
زٕ چھٹ گٔژھتہ پرنام کرانی - (۵)

भाग्यवान गरन मन्ज़ योसु लक्ष्मी रूप
पापी गरन मन्ज़ योसु अलक्ष्मी।
सथ पोरशान श्रद्धा कोल, पोरशान लज़्जा
शोद पोरशान बोदि रूपु रोज़ानी।

पालना करत ... सारिसुय ज़गतस मांज।
ह़ेय कुलय गुल्य गंडिथ प्रणाम करांनी॥
(4)

किं वर्णयाम तव रूपमऽचिन्त्यमेतत्,
किंचाति वीर्यमऽसुर क्षयकारि भूरि।
किंचाहवेषु चरितानि तवाद्भूतानि,
सर्वेषु देव्यसुर देव गणादिकेषु॥५॥

کیاہ کرٕ ورنن چون سۄروٗپ ہی ماج
یُس روٗپ چون آسوُن نہٕ سوٗرانی
کیاہ کرٕ ورنن چون بل تہٕ سامرتھ
یُس راکھشن چھُ ناش کرانی
کتہٕ اتھٕ لوٗر منز دانی پلی حیرتھ
راکھشن تہٕ دیوتن اشترس کرٕ ھانی (۵)

क्याह कर वर्णन चोन स्वरूप ही मांज
युस रूप चोन आसवुन न सोरांनी।
क्याह कर वर्णन चोन बल तु सामर्थ,
युस राक्षसन कु नाश करांनी॥

कति अनु बौज़ मंज़ चांन्य बंङ्य चरित्र,
राक्षस तु दीव आश्चुरस गछांनी ॥5॥

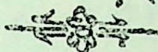

हेतु समस्त जगतां त्रिगुणापि दोषैः
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरऽपि पारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतम्,
व्याकृता हि परमाप्रकृतिस्त्वमाद्या ॥६॥

ساری زگتچ ہیتو چھکھ ژٕ ہی ماج
ترگناتمک زگت ٲسس چھ آسہ ولن
تاانیٚس شنوٚس چھنہٕ زانہٕ لوان
ماما چون سوٗروٗپ ٲسس اپار آسہ ولن
ھیانہٕ انشہٕ لٔٹس زگت چھ وو پلوٗت
چونے آسر ٲتس چھ آسہ ولن
آدی پرکرتی ژٕ چھکھ ہی ماتا نرِوِکار
کتھ کنہٕ تھوٚد چون سوٗروٗپ آسوٚن (۶)

सारी ज़गतुच हीतो दुख त्रु ही सोज़,
त्रिगुणात्मक ज़गत तुस छु आसुन ।

नारायनस शिवस छु ज़ानुन यिवान,
माता चोन स्वरूप युस अपार आसवुन।
चानि अंशि निशि युस ज़गत छु वोपदोमुत,
चोनुय आसर तथ छु आसवुन ॥
आद्य प्रकृती च छख ही माता न्यरविकार
थदि खोतु थोद चोन स्वरूप आसवुन॥ ६॥

यस्या समस्त सुरता सममुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवी
स्वाहासिवै पितृ गणासि तृप्तिहेतुर
उच्चार्यसे त्वं अतेव जनैः स्वधा च ॥७॥

یمۍ سٕندۍ سارۍ منتر پٔرِتھ ستؠ
یگیادِکن ترٛپتی چھ واتان
سۄاہا شبدٕکۍ ہی دیوی چھے
دیوَن ترٛپتی ہیٚتھ کارٕنۍ بنان
سو دیہ شبدٕکۍ ہی دیوی سایہ چھے
پیترن ہٕندِ ترٛپتی چھے ستیان

यैम्य सुन्द्य सारी मन्त्र परन्तु सूत्य,
यैंज्ञादिकन तृप्ती छि वातान ।
स्वाहा शब्द किन्य ही दीवी च्रुय,
दीवन तृप्ती हुन्द कारण बनान ।
स्वधा: शब्द किन्य ही दीवी सारिनुय,
प्यत्रु लूकन तृप्ती छय सपदान ॥७॥

या मुक्ति हेतुर अविचिन्त्य महाव्रतास्वं,
अभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रिय तत्व सारै,
मोक्षार्थिभिर्मुनि भिरस्त समस्त दोषै:
विद्यासि सा भगवती परमाहिदेवी ॥
((८))

ژٕے چھکھ موکھتی شبد کارن ماج
ژٕے بُڈ تتو سار سوٗس نٕہ سوزنی
شُبدرٕہیر رُٹِتھ آسن یِیلہ وٕرتہِ عتی
تمہِ جا پٕز دوہ پاستنا چھے سٔیدآنی
مُکھی یِیژھ و ژٕ منیشو یِم دُوشہٕ ژٔسی
حیاپه تُمن ژٕ وِدیا روٗپ کھگوتی -((۸))

चुय छुख मोक्ती हुन्द कारण मांज,
चुय बडि तत्व सारु सोंस नं स्वरनी।
यें द्वेयि रंटिथ आसन येंलि वृत सोंस्य,
तेंलि, वोपासना हें सपदांनी ।
मूल यङवुन्य मुनीश्वर यिम दूषि रंस्य,
छुख निसॅन चु विद्या रूपु भगवंती ॥8॥

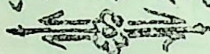

शब्दात्मिका सु विमल ऋख यजुषाम निधान-
मुद्गीथ रम्य पद पाठवतां च साम्नाम् ।
देवेत्रियी भगवती भवभावनाय,
वार्ता च सर्व जगतां परमार्तिहन्त्री ॥९॥

شَبدٕ رۆپہِ رٕگہٕ، یَجُرٕ، سامہٕ ویدٕک خزانہٕ
ژٕے پدٕ، ژٕے پاٹھٕ، ژٕے پژُلو رۆپ
سٔمسارٕ پالَنا پیٚٹھ بانٛچھہٕ ہی دیوی!
ژٕے آسہٕ ژٕ تیٚمہ تژٕ نوٗرے ویدٕ رۆپ
زَکُتَک آرتَرٕ گالنہٕ باپتھ، ہے ہے ہے ہے ہے
ژٕے چھکھ آسہٕ وٕنی وارتہٕ روٗپ ہے

शब्द रूप ऋग्, यजु, साम वीदुक खज़ानु,
चुय पद, चुय पाठ, चुय प्रनव रूप।
समसार पालुनायि बापथ ही दीवी,
चुय आसुवुन्य छुख अनवय वीद रूप।
ज़गतुक आरच़र गालुनु बापथ;
चुय छुख आसुवुन्य वारता रूप॥

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारि हृदयैक कृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशि मौलिकृत प्रतिष्ठा॥
॥२०॥

ہی دیوی ییٚو شاسترَن ہٕنٛد سار زوٗن
چھکھ تمیٚ لوٚدِ روٗپ ژٕ آسانۍ
دُرگا روٗپہٕ کِنۍ مُشکلس ترَنۍ
سَنسارَ ساگرس ژٕ ناو بنانۍ
لَکشمی روٗپہٕ کِنۍ نارایَنَس چھکھ
ہرٕدیَس منٛز ژٕ مے واس کرانۍ

گوری رۄپہ کِنؠ ژٕنٛدٕرمہ لیس کلس
تس شِوناتھس لِتہٕ ژٕ روزآنی ۔ (۱۰)

ही दीवी यिमव शास्त्रन हुन्द सार ज़ोन,
ब्रह्म तिमन बोद्धि रूप चू आसानी ।
दुरगा रूप किन्य मुशकिलस तरनी,
सम्सार सागरस चु नाव वनानी ।
लक्ष्मी रूप किन्य नारायणस ब्रुख,
हृदयस मन्ज़ चुय वास करानी ।
गौरी रूप किन्य चन्द्रम यस कलस,
तस शिवनाथस निश चु रोज़ानी ॥१०॥

ईषत्सहासममलं परिपूर्ण चन्द्र,
बिम्बानुकारिकनकोत्तम कान्ति कान्तम् ।
अतियद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि,
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥११॥

یمہ رۄنُن ژٕنٛدٕرمہ پُرٕ زٕنٛدٕر مُکھ ہیو
چُھن مۄکھ سو نکہ پاگٕ وٕنس چمکہ رَن

آسہ وُن سوندر ووتم موکھ چھون
شوُبایہ سوس آشتر کرٔ ووُن ✢✢
حیس ڈیٚلہ شہ موکھ وُچھتھ مہشاسورس
یُس اوس راکشس کرٔ ووُد کرٔ ووُن -(۱۱)

प[illegible] सुन्दर [illegible] मुहुव,
[illegible] मोख सोनुक्य [illegible] ास चमकवोन,
आसुवुन सोन्दर वोत्तम मोख चोन,
शूबायि सोस आश्चर करवोन।
हुस डेल्य सु मोख वुछिथ महिशासुरस्य,
युस ओस राक्षस कुट्ट करवोन ॥ 11 ॥

दृष्टापि देवि कुपितं भ्रकुटीकरालमु-
द्युच्छशाङ्क सदृशं च्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीवचित्रं,
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तक दर्शनेन ॥ १२ ॥

وُچھتھ چھے دیوی کرٔ ووُد ستی بری
[illegible] زلال

پرٛان ترٛاوی تمی وقتہ مہشاسورنے
کانٛہہ آشٕر ژھُنہٕ تۄتہٕ سپدان ؛
کُس روزِ زِندٕ ماج یتھ زگتس منٛز
ییلہِ وُچھِ سُہ مہاکال کرُودی بنان (۱۲)

वुछिथुय चु दीवी क्रूद सूत्य बरिथुय,
वोदयि सोस चन्द्रम, ज़न चु प्रज़लान
प्राण त्राव्य तमी वक्त महिषासुरनुय,
कांह आश्वर छुनु तोति सपदान;
कुस रोज़ि ज़िन्द मांज यथ ज़गतस मंज़
यॆलि वुछि सु महाकाल क्रूदी बनान ॥1

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ।
विज्ञातमेतदधुनैवयदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥२

ہے دیوی وونی اسہ سیٹھا پرٛسٕن ون ؛
ژھیکھ ژٕہ ماج آسہ وُنی سونے کلیان

ییٚلہٕ ژٕھل سٔیدان کرٕو دی ہی ماج !
تیٚلہٕ چھکھ یکدم کُلن ناش کران۔
مہشاسورٕن فوج ناشس واتنو وٚتھن
یُس فوج تس اوس سٹھا بلہٕ وان۔ ؏

ही दीवी वोन्य असि -ठ प्रसन्न वन,
छख चु मांज आसुवुन्य सोनुयकल्याण।
यौलि छख सपदान क्रूदी ही मांज,
तौलि छख यकदम कुलन नाशकरान।
महिषासोरुन फोज नाशस वातुनोवथन,
युस फोज तस ओस स्यठाबलवान॥ (13)

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदाराः,
तेषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥१४॥

شہرن منز ماج تمی سے چھہ امان ؏
دنہ سمپدا یہ سوٗس تم چھہ آسان ؏

تِمنٕے لَش بڈان دھرم تہٕ کرم گرٕہان
تِمنٕے دِنہٕ واد ساری دِوان
وینیہ سوٗس تِمنٕے نرٕ [illegible]، سنتان، نوکر
زگتس منز ماج تِم بھاگیہ وان
تِمنٕے ہمیشہ چھکھ وودیہ سوٗس روزان
یِمَن پیٹھ چھکھ ژٕ ماج پرسن سپدان (۱۴)

शहरन मंज़ मांज तिमसुंय छि मानान,
धनु सम्पदायि सोंस तिम छि आसान।
तिमनुय यश बडान धर्म नु कम गछान,
तिमनुय धन्यवाद सारी दिवान।
विनयि सोंस तिमनुय न्रुय, सन्तान, नोकर,
ज़गतस मंज़ मांज तिम भाग्यवान।
तिमनुय हमेशि छख वोद्धयि सोंस रोज़ान
यिमन प्यठ छख चु मांज प्रसन्न सपदान (14)
धर्म्यीरा हेति [illegible] सदैव कर्मान।
अ[illegible]या [illegible]तः प्रातर्दिनं सुकृती करोति।

स्वर्गं प्रयाति स्तुतो भवी प्रसादात्,
लोक त्रयोपि फलदाननु देवि तेन ॥१४॥

ہی دیوی یم پرتھ دوہہ چھی کران
دتھرمچہ کامہ بڈ آدر سان
سورگس کھسان تم حاینہ الوگرہہ ستی
زگتس منز چھی تم بھاگیہ وان
نشچے کرتھ ماج ترن بونن منز
ترے جیکھ بوآنی یس پھل دوان (۱۵)

ही दीवी यिम प्रथ दोह छी करान,
धर्मुचि कामि बडि आदर सान।
स्वर्गस खसान तिम मानि अनुग्रेह सूत्य,
ज़गतस मन्ज़ छी तिम भाग्यवान।
निश्चय केरिथ मांज त्रन बवनन मंज़,
त्रुय छुख बवांनी यस फल दिवान॥
(१५)

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमऽशेष जन्तो,
स्वस्थैः स्मृता मतिमऽतीवशुभांददासि।

दारिद्र दुःख भयहारिणिका: त्वदन्य:
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता ।२६॥

ہی دیوی چانہٕ سمرنہٕ زیوس
سارٕی بے چھیس ناش سپدان
وار پاٹھی یتھ سُہ کرِ چونے سمرن
تیتھ دکھ کلیانٕچ بوڈ تس دِوان
دارِدر باو بے بسیہ کٹھنی دوکھ تہٕ غم
کس سنا ژٕ یئے روس ماج دور تمن کران
وہ پکار چھکھ کران ہی ماج سارنے
ہرہمیشہ کومل زہنٕ سوس ژٕ روزان (16)

ही दीवी चानि सुमरनि ज़ीवस,
सारी भय छिस नाश सपदान।
वारु पांठ्य यैलि सु करि चोनुय सुमरन,
तैंलि द्वख कल्याणच बोद च़ तस दिवान।
दारिद्र बाव भय बेयि कठिन्य दोंख त ग़म,
कुस सना च़ै रोंस मांज दूर तिम्न करान॥

वोपुकार छुख करान ही मांज सारिनुय,
हर हमेशि कोमल दयथ सौस चु रोज़ान॥

(16)

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते,
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु,
मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवी॥ १७॥

ژیر تام نرکس منز روزنہ بأپتھ
یِم زیو سیٹھا پاپھ مأج چھی کران
تہندی مارنہ سیتی ہی مأج لوائی
سوٗرے ترِہوٗن سوکھ چھُ پراوان
یم چھکھ لڑایہ منز مارأن ژہی مأج
تم چھکھ سورگس ژہ واتناوان
ہی مأنتھ یوہے نشچے کرتھ چھکھ
ہی دیوی ستن ژہ گالان - (۱۷)

चेर ताम नरकस मन्ज़ रोज़नु बापथ,
यिम ज़ीव स्यठा पाफ मांज छी करान।

तिहन्दी मारनु सूत्य ही मांज बवांनी,
सोरुय त्रिलवन सोख छु प्रावान ।
यिम छुख लडायि मंज़ मारान त़ ही मांज,
तिम छिहख स्वर्गस चु वातनावान।
यी मांनिथ युहै निश्चय करिथ छुन,
ही दीवी शंत्रन चु गालान ॥

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म,
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहीणोषि शस्त्रम् ।
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र पूता,
इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेष्व साध्वी ॥ १८ ॥

چانہٕ دِرِشٹی سیتۍ کیاز سٕیدِیہٕ لبِیم
سارِنے رٲکشن تہٕ بیلیہٕ دُشمنن
مگر چھکھہٕ تراوان شسترٕ ہی ماجی
تیتھہٕ امہِ سٕتی شۄد سپدان
شۄد شۄنِتھ واتن یِم تہٕ سورگہٕ لوکس
یِہے ہتکار چھکھ تمن سیٹھہٕ کران
-(۱۸)-

चानि दृष्टि सूत्य क्याज़ि सपदिनु बसम,
सारिनुय राक्षसन तु क्याँयि दुश्मनन।
मगर छुख नु त्रावान शस्त्रही मांज,
सुथ यिम अमि सूत्य शोद सपदन।
शोद बनिथ वातन यिम ति स्वर्गलूकस,
योहय छ्यातुकार छुख तिमन प्यठ करान॥
((18))

खड्ग प्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दु खण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्॥
(१९)

کھڑگہ دِنۍ سمٔوہ، کٔرنٕہ چمکہِ ہٕنٛد سمٔوہ
تہٕ ترشوٗلٕ دِنۍ سمٔوہ لیٛتھ زٕنٛہ چمکان
تیٛزٕ ان چھے چوٗن موکھ تیٚتھے ہی ماج
راکھسن تہٕ پیٹھ نظر چھینہٕ دران
تہٕ ٹھہرِتھ چھٕنہٕ پیٛوان دِنۍ سوٗرن
ماج! تیٚتھۍ چھے چوٗن موکھ وُچھان-((19))

खडग दिफ्ती समूह, कठिनि चमकि हुन्द समूह।
त्रिशूल दिफ्ती समूह, युस छै चमकान॥
प्रज़लान छुय चोन मोख त्युथुय ही मांज,
राक्षसन तथ प्यठ नज़र छुन दरान।
चन्द्रमु सुन्ज़ी पूरदिफ्ती सौंस,
ही मांज त्युथुय छु चोन मोख वुछान॥
॥१९॥

दुर्वृत्त वृत शमनं तव देवि शीलं,
रूपं तथैतदविचिन्त्यम तुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृहृतदेव पराक्रमाणां,
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्॥२०॥

خراب چلن ہی ماج چھکھ بناوان شانت
آسہ وۄن لوہے چھےٚ چونے سوبھاو
رۄپ چون آسہ وۄن ہی ماج نہ سوچ
چانہ رۄنگ حد چھنہ کینہہ لبان ۲
دلوٚن ناش گومت لیس سامرتھ
چھکھ تمت پورشارتھ بڈاوان ۲ ۲

شتھرن پیٹھ چھکہ ہی ماج لوانی
دیا یہ سوس تمن دیا پرکٹ چھکہ کران

(۲۰)

खराब चलन ही मांज छुख बनावान शांत,
आसुबुन योहय छुय चोनुय स्वबाव।
रूप चोन आसबुन ही मांज न स्वरबुन,
चानि रूपुक हद छिनु कैंह लबान॥
दीवन नाशगोमुत युस सामरथ,
छुख तिमन पोरषारथ बडावान।
शत्रन प्यठ छुख ही मांज बबानी,
दयायि सोस तिमन दया प्रकट छुख
करान॥(२०)॥

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य,
रूप च शत्रु भयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समर निष्ठुरता च दृष्टा,
त्वय्येव देवि वरदे भुवन त्रियेऽपि॥
(२२)

کس کہ برابری ماج چانہ ویرتایہ
چون روپ شتھرن بے دوانی

کُنہ جایہ چون رۄُپ منوہر آسہ وُن یا ☆
دیایہ سۄس ہرٕدے کُنہ جایہ چھکھ تھوٲنی ☆
لڑایہ منٛز رۄُپ چون کٹھور مانٛج آسہ وُن
ترن لوکن چھکھ ور دِواٲنی ☆ ☆ ☆ (۲۱)

कुस करि बराबरी मांज चानि वीरतायि,
चोन रूप [illegible] रत नय दिवांनी।
कुनि जायि चोन रूप मनोहर आसुवुन,
दयायि सोंय हृदय कुनि जायि छुख थवांनी।
लड़ायि मन्ज़ रूप चोन कठोर मांज आसु
त्रन लूकन छुख वर दिवांनी॥ २१॥

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन ,
त्रातं त्वया समरमूर्द्धनि तेऽपिहत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपासतम,
ऽस्माकमुन्मद सुरारि भवं नमस्ते॥
॥२२॥

سارنے دشمن لڑایہ منٛز ناش کرِتھ
بچاوتھ ژٕے ہی مانٛج ترٕلوکی ☆

آری تھکھ راکھس لڑایہ منزی ماج
کھاری تھکھ زٔے سی ژگس ہی بوانی
ناش کور تھ دشمنن اسہ بے دورِ کورتھ
اسی زٔے ماتا گلی گنڈتھ پرنام کرانی - (۲۲)

सारि नुय दुशमनन लडायि मन्ज़ नाश कॅरिथ,
बचावथन चे ही मांज ग्रैलूकी ।
मारिथक राक्षस लडायि मंज़ ही मांज,
सारिथक चे स्वरगस ही बवानी ।
नाश कुरुथ दुशमनन असि बय दूर कॅरिथ।
अस्य चे माता गुल्य गन्डिथ प्रनाम करानी॥
॥22॥

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वने नः पहि, चापज्यानिःस्वनेन च॥
॥23॥

نئے ترشولہ ستی رچھتہ اسہ ہی ماج
کھڈگہ ستی رچھتہ اسہ ہی ماتا
گنٹایہ شبدہ ستی رچھتہ اسہ ہی ماج
کمانہ شبدہ ستی رچھتہ ہی ماتا - (۲۳)

पनुने त्रिशूलु सूत्य रछतु असि ही मांज,
खड्गु सूत्य रछतु असि ही माता ॥
गन्टायि शब्दु सूत्य रछतु असि ही मांज।
कमानि शब्दु सूत्य रछतु असि माता॥
((२३))

प्राच्यां रक्ष प्रतिच्यां च, चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म शूलस्य, उत्तरस्यां तथेश्वरी॥
((२४))

پُورٕ کِنۍ رٔچھتہٕ اَسہِ پچھِمہٕ کِنۍ رٔچھتہٕ اَسہِ
ہے چنٛڈی رٔچھ اَسہِ دٔکھنہٕ کِنۍ
پھیرناو ترِشوٗل مٔنٛز اَسہِ ژٕ بارٕ ہے ماج!
ہے ماتا رٔچھ اَسہِ وۄتہٕ رٕ کِنۍ (۲۴)

पूर्य किन्य रछतु असि पछमु किन्य -
रछतु असि।
ही चण्डी रछ असि दछण किन्य।
फिरनाव त्रिशूल पनुन अंस्य चोपार्य
ही मांज,
ही माता रछ असि वोतर, किन्य ॥२५॥

सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन घोराणि, तै रक्षास्मांतथाभुवम्॥
॥२५॥

سوندر روپ چانٛی ماتا یم ژےٚ آسہٕ وٕنۍ
ترٛیلوکی منٛز پھیرانۍ
گوٚر روپ، کٹھِن روپ یم چانٛی آسہٕ وٕنۍ
تِمو سٟتۍ اسہِ تہٕ پرٛتھوی رٔچھ ژٕ پانٛری (۲۵)

सोन्दर रूप चांन्य माता यिम चे आसवुन्य,
त्रैयलूकी मंज़ फेरांनी ।
गूर रूप, कठिन्य रूप यिम चांन्य आस-वुन्य,
तिमव सूत्य असि त पृथ्वी रछ चोपारी ॥25॥

खड्ग शूल गदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके,
करपल्लव संगीनि, तैरस्मान रक्ष सर्वतः॥
॥२६॥

کھڈگ، ترشوٗل یِتھادِک یم ژےٚ آسہٕ وٕنۍ
استر یم ژٕ ماج چھکھ وارانۍ
پھیوشہِ اتھن منٛز رٔٹھ چھکھ ژٕ ہی ماج
تِمو سٟتۍ اسہِ ماج رٔچھ ژٕ پانٛری

खड्ग त्रिशूल यैत्याचक यिम छे आसुवुन्य,
अस्तुर यिम छु मांज छुख दारानी ।
पम्पोशि अथन मन्ज़ रेटिथ छुखछुही मांज,
तिमव सूत्य असि माता रछ छेपारी ॥
((26))

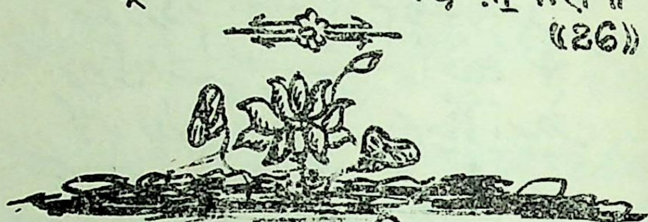

क्षमास्तुति

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदापि च न जानेस्तुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदापि च न जानेस्तुतिकथा।
न जाने मुद्रास्ते तदापि च न जाने विलपनं,
परं जाने माता तदऽनुसरणं क्लेश हरनम् ॥१॥

منتر تہ ینتر چھس نہ کینہہ زانان
زانان چھس نہ ماج چون مہما
آواہن تہ دیان چھس نہ کینہہ تہ زانان
زانان چھس نہ ماتا جیاتی توتا
مدرایہ جایہ ماج چھسنہ کینہہ زانان
زانان چھسنہ ماتا چون ولپن
بُتھ ہشن لیو کھتی ماج چھسنہ زانان

(۱) ژ ٹیۄ یتہ یتہ یکہ دوکھن ناش سپدان (۱)

मन्त्र तु यन्त्र छुस नु, कैंह ज़ानान,
ज़ानान छुस नु माता चोन महिमा।
आवाहन तु ध्यान छुसनु कैंह ति ज़ानान,
ज़ानान छुसनु माता चोन्य तोता।
मुद्राय चानि मांज छुसनु कैंह ति ज़ानान,
ज़ानान छुसनु माता चोन विलीपन,
बेड हिश योस्की मांज छुसनु ज़ानान,
यैंय पत पत पंकिथ दोखन नाश सपदान॥
((१))

विधेरज्ञानेन द्रव्यन विरहीनालस्तया
विधी अशक्यत्वात्तव चणयो या चुत्यभूत।
ततेतद् क्षिन्तव्यं जननि सकलोधारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत कुचिदऽपि कुमाता न भवत।
((२))

چھس وِیدی نہ زانہ وُن دِیہ رُوس تہ اَلتری
ژرنہ سیواحیاتی چھس نہ کینہہ کران +
بتہ چھ آلتری سوس چھس بہ کرتم کھیا +
ہی ماتا ساپنے چھکھ وودار کران ++

کوٚ پُتر چھِہ زَگتس مَنٛز پاد سَپدان
ماتا کوٗ ماتا زانٛہہ تہٕ چھِنہٕ بَنان۔ (۲)

छुस विदी न ज़ानवुन, दनु रोस तु आलछ़्य,
व़रन सीवा चान्य छुस नु कैंह करान।
यिछ़ आलछ़्य सोस छुस वेकरतम क्षमा।
ही माता! सारिन्य छस बोदार करान॥
को पुत्र छि ज़गतस मन्ज़ पाद सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छनु बनान॥
(२)

प्रथ्यिंव्या पुत्रास्ते, जननि बहवैसन्ती सरला:,
परम तेषां मध्य-विलितरलोहं तव स्वत:।
मध्य योयं त्याग: समुचितं इदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायीते, कुचिदपि कुमाता न भवते॥३॥

ماتا پرِتھوی سیٹھا زٔرٕ شٕتان
تِمَن مَنٛز ٹُیے لیوت چھُسے نابہ کار
چھیکھ مےٚ ترٲوان ماتا چھےٚ نہٕ زٔرٕ یہ جایِز
ہی پاروتی کوٚہ چھیکھ وِبزاران
کوٚ پُتر چھِہ زَگتس مَنٛز پاد سَپدان

ماتا کو ماتا زانْہہ تہٕ چھہٕ بنان -(۳)

माता पृथ्वी प्यठ स्यठा च़ें सन्तान,
तिमन मन्ज़ बंय योत छुसय नाबुकार।
छख मे त्रावान माता छुय नु च़े यि जायिज़,
ही पारवती कोनु छख व्यच़ारान।
कोपुत्र छि जगतस मंज़ पादु सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छनु बनान॥3॥

जगतमातर्माताः तव चरण सेवा न रचिता,
न [illegible]तं देवे द्रव्यनंपि भोयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं, मयि निरुपममयत प्रकरुशि,
कुपुत्रो जायीते कुच्चिदपि कुमाता न भवते॥
॥4॥

ہی زگت ماتا چانْی ژرنہٕ سیوا
نہٕ کٔرم بیٛہ کُن نہٕ وُنی کین کران
چانہٕ بابتھ خرچ کُنہٕ کوٚرم نہٕ اَزتانی
وُنی کینہہ تہٕ دِنہٕ ژٕ بیٛتھ چھیسنہٕ خرچان
توتہٕ چھکھ ژٕسہ ماتا، لیٚس چھہٕ میٚون جِدہٕ روٗس

موجبہٕ تہٕ لوسیہ چھیم شےٚ گرٕ رچھان
کوٚتُر چھیہٕ رُتس ہنز پاپہٕ وستپان
ماتا کوٗ ماتا زانہٕ نہٕ چھےٚ بنان - (٤)

ही ज़गत माता चांन्य ज़रण सीवा,
न कंरम पथकुन न मुन्यकथन करान।
चानि खापथ रव्व कुनि कोंरम नु अर्ज़तास,
वंन्यकथन सि दनु वं पथ कुसनु रव्वान।
तोंति छख चु सो माता, यस छु म्योन हदुरोस
मोहबथ तु योंस, छुम में गरि गरि रछान।
कोपुत्रर छि जगतस मंज़ पांद सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छन बनान॥
((4))

परित्यक्ता देवान विविदविद सेवाकुलतया,
मया पन्चाशीतेऽधिकमपनीतेतु वयसि।
इदानींचिदमातः तव यदि कृपानापि भक्ता
निरालंबो लंबोधर जननि कं यामि शर्णम्॥
(५)

سارٕنے دیوَن ہُنز سیواے ترٲؤ
سیٚٹھٕ کُت چھیس ماج سیٚٹھا ویاکُل

۸۵ؑ ؤری گزراؤی ژھ پُرِس

سپُدمُت چھُس بہٕ آج ستھا بیٚکل

وونی یوٚدوے سیٚہ بہٕ پیٚتہٕ چاوٕز کرپاہی آج

تھیو رۄس چھیٚتے بہٕ ماج کس گژھ شرن۔ (۵)

सारिनुय दीवन् हुन्ज़ सीवा मे ग्राव,
सपुदमुत छुस ब माज स्यठा व्याकुल।
85 वरी गुज़रांव्य मे कुम्बरि हुन्द्य,
सपुदमुत छुस ब माज स्यठा न्यरबल।
वोन्य योदवय मे बनि न चान्य कृपा ही
थपि-रोस छुसव बे मांज कस गछ़ शरन॥ मोज,
(5)

चिता भस्मालेपो घरलमशनं दिकपट दुरी,
जटा धारी कण्ठे भुजगपति हार पशुपते।
कपाले भोतेश्व- भजति जगतईषकपदवीं,
भवाने त्वत पाणे ग्रहण परिपाट्य फलम इदम्॥
(६)

چِتا بسما لیپس زہر چھُ خوراک

ننگ بدن گلہ مالہ ناگن زار وان -

واشک پھُہ لیس کیس تھُراچھ داران موت تس مأنی بنیتہ چھُ مأنان

سۓ شِو رِگتَس سامی باوتھ

ہی ماتا چانہ اَتھواسہ چھُ واتان ۔ «6»

चिता बस्मा मलिथ यस ज़हर छुय खोराक,
नंगय तु कलु मालु, नाल्य ज्ञावान।
वासुक हटि यस युसज्ञा छु दारान,
मोत यस सामी पनुन छु मानान।
सुय शिव ज़गतकिस सामी बावस,
ही माता चानि अथवास छु वातान ॥6॥

न मोक्षस्याकान्क्षा न च विभवः वाञ्छापि च न मे,
न विज्ञानानऽपीक्षा, शशिमुख सुखे चापि न पुनः।
अतस्ताम समयाचे, जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी, शिव शिव भवानीति जपतः

تمہنہ ماچ موکچ کانکھیا آسوزن = بیٹیہ چھمنہ وبہویاتہ آج کانہ پڑھا
ا ٹیچ اپیاچھیا چھمنہ ماچ میم آسوئی = سو کھہ پژھانہ چھمنہ ماتا کاکھان
بتی ٹہ ماتا تریسے منگان زندگی گزارہا = شیو شیو لو آنی زیب کرآنی

छमनु मोज मुक्तिच कांछा आसवुन्य,
बैयि छमनु व्यतवुच ति मोज कांह यछा।
ज्ञानुच अपीछा। छमनु मोज मे आसवुन्य,
सोख यछाति छुसनु माता कांछान।
छुस वँ माता चैय मँगान ज़िंदगी गुज़ारहा,
शिव शिव बवानी ज़फ करानी ॥७॥